SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Phone : +91 78212 99288
Mobile : +91 9300008230

RESEARCH PROJECT SUMMERY (3.11)

S.No.	PROJECT WORK	DATE	PROPOSED AMOUNT FOR RESEARCH
1.	धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत नवीन कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	2021-22	10,000
2.	दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता	2021-22	10,000

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः"

CHHATTISGARH SHAIKSHANIK, SAMAJIK EVAM SANSKRITIK SANGATHAN (CESCO), RAIPUR (C.G.)

CG State 172, ESTD. 2002

Date: 02/02/2022

To,

The Director

Sandipani Academy, Achhoti, Durg, Chhattisgarh

Subject- Sanction letter for the Research Project

Dear Sir,

Chhattisgarh Shaikshanik, Samajik evam Sanskritik Sangathan (CESCO), RAIPUR (C.G.) is a non- government organization registered under society registration act, Chhattisgarh, has been working in the field of education, social and cultural development. In this context, we conduct a study on the Effect of Modern Agricultural Techniques in Agricultural Production and Farmers at Dhamada, Durg.

As Sandipani Academy is the member of the organization, we authorize the institution for carrying out research work and submit project proposal which include, area of study, methodology and budget and duration of the project. We sanction Rs 10,000 /- to Sandipani Academy for the project. As your project proposal will be received, fifty percent of the amount will be allocated and remaining amount will be given after submission of project report.

President
Chhattisgarh Shaikshanik, Samajik evam Sanskritik Sangathan (CESCO), RAIPUR (C.G.)

Committee Members

02/02/22 Mamta Dhruw

03/02/22 Preeti Dewangan

HOD - Dr. Sandhya Pujari

Dr. Abha Dubey

Accepted.
04.02.22

Principal
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./शिक्षा/2022/क्रमांक...106.....

अछोटी (दुर्ग),दिनांक 18/02/22

प्रति,

अध्यक्ष महोदय,

छत्तीसगढ़ शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन,

(CESCO) रायपुर (छ.ग.)

विषयः– **रिसर्च परियोजना प्रस्ताव।**

महोदय,

उपरोक्त सदर्भित पत्र दिनांक 02/02/2022 को मेल द्वारा प्राप्त किया गया जिसके अंतर्गत परियोजना, प्रस्ताव एवं लागत सारांश छत्तीसगढ़, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सलग्न को प्रेषित किया जा रहा है।

अतः परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत है आगामी कार्यवाही हेतु।

धन्यवाद!

संलग्न–

1. परियोजना प्रस्ताव
2. लागत सारांश

डॉ. संध्या पुजारी
विभागाध्यक्ष

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY DIST. DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./शिक्षा/2022/क्रमांक......106........ अछोटी (दुर्ग),दिनांक 18/02/22

प्रति,

अध्यक्ष महोदय,

छत्तीसगढ़ शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन,

(CESCO) रायपुर (छ.ग.)

विषयः– **रिसर्च परियोजना कार्य लागत राशि प्रदान करने बाबत्।**

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि सांदीपनी एकेडमी, अछोटी, में रिसर्च कमेटी के अतंर्गत परियोजना पर लघुशोध "दुर्ग जिला के धमधा ब्लाक में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" पर किया जा रहा है।

अतः उक्त परियोजना लागत 10000/– का विवरण निम्नलिखित है।

क्र.	लागत राशि	व्यय विवरण	Expense
1	10000 /–	फोटो कॉपी	2000 /–
		टॉयपिंग	1000/–
		मांस्क वितरण	2000/–
		बाइंडिंग	3000/–
		स्वल्पाहार	500/–
		सेनीटाइजर	500/–
		स्टेशनरी	1000/–
		कुल राशि	**10000/–**

सधन्यवाद!

उक्त लागत विवरण आपको सादर प्रेषित है।

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg

SANDIPANI ACADEMY * ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

Research Committee

1. Meena Pandey
2. Mamta Dhruw
3. Vinod Sahu

H.O.D
Dr. Sandhya Pujari

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA), DURG(C.G.)

प्रस्ताव

1. **संस्था का नाम**– संदीपनी एकेडमी अछोटी(मुरमुंदा), दुर्ग(छत्तीसगढ़)

2. **परियोजना शीर्षक– ''दुर्ग जिला के धमधा ब्लॉक में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव''**

3. **परियोजना का परिचय**–

नवीन कृषि पद्धति ऐसी नवप्रवर्तन शैली और कृषि पद्धति है जिसमें स्वदेशी ज्ञान के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान आधुनिक उपकरण तथा प्रत्येक पहलू जैसे खेत की तैयारी, खेत का चुनाव, खरपतवार नियंत्रण, पौधों का संरक्षण, प्रबंधन फसल की कटाई आदि जैसे महत्वपूर्ण नवीन कृषि पद्धतियों के उपयोग को आधुनिक नवीन कृषि पद्धति कहते हैं। इस तरह से किसी भी संसाधनों का अनुकूलन होता है जिससे किसानों की दक्षता और उत्पादकता बढ़ती है एवं साथ ही विपरीत प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ता है। आधुनिक कृषि में कीट प्रकोप को कम करने और फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए कई कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है जिससे मानव स्वास्थ्य और जीवों की खाद्य श्रृंखला सीधे तौर पर प्रभावित होता है। इसके परिणाम अत्यंत गंभीर, हानिकारक एवं दुष्कर हो सकते हैं। जलजमाव, लवणता, भू–क्षरण, जल भूमि का प्रदूषित होना, सुपोषण की समस्या, मिट्टी की उत्पादन क्षमता का ह्रास होना आदि प्रभाव हमें देखने को मिलता है।

4. **परियोजना क्रियाविधि**–

इस परियोजना कार्य में सार्थक परिणाम की प्राप्ति हेतु चयनित गांवों के किसानों से व्यक्तिगत सर्वेक्षण, स्थल निरीक्षण, साक्षात्कार आदि प्रविधियों के माध्यम से तथ्यों एवं आकड़ों का संकलन कर विश्लेषण किया जाएगा जिससे निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति सफलतापूर्वक किया जा सके।

5. **अध्ययन का उद्देश्य**–

1. कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना
2. कृषकों के आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. नवीन कृषि पद्धति अपनाने से ग्रामीण विकास में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

इस लघु शोध परियोजना कार्य के लिए जिसका शीर्षक है **''दुर्ग जिला के धमधा ब्लाक में'' नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर पड़ने वाले प्रभाव''** का अध्ययन किया जाएगा जिसके तहत धमधा ब्लाक के पांच गांवों (मुरमुंदा, गोढ़ी, लिमतरा, अछोटी, कडका) के अंतर्गत 100 किसानों का व्यक्तिगत सर्वेक्षण किया जाएगा ।

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY • (MURMUNDA) ACHHOTI DIST.-DURG (C.G.)

महत्व–

"दुर्ग जिले के धमधा ब्लाक में" नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर पड़ने वाले प्रभाव" विषयक लघु शोध परियोजना ग्रामीण परिवेश में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के विश्लेषण के संदर्भ में विशेष महत्व का होगा। इस अध्ययन से ग्रामीणों की कृषिगत निर्भरता के साथ ही आवश्यकता के अनुरूप खेती के पारम्परिक ढांचे में निरंतर नई पध्दतियों एवं तकनीकी के समयानुकूल स्वीकारोक्ति और उनसे होने वाले लाभ के अवलोकन से नए परिणाम प्राप्त होंगे जो लघु एवं सीमांत श्रेणी के किसानों को कृषि की इस नई संकल्पना को अपनाने के लिए प्रेरक महत्व का होगा। साथ ही प्रकृति पर पड़ने वाले इसके नकारात्मक प्रभाव का अवलोकन समुदाय को प्राकृतिक संपदा की सुरक्षा संबंधी जिम्मेदारियों के निर्वहन एवं उसके संरक्षण के लिए प्रेरित करने वाला होगा। साथ ही तकनीकी आधरित नवीन कृषि पध्दति से किसानों को उत्पादकता तथा आर्थिक स्तर में होने वाले लाभ एवं इससे होने वाले ग्रामीण विकास का अध्ययन भी विशेष महत्व का होगा।

7. साहित्यों का पुर्नावलोकन–

1) **दास प्राग, (2015),** "ग्रामीण कृषकों की समस्याएं राहा ब्लॉक विकसित क्षेत्र के अंतर्गत बोरी गांव के अंतर्गत केस स्टडी" में यह शोध अध्ययन ग्रामीण किसान भारत जैसे किसी भी विकसित देश की आबादी के बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं कि उनके विभिन्न समुदाय और स्थानीय सरकारों में पर्याप्त ग्रामीण विकास हो सके। उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह हम कह सकते हैं कि गरीबी अशिक्षा मशीनीकरण खराब कृषि विपणन सुविधाओं मांग वाली फसलों के बारे में ज्ञान की कमी या आर्थिक रूप से कृषि क्षेत्र के व्यवसायीकरण की अनुपस्थिति ग्रामीण किसानों की मुख्य समस्याएं हैं।

2) **आलम अफरोज, अफल हसन (2014),** "भारतीय कृषि में परिदृश्य एक समीक्षा" इस शोध लेख में विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था के लिए खेती एक महत्वपूर्ण कारण बताया गया है। पिछले कुछ वर्षों से किसानों ने एक बार फिर खाद्य आवश्यकता को पूरा करने के लिए फसल उपज प्राप्त करने के लिए कई पारंपरिक कृषि प्रणालियों को अपनाया गया। यद्यपि न हीं किसी दुनिया में पारंपरिक तकनीकें पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि जैविक एवं अजैविक कारणों से खेती को नई चुनौतियां मिल रही है। नई तकनीकी और प्रणालियों को उनके महत्वपूर्ण नामों के कारण वर्तमान खेती में लोकप्रियता मिल रही है जो खेती पर सभी चुनौतियों का समाधान कर सकती हैं। इस समीक्षा में भारत मैं पारंपरिक कृषि प्रणाली के साथ–साथ नई खेती प्रणाली विशेष रुप से जैविक खेती प्रणाली और अनुवांशिक रूप से संशोधित का उद्देश्य जैविक खेती प्रणालियों के लाभ और पारंपरिक खेती पर अनुवांशिक संशोधित फसल प्रणाली पर प्रकाश डाला है।

8. परियोजना लागत सारांश–

1. फोटोकॉपी एडिटिंग (3000 रु.)
2. मास्क – 100 ×20 = 2000 रू.(10 रू. प्रति नग)
3. सैनिटाइजर = 500 रू.
4. कॉपी पेन = 1000 रू.
5. स्वल्पाहार कुल = 500 रू.
6. बाइंडिंग = 300 रू.

कुल योग = 10000 रू. मात्र

Principal
(Education)
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

ल्यांकन–

प्रस्तुत परियोजना 'दुर्ग जिला के घमधा ब्लाक में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों भाव" के अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि चयनित गावों में कृषि ही आजीविका का आधार है जहां कृषि रम्परागत पध्दतियों का प्रचलन आज पर्यंत यथावत बने रहने के कारण कृषकों को विशेष आर्थिक लाभ हो पा रहा था। आधुनिक तकनीकी के विकास का इस क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। कृषि आधुनिक पध्दति, कृषिगत आधुनिक उपकरण, उन्नत किस्म के बीज, सिंचाई की पध्दति, फसल सुरक्षा रासायनिक एवं जैविक उर्वरक तथा किटनाशकों का प्रयोग अब इन गांवों के किसानों व्दारा कुछ समय अपनाया जा रहा है जिससे उन्हें कृषि में आशानुरूप लाभ प्राप्त हो रहा है।

रियोजना प्रभारी–

(1) ममता ध्रुव (सहायक प्राध्यापिका)

() विनोद साहू (सहायक प्राध्यापक) Vinod Sahu

परियोजना सहयोगी–

Spujari

विभागाध्यक्ष

शोध समिति

डॉ. संध्या पुजारी
संदीपनी एकेडमी अछोटी
मुरमुंदा (दुर्ग)

) अंकिता करवा — Barwa

) विवेक कुमार गौतम — V.Dewy

) ममता ध्रुव — M

) श्रीमति मीना पाण्डेय M

SANDIPANI ACADEMY * ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

सूचना

Date- 14/03/2022

सांदीपनी एकेडमी के शिक्षा विभाग के समस्त विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है दिनांक 14/03/2022 Mini Ph.D. जिसका विषय नवीन कृषि पद्धति का कृषि पादन एवं कृषकों पर प्रभाव पर ग्राम–मुरमुंदा में सर्वेक्षण कार्य किया जाना है।

अतः समस्त विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है

विभागाध्यक्ष
(डॉ. संध्या पुजारी)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT-DURG (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

प्रति,

विभागाध्यक्ष

शिक्षा विभाग

सांदीपनी एकेडमी, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

विषय :– ग्राम–मुरमुदा में लघु शोध करने हेतु अनुमति बाबत्

महोदया जी,

सविनय निवेदन है कि शिक्षा विभाग सांदीपनी एकेडमी अछोटी, दुर्ग छ.ग. के विद्यार्थियों द्वारा ''कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' विषय पर "लघु शोध" (Mini Phd) दिनांक 14.03.2022 किया जाना है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप उक्त कार्य को सम्पन्न करने की अनुमति प्रदान करें।

सधन्यवाद!

Pujari 14/3/22

विभागाध्यक्ष

डॉ. संध्या पुजारी

सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI (MURMUNDA)
DISTT. DURG (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक.15/081/24 अछोटी (दुर्ग),दिनांक.15/03/22

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–कंडरका,

विषय :– ग्राम– कंडरका में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 15.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत कंडरका
वि.ख.धमधा जि.दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए. / 2022 / क्रमांक......123..........

अछोटी (दुर्ग), दिनांक 15/03/2022

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–अछोटी,

विषय :– ग्राम– अछोटी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD) दिनांक 15.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

8/6/2022
सरपंच
ग्राम पंचायत अछोटी
वि.ख.धमधा, जिला दुर्ग (छ.ग.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
DISTT.-DURG (C.G.)
ACHHOTI (MURMUNDA)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक...122..... अछोटी (दुर्ग),दिनांक...14/03/2022

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–गोढ़ी,

विषय :– ग्राम– गोढ़ी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा ''कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 14.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत गोढ़ी
वि.खं. धमधा, जिला दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY * DISTT.-DURG (C.G.) * ACHHOTI (MURMUNDA)

Principal
(Education)
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक 120 अछोटी (दुर्ग),दिनांक 14/03/2022

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–मुरमुंदा,

विषय :– ग्राम– मुरमुंदा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा ''कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD) दिनांक 14.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत मुरमुंदा
वि.ख. धमधा, जि.–दुर्ग (छ.ग.)

SANDIPANI ACADEMY • ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

14/3/22
विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक....125.....

अछोटी (दुर्ग),दिनांक 15/03/22

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–लिमतरा,

विषय :– ग्राम– लिमतरा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा ''कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 15.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

सरपंच
ग्राम पंचायत लिमतरा
वि.ख. धमधा दुर्ग (छ.ग.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

लघु शोध

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, मुरमुंदा (दुर्ग)के तत्वाधान में आज दिनांक 14/03/2021 धमधा ब्लॉक के ग्राम मुरमुंदा में लघु शोध विषय "दुर्ग जिला के धमधा विकासखंड में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" के अध्ययन कार्यांतर्गत हमारे संस्था के विद्यार्थियों द्वारा ग्रामवासी किसानों से व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से महत्वपूर्ण आंकड़े जुटाने का कार्य किया गया जिसमें लगभग 50 घरों मे पहुँच कर किसानों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर प्रश्नों के द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया. इस सूचना संग्रहण प्रक्रिया में विद्यार्थियों का कुशल मार्गदर्शन सुश्री ममता ध्रुव (सहायक प्रधायापिका) तथा श्रीमान विनोद साहू के द्वारा किया गया।

इस सफल कार्यक्रम हेतु संस्था के प्रशासनिक अधिकारी श्री विनीत चौबे, विभागाध्यक्ष-डॉ. संध्या पुजारी, मुख्य सलाहकार डॉ.-आभा दुबे का मार्गदर्शन एवं संस्था के समस्त स्टाफ का सराहनीय योगदान रहा।

S Pujari

विभागाध्यक्ष
(डॉ. संध्या पुजारी)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
DIST.-DURG (C.G.)
ACHHOTI (MURMUNDA)

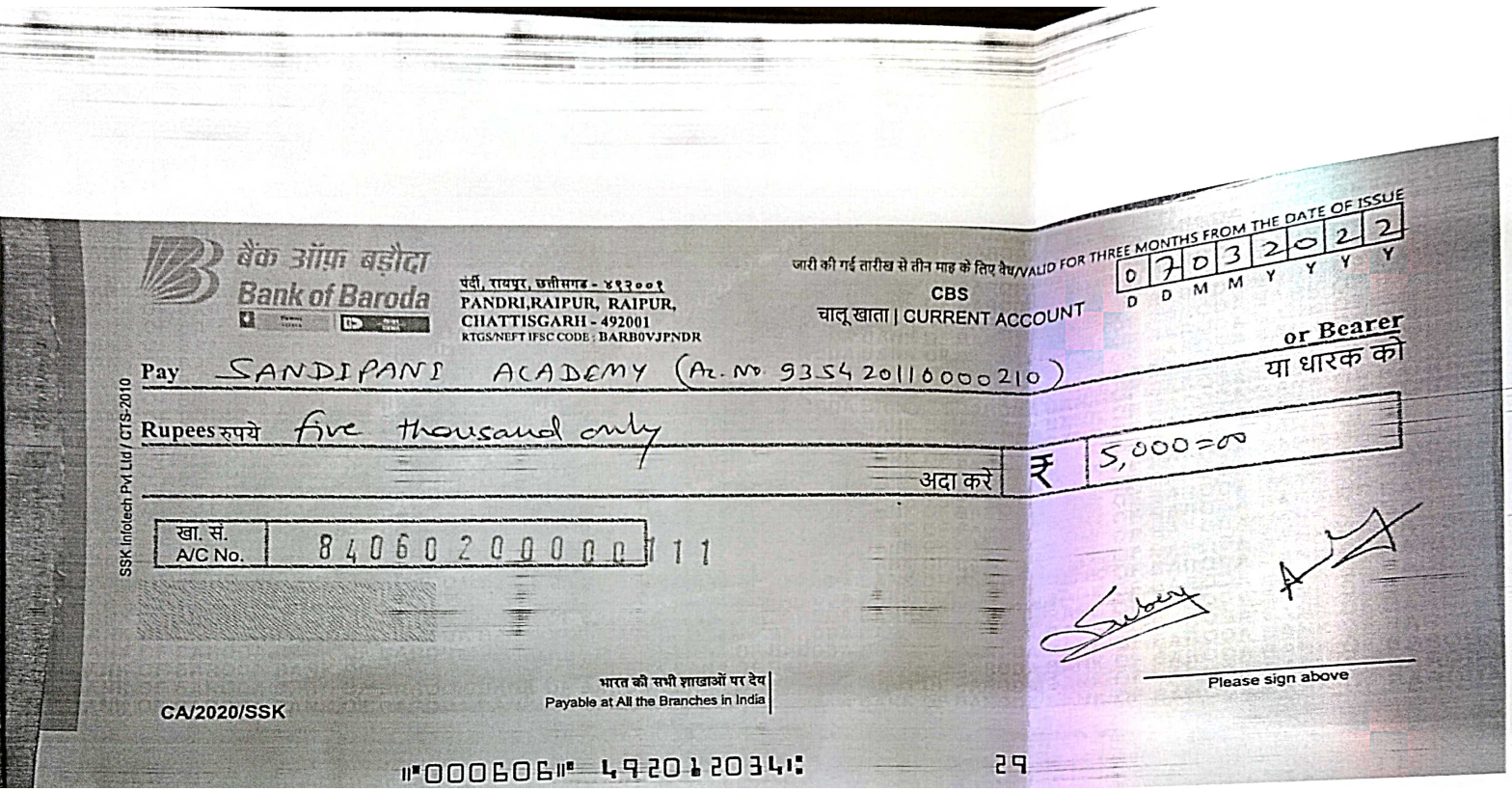

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

पंडरी, रायपुर, छत्तीसगढ़ - ४९२००१
PANDRI,RAIPUR, RAIPUR,
CHATTISGARH - 492001
RTGS/NEFT IFSC CODE : BARB0VJPNDR

जारी की गई तारीख से तीन माह के लिए वैध/VALID FOR THREE MONTHS FROM THE DATE OF ISSUE

07032022
D D M M Y Y Y Y

CBS
चालू खाता | CURRENT ACCOUNT

Pay SANDIPANI ACADEMY (A/c. No. 93542011000210) or Bearer
या धारक को

Rupees रुपये five thousand only

अदा करें ₹ 5,000=00

खा. सं.
A/C No. 84060200000111

SSK Infotech Pvt Ltd / CTS-2010

Please sign above

भारत की सभी शाखाओं पर देय
Payable at All the Branches in India

CA/2020/SSK

⑈000606⑈ 492012034⑆ 29

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

पंडरी, रायपुर, छत्तीसगढ़ - ४९२००१
PANDRI,RAIPUR, RAIPUR,
CHATTISGARH - 492001
RTGS/NEFT IFSC CODE : BARB0VJPNDR

जारी की गई तारीख से तीन माह के लिए वैध/VALID FOR THREE MONTHS FROM THE DATE OF ISSUE

CBS
चालू खाता | CURRENT ACCOUNT

29072022
D D M M Y Y Y Y

Pay SANDIPANI ACADEMY (AC. No. 93542011000210) or Bearer
या धारक को

Rupees रुपये five thousand only

अदा करें ₹ 5,000=00

खा. सं.
A/C No. 84060200000111

Please sign above

SSK Infotech Pvt Ltd / CTS-2010

भारत की सभी शाखाओं पर देय
Payable at All the Branches in India

CA/2020/SSK

⑈000607⑈ 492012034⑆ 29

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No.　　　　　　　　　　　　　　　　　DATE 04/07/22

Shri Sandipani

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	lymryi [illegible]		700
		Total	700/-

SANDIPANI ACADEMY • (MURMUNDA) ACHHOTI DISTT.-DURG (C.G.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

DATE..........

No.

Shri Sandipani Academy

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	Mark stationary		2000 + 1000
		Total	2000.00

NIKITA

...TD. FAX, PHOTO...

STATIONE...

+1000

3000

Principal

(Education)

Sandipani Academy

Burhani Graphics ESTIMATE

Binding I Printing I Copying

Contact No. 99074-00254
Near Geeta Printing Press
Budhapara, Raipur (C.G.)

Contact for Documents Scanning, Printing & Copying Sizes A4 to A0

Bill No. 03

Date : 25/7/2022

To, Sandipani

S. No.	PARTICULAR	RATE	QTY	AMOUNT
1)	Thesis Printing and Binding			2000/-
			TOTAL	2000/-

In Words

For, Burhani Graphics

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY • ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No

DATE 27/07/022

Shri Sandipani Academy

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	Thesis binding		10.0000
	service		500
		Total	1000.00

+500

1,500.00

NIKITA
STD, FAX, PHOTO
STATIONE

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt.- Durg (C.G.)

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No DATE 25/07/2022

Shri Sandipani Academy

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	photocopy		2000.
		Total	2000,

NIKITA
STD. FAX. PHOTO
STATIONE

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

लघु शोध

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, मुरमुंदा (दुर्ग)के तत्वाधान में आज दिनांक 14/03/2021 धमधा ब्लॉक के ग्राम मुरमुंदा में लघु शोध विषय "दुर्ग जिला के धमधा विकासखंड में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" के अध्ययन कार्यांतर्गत हमारे संस्था के विद्यार्थियों द्वारा ग्रामवासी किसानों से व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से महत्वपूर्ण आंकड़े जुटाने का कार्य किया गया जिसमें लगभग 50 घरों मे पहुँच कर किसानों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर प्रश्नों के द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया. इस सूचना संग्रहण प्रक्रिया में वियार्थियों का कुशल मार्गदर्शन सुश्री ममता ध्रुव (सहायक प्रधायापिका) तथा श्रीमान विनोद साहू के द्वारा किया गया।

इस सफल कार्यक्रम हेतु संस्था के प्रशासनिक अधिकारी श्री विनीत चौबे, विभागाध्यक्ष-डॉ. संध्या पुजारी, मुख्य सलाहकार डॉ.-आभा दुबे का मार्गदर्शन एवं संस्था के समस्त स्टाफ का सराहनीय योगदान रहा।

Principal
Education
Sandipani Academy
Achhoti, Distt.

SANDIPANI ACADEMY
DISTT.-DURG (C.G.)
ACHHOTI (MURMUNDA)

S. Pujari
विभागाध्यक्ष
(डॉ. संध्या पुजारी)

धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सत्र–2021–22

SANDIPANI ACADEMY

निर्देशक
श्री महेन्द्र चौबे

परियोजना निदेशक
डॉ. आभा दूबे
(Advisor)
(सहायक प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहायक प्राध्यापक)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रूव
(सहायक प्राध्यापक)

शोधकर्ता
विद्यार्थीगण
बीए. बीएड. (द्वितीय वर्ष)

शोध संस्थान
सांदीपनी एकेडमी, ग्राम–अछोटी, पोस्ट–मुरमुंदा
व्हाया–धमधा जिला–दुर्ग(छत्तीसगढ़)
फैक्स–07821–270220
मोबाइल नं.919300008230

SANDIPANI ACADEMY DISTT.-DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

आभार

सांदीपनी एकेडमी अछोटी मुरमुंदा दुर्ग के तत्वावधान में ''दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' विषय पर लघु–शोध प्रबंध लेखन कार्य में कुशल मार्गदर्शन हेतु संस्था प्रमुख श्री महेन्द्र चौबे का विशेष आभार। इस परियोजना कार्य के लिए बतौर निर्देशक अपना योगदान देने के लिए शिक्षा विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. संध्या पुजारी(सह संयोजक) का हार्दिक आभार तथा आभार परियोजना निर्देशक डॉ. आभा दूबे (मुख्य सलाहकार एवं सहायक प्राध्यापिका) का जिन्होंने इस परियोजना कार्य के क्रियान्वयन को सुचारू एवं सफल बनाने में शोध सलाहकार के रूप में अपना योगदान दिया। अग्रलिखित बीए बीएड द्वितीय वर्ष के उन समस्त विद्यार्थियों का विशेष आभार जिन्होने परियोजना कार्य को पूर्ण करने में न केवल अपना सहयोग दिया अपितु प्रभावी कार्य हेतु अपने ज्ञान एवं कौशल का भी सार्थक प्रयोग किया। साथ ही इस लघु शोध कार्य को पुर्ण करने में आरंभ से अंत तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना बहुमुल्य मार्गदर्शन, सहयोग, सुझाव, सलाह प्रदान करने वाले समस्त सूधीजनों का हार्दिक आभार ।

परियोजना निदेशक
डॉ. आभा दूबे
(सहायक प्राध्यापक)
(Advisor)

प्रस्तुतकर्ता
छत्तीसगढ़ शैक्षिक, सामाजिक
सांस्कतिक संगठन(CESCO)
रायपुर, (छत्तीसगढ)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रूव
(सहायक प्राध्यापिका)

2021 - 2022

परियोजना निदेशक
डॉ. आभा दूबे (सहायक प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रूव (सहायक प्राध्यापक)

शोधकर्ता
विद्यार्थीगण बीए. बीएड. (द्वितीय वर्ष)

शोध संस्थान
शिक्षा विभाग, सांदीपनी एकेडमी,
अछोटी, मुरमुंदा दुर्ग (छत्तीसगढ़)

नवीन कृषि पद्धति पर सांदीपनी एकेडमी अछोटी दुर्ग के विद्यार्थियों द्वारा लघु शोध

पायनियर संवाददाता ✓ धमधा/मूरमुंदा
www.dailypioneer.com

भावेश कुंजाम पत्रकार

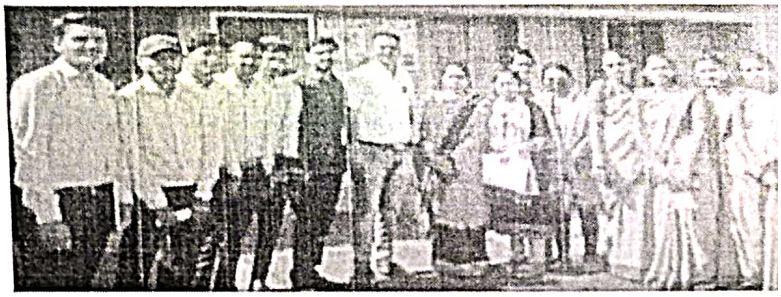

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया. पाँच अध्यायों में विभाजित इस अध्ययन में विषय की भूमिका, साहित्यों का अध्ययन, प्रदेश की भौगोलिक स्थिति तथा कृषि के इतिहास का विश्लेषण करते हुए जनगणना संबंधित आंकड़े तथा का प्रयोग व्यक्तिगत सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये : चयनित कुल कृषकों में 97% कृषकों के पास सिंचित भूमि तथा 03% कृषक के पास असिंचित भूमि उपलब्ध है। चयनित न्यादर्श क्षेत्र में सीमांत कृषक 84% अर्द्धमध्यम कृषक 10%, मध्यम कृषक 045% तथा कृषक 02% पाया गया। चयनित कुल 100 कृषकों में से 53% मिश्रित पध्दति से कृषि कार्य में संलग्न है जबकि आधुनिक पद्धति से 47% ही कृषि कार्य में कार्यरत है। कुल चयनित 100 कृषकों में से कृषक परम्परागत कृषि उपकरणों का उपयोग जिसमें से हल का उपयोग 48% कृषक उपयोग में लाते है तथा कोपर का उपयोग 41% कृषक परिवार इनका उपयोग करते है। जबकि बेलन का उपयोग 29% कृषक उपयोग में लाते है,

कलारी उवं उड़ानी पंखा का उपयोग
कृषकों द्वारा इस उपकरणों का उपयोग क
है। सर्वेक्षित कृषकों में बोआई विधि
83% कृषक परिवार रोपा विधि से
कार्य करते है तथा 17% कृषक लेई
से कृषि कार्य करते है। कुल सर्वे
कृषकों में 82% कृषक एक फसल ले
एवं 18% कृषक दो फसल लेते हैं तथ
के कृषकों द्वारा तीन फसल से कृषि
किया जाता है। चयनित न्यादर्श
परिवारों द्वारा 88त्न कृषक स
समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग
हैं जबकि 12% कृषक सहकारी स
के बीजों का प्रयोग नहीं करते है।
में चयनित कुल 100त्न कृषकों में स
कृषक सहकारी समितियों द्वारा रास
उर्वरकों का प्रयोग करते है तथा 19
परिवार द्वारा रासायनिक उर्वरकों क
नही करते है।

SANDIPANI
ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 491224
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

अछोटी (दुर्ग), दिनांक 11/10/2021

सा ए / शिक्षा / 2021 / क्रमांक 316(A)

प्रति,

Mr. Santosh Mishra (CEO)
Leelas foundation for Education & Health,
Raipur (C.G.)

विषय– रिसर्च परियोजना कार्य लागत राशि प्रदान करने बाबत्।

महोदय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि सादीपनी एकेडमी, अछोटी, में रिसर्च कमेटी के अंतर्गत परियोजना पर लघुशोध "दुर्ग जिला के धमधा ब्लाक में "शिक्षा के प्रति बढती उदासीनता" पर किया जा रहा है। अत आपसे अनुरोध है कि इस प्रोजेक्ट को करने हेतु हमें वित्तीय सहायता प्रदान करने की कृपा करें।

उक्त परियोजना लागत 10000/– का विवरण निम्नलिखित है।

क्र.	लागत राशि	व्यय विवरण	Expense
1	10000 /–	फोटो कॉपी	2000 /–
		टॉयपिंग	1000/–
		मांसक वितरण	2000/–
		वाइंडिंग	3000/–
		स्वल्पाहार	500/–
		सेनीटाइजर	500/–
		स्टेशनरी	1000/–
		कुल राशि	10000/–

सधन्यवाद!

संलग्न लागत विवरण एवं परियोजना प्रस्ताव प्रेषित है।

CEO
Mr. Santosh Mishra

Principal

H.O.D
Dr. Sandhya Pujari

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI (MURMUNDA), DURG (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

प्रस्ताव

1 परियोजना का शीर्षक, **"दुर्ग जिला के धमधा ब्लॉक में शिक्षा के प्रति उदासीनता का अध्ययन करना।**

2. आवेदन कर्ता संस्था या संस्थान का नामः सादीपनी एकेडमी अछोटी मुरदा दुर्ग छत्तीसगढ़

परिचयः– आज भारतीय शिक्षा में अनेक समस्याएं अर्थात संकट की स्थितियां उत्पन्न हो चुकी हैं जिनका निराकरण किए बिना हम शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। आज भारतीय शिक्षा में प्रमुख समस्याएं है शैक्षणिक अवसरों की समानता एवं अवरोध आर्थिक समस्याएं सामाजिक समस्याएं राजनीतिक समस्याएं, शैक्षिक प्रशासन की समस्याएं, पाठ्यक्रम की समस्या, शिक्षण विधियों की समस्या, शिक्षा में उद्देश्य हीनता की समस्या, शिक्षा में एकरूपता ना होने की समस्या, भाषण की समस्या, व्यवसायीकरण की समस्या शैक्षणिक व्यवसायिक निर्देशन एवं परामर्श की शिक्षा छात्र अनुशासन हीनता की समस्या कमजोर एवं वंचित वर्ग के बच्चों की समस्या, जनसंख्या वृद्धि की समस्या, संसाधनों की कमी की समस्या को देखते हुए इस विषय पर लघु शीघ्र कार्य किया गया है।

3. परियोजना क्रियाविधिः– प्रतिशत विधि (व्यक्तिगत सर्वेक्षण)

4 अध्ययन का उद्देश्यः–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता का अध्ययन करना।
2. न्यू एजूकेशन पालिसी के बारे में लोगों को अवगत कराना।
3. केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित शैक्षणिक योजनाओं के बारे में लोगों को अवगत कराना।

Principal

Sa...

Achhoti, Distt. D...

3. साहित्यों का पुर्नावलोकन–

1. चौबे प्रसाद सरयू, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, दशम संशोधित संस्करण 2009.

प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षा की समाजशास्त्रीय आधारों के मूल्य तत्वों विचारों तथा सिद्धांतों का विवेचना है। इसके प्रथम खंड में विविध बातों को समझाने के लिए पूरे संसार की पृष्ठभूमि को आधार के रूप में लिया गया है। तथा विभिन्न अवस्थाओं में मनुष्य की सार्वभौमिक प्रवृत्ति संदर्भ बिंदु रही है। समाजशास्त्री आधारों के शैक्षणिक महत्व की व्याख्या भारतीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में की गई है। इस व्याख्या में अपने देश की जन्म निरक्षरता सामाजिक आर्थिक स्थिति राजनैतिक व्यवस्था राष्ट्रीय समृद्धि समाजवादी समाज तथा नियोजन की समस्याओं के शैक्षणिक पक्षों की विवेचना समाजशास्त्री दृष्टिकोण से की गई है। तथा स्वतंत्र भारत में शिक्षा के स्वरूप की ओर संकेत किया गया है प्रस्तुत रचना में लेखक का उद्देश्य विषय की संपूर्ण परिधि को पाठ के सामने रखना एवं लेखक ने देश–विदेश में चलित शैक्षणिक समाजशास्त्री संबंधी पाठ्यक्रमों का तथा देश और विदेशों में विषय पर उपलब्ध ग्रंथों का अध्ययन किया है। विगत 45 वर्षों के अपने अध्ययन के अध्यापन के क्रम में शिक्षा के समाचारों पर सामाजिक और सामुदायिक विकास में शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहे हैं। यही कारण है कि शिक्षा के समाजशास्त्रीय अध्ययन अब जोर पकड़ता जा रहा है। तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षा शास्त्र के स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का इसे आवश्यक बना दिया है। इस प्रकार से यह पुस्तक शोध कार्य के लिए युक्त है।

2. अस्थाना विपिन एवं निधि अग्रवाल पब्लिकेशन द्वितीय संस्करण 2015.

प्रस्तुत पुस्तक में शैक्षिक मूल्यांकन का प्रादुर्भाव हमारे मन से तब हुआ जब हमने अनुभव किया कि इस क्षेत्र की अधिकांश पुस्तकें में मापन को ही प्राथमिकता प्रदान की गई है। इस विषय पर उपलब्ध अधिकांश पुस्तक की शीर्षक मापन और मूल्यांकन जो स्वयं इस तथ्य को उजागर करते हैं कि इन पुस्तकों और उनके लेखकों की उन्मुक्त समापन की ओर ही है। पता लेखक ने मूल्यांकन को प्राथमिकता प्रदान करती है। शैक्षणिक मूल्यांकन विकृति को वर्तमान प्रदान करने की कोशिश की गई है। शिक्षा का उद्देश्य एवं उदाहरण प्रस्तुत किया गया है ।आंकड़ों के परीक्षण के लिए परीक्षण के लिए सांख्यिकी व्यक्तिगत मापन का उपयोग किया जाता है। क्रमबद्ध वर्ग कर्म विधि की विश्वसनीयता विधि का प्रयोग साक्षरता एवं अन्य विधि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण विधि शारीरिक परीक्षण विधि प्रक्षेपण विधि का अर्थ एवं परिभाषा एवं महत्व का विस्तार से लिया गया है। इस प्रकार से यह शोधार्थी के लिए उपयुक्त है।

3. बक्शी एन.एस. शिक्षा दर्शन प्रेरणा प्रकाशन 2009.

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बताया कि शिक्षक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक उसके साथ चलती हैं। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के द्वारा भली–भांति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं किया जा सकता इसीलिए निश्चित आयोग के पश्चात बालक को शिक्षा प्राप्त करने हेतु विद्यालय में भेजा जाता है जहां पर उनके द्वारा शिक्षा प्राप्त की जाती है विद्यालय में शिक्षक के द्वारा बताए

जाने वाली विभिन्न व्यवहारों को बालक के द्वारा भली–भांति अपने व्यक्तित्व में सम्मिलित किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसके द्वारा भली–भांति अपने व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। वर्तमान में राष्ट्रपति भी ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है। जिनके द्वारा शिक्षा प्राप्त की गई हो लेखक ने बताया कि यदि देश में सभी लोग शिक्षित होंगे तो निश्चय ही सदियों से चली आ रही पुरानी वीडियो का विरोध करने में उनके द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है। इन विरोधियों को समाप्त करते ही देश में शांति व्यवस्था को उत्पन्न किया जा सकता है। भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया गया जिसके अंतर्गत देश में सभी नागरिकों को समान रूप से अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर प्रदान किया गया है। जिससे उनके द्वारा भली–भांति अपने पूर्ण विकास किया जा सके इस प्रकार से शिक्षा विभिन्न व्यक्ति को पशु के समान माना जा सकता है। इसके द्वारा अपने सभी प्रकार के शब्दों की सूची भली–भांति नहीं की जा सकती इसलिए शिक्षा प्रदान करना बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके आधार पर ही व्यक्ति में सभी प्रकार के आवश्यक गुणों को विकसित किया जा सकता है। महात्मा गांधी जी के अनुसार बालक के मन आत्मा तत्व शरीर की सर्वोत्तम का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है। कौटिल्य के अनुसार राष्ट्र के प्रति व्यापार अब देश के प्रति प्रशिक्षण शिक्षा है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य में निहित देवी पूर्णता का विकास किया जाता है। ऐसी शिक्षा को महत्व प्रदान की जाए जिसके आधार पर हम अपना आचरण पूर्ण सदाचारी बना सकें जो हमारी मानसिक बल को बढ़ाएं तथा बौद्धिकता का विकास करने में सहायता प्रदान करते हुए मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाएं इस प्रकार से अब सुभारती के शोध कार्य के लिए उपयुक्त है

4. पांडे आर. एस. "भारतीय शिक्षा" चिंता एवं मुद्दे .

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात जनतांत्रिक शासन व्यवस्था लागू की गई जनतंत्र शिक्षा व्यवस्था के तहत यह प्रयास किया जा रहा है। कि सभी वर्ग के लोग समान रूप से शिक्षित हो तथा देश की समृद्धि एवं विकास में सहयोग दे सकें ।शासन प्रयासरत हैं। कि जन –जन तक शिक्षा पहुंचे और सभी व्यक्ति गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त करें इसके लिए शिक्षा का लोक व्यापी करण किया जा रहा है जिससे शिक्षा सभी वर्गों तक पहुंच सके।

5. यागी जी एस डी. एवं पाठक पी डी 1985, "भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं ",आगरा विनोद पुस्तक मंदिर.

हमारे देश में शिक्षा देने की जो पद्धति अपनाई जाती हैं। वह प्रयोगात्मक ना होकर सट्टेबाजी वाली है। अधिकांश शिक्षक बच्चे में संस्कार और जीवन में पढ़ाई के महत्व को समझने से बचते हैं। क्योंकि उन्हें खुद नहीं पता कि एक बच्चे को उसी के मानसिक स्तर पर उसको जैसे समझाया जाए आजकल के बच्चों में बौद्धिक स्तर की गिरावट देखने को मिलती हैं। इसलिए शिक्षा के प्रति लोगों में उदासीनता बढ़ती जा रही है इस प्रकार से यह शोध कार्य के लिए उपयुक्त है।

4. आंकड़ो का संग्रहण – इस लघु शोध परियोजना कार्य के लिए जिसका शीर्षक है दुर्ग जिला के धमधा विकासखण्ड में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता का अध्ययन किया जाएगा जिसके तहत धमधा ब्लॉक के पांच गांवों के अंतर्गत 100 परिवारों का व्यक्तिगत सर्वेक्षण किया जाएगा

5. मुल्यांकन – इस परियोजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता दर में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जाएगा तथा ग्रामीणों को केंद्र और राज्य सरकार के अनेक शिक्षा योजना के बारे में जानकारी दी जाएगी।

6. परियोजना लागत सारांश–

1. फोटोकॉपी एडिटिंग (1000 रु.)
2. मास्क – 100 × 10 = 1000 रू.(10 रू. प्रति नग)
3. सैनिटाइजर = 50 × 10 500 रू.(10 रू. प्रति नग)
4. कॉपी पेन = 300 रू.
5. स्वल्पाहार कुल = 250 रू.
6. बाइंडिंग = 2000 रू.

कुल योग = 10000 रू. मात्र

परियोजना प्रस्तावक–

(1) ममता ध्रुव (सहायक प्राध्यापक)
(2) अंकिता बरवा (सहायक प्राध्यापक)
(3) विवेक गौतम (सहायक प्राध्यापक)

परियोजना सहयोगी–
बी.ए. बी.एड. द्वितीय वर्ष के समस्त विद्यार्थी (तीन समूह में विभाजित)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
संदीपनी एकेडमी अछोटी
मुरमुंदा (दुर्ग)

शोध समिति
1. अंकिता बरवा - Barwa
2. Mamta Dhruw

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

सूचना

Date- 16/12/2021

सांदीपनी एकेडमी के शिक्षा विभाग के बी.ए.बी.एड द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आज दिनांक 16/12/2021 को दोपहर 02:00 से शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (MiniPhd) के लिये ग्राम–गोढी जाना है।

अतः दिये गये उक्त समय में अनिवार्य रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज करावे।

विभागाध्यक्ष
(डॉ. संध्या पुजारी)
शिक्षा विभाग
सांदीपनी एकेडमी
अछोटी, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
DISTT.-DURG (C.G.)
ACHHOTI (MURMUNDA)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2021/क्रमांक...364.....

अछोटी (दुर्ग),दिनांक...15/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–गोढ़ी,

विषय :– ग्राम– गोढ़ी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा"शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता"विषय पर "लघु शोध" (Mini Phd)...16/12/2021.....किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत गोढ़ी
वि.खं. धमधा, जिला दुर्ग (छ.ग.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

प्रति,

विभागाध्यक्ष

शिक्षा विभाग

सांदीपनी एकेडमी, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

विषय :– ग्राम–गोढ़ी में लघु शोध करने हेतु अनुमति बाबत्

महोदया जी,

सविनय निवेदन है कि शिक्षा विभाग सांदीपनी एकेडमी अछोटी, दुर्ग छ.ग. के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini Phd).....16/12/21.....किया जाना है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप उक्त कार्य को सम्पन्न करने की अनुमति प्रदान करें।

सधन्यवाद!

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

SANDIPANI ACADEMY • ACHHOTI (MURMUNDA) • DISTT.-DURG (C.G.)

SANDIPANI
ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2021/क्रमांक 364(A) अछोटी (दुर्ग),दिनांक 17/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–मुरमुंदा,

विषय :– ग्राम– मुरमुंदा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 17.12.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

सरपंच
ग्राम पंचायत मुरमुंदा
वि.ख.धमधा,जि.-दुर्ग (छ.ग.)

SANDIPANI ACADEMY
DISTT.-DURG (C.G.)
ACHHOTI (MURMUNDA)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए. / 2021 / क्रमांक 366 (A) अछोटी (दुर्ग), दिनांक 22/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–सांकरा,

विषय :– ग्राम– सांकरा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD) दिनांक 22.12.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

जानकी साहू

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY ACHHOTI MURMUNDA DISTT-DURG (C.G.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2021/क्रमांक....370(A)..

अछोटी (दुर्ग),दिनांक....23/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–ढ़ाबा,

विषय :– ग्राम– ढ़ाबा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 2312.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत–ढाबा
वि.ख. धमधा जि. दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY • ACHHOTI (MURMUNDA) • DIST.-DURG (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए. / 2021 / क्रमांक......365(A)

अछोटी (दुर्ग), दिनांक 20/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–बोरसी,

विषय :– ग्राम– बोरसी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 20.12.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत–बोरसी
वि.खं. धमधा जि.दुर्ग (छ.ग.)
7-6-2022

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY
ACHHOTI(MURMUNDA),DURG(C.G.)

SANDIPANI ACADEMY

आज हमारे महाविद्यालय सांदीपनीअकादमी अछोटी, दुर्ग में दिनांक 08/12/21 को ग्राम गोढ़ी में लघु शोध (Mini PhD) का आयोजन विषय" शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता "पर व्यक्तिगत सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया हमारे महाविद्यालय के बीए बीएड द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के द्वारा इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया ।

कार्यक्रम का सफल संचालन सुश्री ममता ध्रुव , श्री विनोद साहू (सहायक-प्राध्यापक) द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के निर्देशक आदरणीय श्री महेंद्र चौबे , संचालक-श्री विनीत चौबे , प्राचार्या -डॉ. नाजिया अहमद, विभागाध्यक्ष-डॉ. संध्या पुजारी , मुख्य सलाहकार डॉ.-आभा दुबे एवं संस्था के समस्त स्टाफ का योगदान सराहनीय रहा।

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY
DISTT.-DURG (C.G.)
ACHHOTI (MURMUNDA)

विभागाध्यक्ष
(डॉ. संध्या पुजारी)
शिक्षा विभाग
सांदीपनी एकेडमी
अछोटी, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

CASH VOUCHER

Stamp

No.......................Date. 18/11/2021

Leela's
Leela's Foundation
ISO: 9000-2008

Luvee College Livelihoods & Life Style
Near Teachers Colony, Pt. Ravishankar
Shukla University Campus, Amanaka, Raipur
Mob. 83700-77700, 89627-77700

PARTICULARS	AMOUNT In Rs.
	10,000/=
	/
TOTAL	10,000/=

Received the Sum of

In Word Ten Thousand Only

Rs. 10,000/=

For Small Project

Paid By Cash

IF CHEQUE: (Bank Name)

CHEQUE No. : Date 13/12/21

P. Bhalla
Approved By
(Name and Signature)

Principal
(Education)
Sandi... ...ny
Achhoti, Distt. Durg (C G)

Received By
(Name and Signature)

Bill Available (Yes/No)

If Yes Bill No.

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No.

DATE.................

Shri

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	Mask		2000
	Senitizer		500
	Refreshment		500
	Total		3000.00

NIKITA
STD. FAX, PHOTO-C...
STATIONER...

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No. DATE.....

Shri _____

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	Binding		3000
	stationary		1000
		Total	4000-00

NIKITA
STD, FAX, PHOTO-COPY &
STATIONERY
Amanaka, Raipur (M.P.)

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No.

DATE 25/05/22

Shri Sandipani

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	typing		500
	NIKITA STD. FAX, PHOTO COPIERS	Total	500/-

SANDIPANI ACADEMY * ACHHOTI (MURMUNDA) DIST.-DURG (C.G.)

at
on)
ademy

Nikita STD,FAX, Photo Copiers

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES
AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No.

DATE..................

Shri Sandipani Academy, Achhoti

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	photocopy + typing		2000 500
	NIKITA STD. FAX, PHOTO C... STATIONE...	Total	2500

Principal
(Education)
Sandipani Academy
A...

Nikita STD,FAX, Photo Copier

CYBER COMPUTERS, PRINTS, BINDING,
DAILY NEEDS, GENERAL STORES

AMANAKA, RAIPUR (C.G.)

No.   DATE 15/06/22

Shri Sandipani

S. No.	Particulars	Rate	Amount
	Correction lupping		8000
	NIKITA	Total	8000/-

STD, FAX, PHOTO-COPY & STATIONERY
Amanaka, Raipur (C.G.)

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C.G.)

Burhani Graphics ESTIMATE

Binding | Printing | Copying

Contact No. 99074-00254
Near Geeta Printing Press
Budhapara, Raipur (C.G.)

Contact for Documents Scanning, Printing & Copying Sizes A4 to A0

Bill No. 18 Date : 1/8/2022

To, सांदीपनी एकेडमी अछोटी दुर्ग

S. No.	PARTICULAR	RATE	QTY	AMOUNT
1)	Drilling and Printing work			2000/-
			TOTAL	2000/-

Words ______

For, Burhani Graphics

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Distt. Durg (C.G.)

SANDIPANI ACADEMY ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), दुर्ग (छत्तीसगढ़)

के तत्वावधान में *"दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता"* विषय पर *अध्ययन*

सत्र् 2021–22

SANDIPANI ACADEMY

प्रबंध निर्देशक
श्री महेन्द्र चौबे

परियोजना निर्देशक
डॉ. आभा दूबे
(निर्देशक एवं सहा. प्राध्यापक)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रुव
(सहायक प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहा. प्राध्यापक)

शोधकर्ता
विद्यार्थीगण
बीएड./ बीए. बीएड.
(द्वितीय वर्ष)

शोध संस्थान

सांदीपनी एकेडमी, कुम्हारी–अहिवारा रोड,
अछोटी, पोस्ट–मुरमुंदा व्हाया–धमधा
जिला–दुर्ग(छत्तीसगढ़)
फैक्स–07821–270220
मोबाइल नं.–919300008230,900907722
Email–sandipani.achhoti@gmail.com
Website;WWW.sandipanigroup.org

SANDIPANI ACADEMY DISTT.-DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

सांदीपनी एकेडमी

आभार

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), जिला–दुर्ग के तत्वावधान में **"दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता"** विषय पर अध्ययन सह लघु–शोध प्रबंध लेखन कार्य में कुशल मार्गदर्शन हेतु संस्था प्रमुख श्री महेन्द्र चौबे का विशेष आभार। इस परियोजना कार्य के लिए बतौर निर्देशक अपना योगदान देने के लिए परियोजना निर्देशक डॉ. आभा दूबे (निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापक) एवं डॉ. संध्या पुजारी विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), बी.एड तथा बीए–बीएड. द्वितीय वर्ष के उन समस्त विद्यार्थियों का विशेष आभार जिन्होने परियोजना कार्य को पूर्ण करने में न केवल अपना सहयोग दिया अपितु प्रभावी कार्य हेतु अपने ज्ञान एवं कौशल का भी सार्थक प्रयोग किया। साथ ही इस विशेष अध्ययन विषयक लघु शोध कार्य को पुर्ण करने में आरंभ से अंत तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना बहुमुल्य समय मार्गदर्शन, सहयोग, सुझाव, सलाह प्रदान करने वाले समस्त सुधिजनों का हार्दिक आभार ।

परियोजना निर्देशक
डॉ. आभा दूबे
(निर्देशक एवं सहा. प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहा. प्राध्यापक)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रुव
(सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़

लघु शोध (21-22)

WELCOME
Godhi, Chhattisgarh, India
8FGQ+97H, Godhi, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.325869°
Long 81.486238°
08/01/22 12:25 PM
Google

ग्राम पंचायत मुरमुंदा
जनपद पंचायत - धमधा, जिला - दुर्ग (छ.ग.)

Durg, Chhattisgarh, India
Unnamed Road, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.323817°
Long 81.481851°
16/12/21 02:16 PM

Google
Durg, Chhattisgarh, India
Unnamed Road, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.322443°
Long 81.480612°
16/12/21 01:43 PM

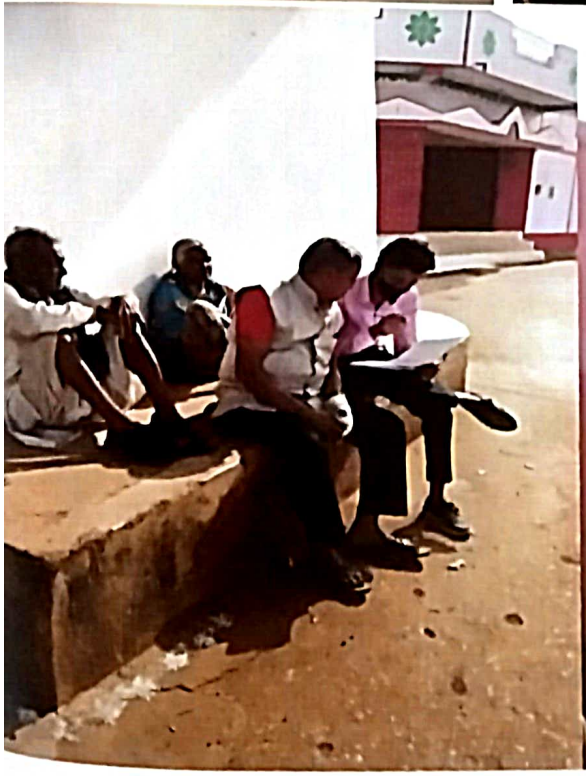

ग्राम पंचायत मुरमुंडा
Murmunda
Google
Murmunda, Chhattisgarh, India
8F57+7J5, Murmunda, Chhattisgarh 490036, India
Lat 21.308098°
Long 81.463823°
14/03/22 02:22 PM

परियोजना निदेशक

डॉ. आमा दूबे

(निर्देशक एवं सहा. प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष

डॉ. संध्या पुजारी

(सहायक प्राध्यापक)

मार्गदर्शक

सुश्री ममता ध्रुव (सहायक प्राध्यापक)

शोधकर्ता

विद्यार्थीगण बीएड. एवं बीए. बीएड. (द्वितीय वर्ष)

शोध संस्थान

शिक्षा विभाग, सांदीपनी एकेडमी,

अछोटी (मुरमुंदा), दुर्ग (छत्तीसगढ़)

SANDIPANI ACADEMY DISTT.-DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), दुर्ग (छत्तीसगढ़)

के तत्वावधान में *"दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता"* विषय पर *अध्ययन*

सत्र् 2021–22

SANDIPANI ACADEMY

प्रबंध निर्देशक
श्री महेन्द्र चौबे

परियोजना निर्देशक
डॉ. आभा दूबे
(निर्देशक एवं सहा. प्राध्यापक)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रुव
(सहायक प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहा. प्राध्यापक)

शोधकर्ता
विद्यार्थीगण
बीएड./ बीए. बीएड.
(द्वितीय वर्ष)

शोध संस्थान

सांदीपनी एकेडमी, कुम्हारी–अहिवारा रोड,
अछोटी, पोस्ट–मुरमुंदा व्हाया–धमधा
जिला–दुर्ग(छत्तीसगढ़)
फैक्स–07821–270220
मोबाइल नं.–919300008230,900907722
Email–sandipani.achhoti@gmail.com
Website;WWW.sandipanigroup.org

SANDIPANI ACADEMY DISTT.-DURG (C.G.) ACHHOTI (MURMUNDA)

आभार

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), जिला–दुर्ग के तत्वावधान में **"दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता"** विषय पर अध्ययन सह् लघु–शोध प्रबंध लेखन कार्य में कुशल मार्गदर्शन हेतु संस्था प्रमुख श्री महेन्द्र चौबे का विशेष आभार। इस परियोजना कार्य के लिए बतौर निर्देशक अपना योगदान देने के लिए परियोजना निर्देशक डॉ. आभा दूबे (निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापक) एवं डॉ. संध्या पुजारी विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), बी.एड तथा बीए–बीएड. द्वितीय वर्ष के उन समस्त विद्यार्थियों का विशेष आभार जिन्होने परियोजना कार्य को पूर्ण करने में न केवल अपना सहयोग दिया अपितु प्रभावी कार्य हेतु अपने ज्ञान एवं कौशल का भी सार्थक प्रयोग किया। साथ ही इस विशेष अध्ययन विषयक लघु शोध कार्य को पुर्ण करने में आरंभ से अंत तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना बहुमुल्य समय मार्गदर्शन, सहयोग, सुझाव, सलाह प्रदान करने वाले समस्त सुधिजनों का हार्दिक आभार ।

परियोजना निर्देशक
डॉ. आभा दूबे
(निर्देशक एवं सहा. प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहा. प्राध्यापक)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रुव
(सहायक प्राध्यापक)

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़

राजनैतिक मानचित्र–1.छत्तीसगढ राज्य़, 2.दुर्ग जिला

सांदीपनी एकेडमी

विषय–सूची

अध्याय	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
अध्याय 1	1.1 भूमिका 1.2 शोध का उद्देश्य 1.3 शोध परिकल्पनाएँ 1.4 शोध प्रविधि 1.5 अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय 1.6 शोध का महत्व 1.7 शोध की सीमाएँ	
अध्याय 2	शोध साहित्य का पुनरावलोकन	
अध्याय 3	1. दुर्ग जिला का सामान्य परिचय 2. धमधा़ विकासखण्ड का सामान्य परिचय	
अध्याय 4	प्राथमिक आँकड़ो का विश्लेषण 4.1 न्यादर्श परिवार की आयु समुह का वर्गीकरण 4.2 न्यादर्श परिवार की शैक्षणिक स्थिति वर्गीकरण 4.3 न्यादर्श परिवार की वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण 4.4 न्यादर्श परिवार के साक्षर कृ ाकों का वर्गीकरण 4.5 न्यादर्श परिवार की ि ाक्षास्तर का वर्गीकरण 4.6 सर्वेक्षित परिवारों के विभिन्न अवस्था वर्गो का वर्गीकरण 4.7 सर्वेक्षित परिवारों की ि ाक्षा विशयों का वर्गीकरण	
अध्याय 5	सारांश, सुझाव एवं निष्कर्ष	
अध्याय 6	परि ि ाश्ट	

आभार

सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), जिला–दुर्ग के तत्वावधान में **''दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में ि ाक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता''** विशय पर अध्ययन सह् लघु–शोध प्रबंध लेखन कार्य में कु ाल मार्गद ान हेतु संस्था प्रमुख श्री महेन्द्र चौबे का वि ोश आभार। इस परियोजना कार्य के लिए बतौर निर्दे ाक अपना योगदान देने के लिए परियोजना निर्दे ाक डॉ. आभा दूबे (निर्दे ाक एवं सहायक प्राध्यापक) एवं डॉ. संध्या पुजारी विभागाध्यक्ष (ि ाक्षा विभाग), बी.एड तथा बीए–बीएड. द्वितीय वर्श के उन समस्त विद्यार्थियों का वि ोश आभार जिन्होने परियोजना कार्य को पूर्ण करने में न केवल अपना सहयोग दिया अपितु प्रभावी कार्य हेतु अपने ज्ञान एवं कौ ाल का भी सार्थक प्रयोग किया। साथ ही इस वि ोश अध्ययन विशयक लघु भाोध कार्य को पुर्ण करने में आरंभ से अंत तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना बहुमुल्य समय मार्गद ान, सहयोग, सुझाव, सलाह प्रदान करने वाले समस्त सुधिजनों का हार्दिक आभार ।

<u>परियोजना निर्दे ाक</u>
डॉ. आभा दूबे
(निर्दे ाक एवं सहा. प्राध्यापक)

<u>विभागाध्यक्ष</u>
डॉ. संध्या पुजारी
(सहा. प्राध्यापक)

<u>मार्गद ाक</u>
सुश्री ममता ध्रुव
(सहायक प्राध्यापक)
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा), जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़

बीएड. एवं बीए. बीएड. (द्वितीय वर्श) के भाोधकर्ता विद्यार्थीगण

क्र.	समूह A बीए. बीएड.(द्वितीय वर्श)	समूह B बीएड.(द्वितीय वर्श)
1	दिने ा कुमार सेन	उपासना साहू
2	खु ाी भार्मा	उमे ा साहू
3	अजय पटेल	अब्दुल कादिर
4	नितां ाा	महेन्द्र मोहले
5	अदिति ध्रुव	साहू राजकुमारी
6	उत्तम ध्रुव	ओगे वर मंडावी
7	कल्पना सोम	भारद्वाज वर्मा
8	इन्द्र कुमार	भीश्म वर्मा
9	चित्रेण	खिले वरी साहू
10	रवि कुमार साहू	उमे ा साहू
11	य ाराज	संग्राम सिंह राठिया
12	दामिनी	प्रेरणा वर्मा

स्त्रोत : सांदीपनी एकेडमी अछोटी, (मुरमुंदा),जिला–दुर्ग, (छत्तीसगढ़)

शीर्षक :– दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में ि ाक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता का अध्ययन

प्रस्तावना :–

इस दौर में आने वाली पीढ़ी के लिए यह चिंतनीय विषय बन गया है की आज हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को किस प्रकार की शिक्षा प्रदान करें? जिससे हमारे सभी पक्षों का विकाश संभव हो सके। शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य के अंदर संस्कार, सद्गुणका विकास करना और उसे आत्मनिर्भर बनाना है। किन्तु आज हम आधिकतर बच्चों को आज की शिक्षा से अमर्यादित, अहंकारी, अंधी बनते देखते हैं। इस समय बच्चों में सर्टिफिकेट के लिए होड़ लगी हुई है।

और तो और आधिकतर लोगों का देखने का नजरिया भी यही है की जो जितने अधिक कागज के टुकड़ों डिग्रियाँ प्राप्त कर लेता है उनके नजरों में वह उतना ही महान होता है। बाहरी आडंबर के चलते हम हमारी सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में स्वयं को उद्दंड स्वभाव वाले बनाने के रास्ते पर चल पड़े हैं। आज बच्चे तर्कहीन मशीन रट्टू तोते बनते जा रहे हैं इस तरह वे अपने बौद्धिक स्तर का विकाश नहीं कर पाते। और समाज में भी पिछड़ जाते हैं।

गांधी जी ने ''यंग इण्डिया'' में लिखा है ''विद्यार्थी को राष्ट्र का निर्माता बनना है''। हमारी पढ़ाई ऐसी होनी चाहिए जिससे राष्ट्र निर्माण हो सके। बच्चे आत्मनिर्भर बन सकें बच्चे निम्न विचारों का त्यागकर सकें। जाती, धर्म, वर्ण, प्रांत, वर्ग, जैसी संकीर्णताओं से निकल सकें। मानवता का प्रसार हो विद्यार्थियों का मानसिक व शारीरिक विकाश हो सके।

ज्ञान मुख्यतः दो तरीकों से अच्छी तरह प्राप्त होता 1. विद्यार्थी स्वयं प्रायोगिक तरीके से करके देखे, तथा 2. पुस्तकों, ग्रन्थों आदि द्वारा। दूसरे तरीके से सटीक तरह से सीखना संभव नहीं है। कारण इस तरह से सीखने में अनुभव नही मिल पता है। पहले तरीके से सीखना आसान भी है और इसमें अनुभव भी होता है। यह तभी संभव है जब हम किसी बात की प्रायोगिक तरीके से पुष्टि करें। आज हमें ऐसी शिक्षा का अनुशरण करने की आव यकता है जो बच्चों में कौशल विकसित कर सके। इस समय में बेरोजगारी अपना विकराल रूप ले चुकी है। एसे में जरूरत है की हम कोई काम या कौशल सीखें जिससे इस समस्या का भी हल हो सके। शिक्षा तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक मनुष्यों में दया, प्रेम, अपनापन, उदारता जैसे गुण विकसित नही हो जाते, क्यूंकि इन गुणों के अभाव में मनुश्य का सर्वांगीण विकास नही हो सकता।

शिक्षा पर विद्वानों के विचार

समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों व नीतिकारों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार दिए हैं। शिक्षा के अर्थ को समझने में ये विचार भी हमारी सहायता करते हैं। कुछ शिक्षा सम्बन्धी मुख्य विचार यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं :

महात्मा गांधी– ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

स्वामी विवेकानन्द– ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

जॉन ड्यूवी– ''शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रखकर अपने उत्तरदायित्त्वों का निर्वाह कर सके।''

हर्बट स्पैन्सर– ''शिक्षा का अर्थ अन्तःशक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है। शिक्षा मानव की सम्पूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण विकास है।''

पेस्तालॉजी– ''शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है, शिक्षा राष्ट्रीय सम्पन्नता एवं राष्ट्र कल्याण की कुंजी है।''

प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य 'मुक्ति' की चाह रही है (सा विद्या या विमुक्तये–विद्या उसे कहते हैं जो विमुक्त कर दे)। बाद में समय के रूप बदलने से शिक्षा ने भी उसी तरह उद्देश्य बदल लिए।

शिक्षा का अर्थ–

शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्य विषयक उत्कर्ष पर केंद्रित है। शिक्षा समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत

करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने–सिखाने की क्रिया।

जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है, व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

मनुष्य क्षण–प्रतिक्षण नए–नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है। जिससे उसका दिन–प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना–सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्शन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना–सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्र निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

<u>शिक्षा का उद्देश्य</u>–

उद्देश्य एक पूर्वदर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य निश्चित तथा स्पष्ट होता है तो व्यक्ति की दिया उस समय तह उत्साहपूर्वक चलती रहती है, जब तक वह उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेता। जैसे–जैसे लक्ष्य के निकट आता जाता है तब व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने को ही उद्देश्य की प्राप्ति कहतें हैं। संक्षेप में उद्देश्य पूर्वदर्शित लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ चिंतनशील रहते हुए क्रियाशील होता शिक्षा के उद्देश्यों के विभिन्न रूप होते हैं। मोटे तौर पर हम शिक्षा के सभी उद्देश्यों को निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित कर रहें हैं

1. विशिष्ट उद्देश्यः–

विशिष्ट उद्देश्यों को असामान्य उद्देश्यों की संज्ञा दी जाती है। इन उदेश्यों का क्षेत्र तथा प्रकृति सीमित होती है। यही नहीं, इनका निर्माण किसी भी विशेष परिस्थिति तथा विशेष

कारण को ध्यान में रहते हुए किया जाता है। इस दृष्टि से यह उद्देश्य लचीले, अनुकूल, योग्य तथा परिवर्तनशील होते हैं। दुसरे शब्दों में शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं।

2.सार्वभौमिक उद्देश्यः–

सार्वभौमिक उद्देश्य मानव जाती पर समान रूप से लागू होती है। इन उद्देश्यों का तात्पर्य व्यक्ति में वांछनीय गुणों का विकास करना है। अतः इनका क्षेत्र विशिष्ट उद्देश्यों की भांति किसी विशेष स्थान अथवा देश तक सीमित न रह कर सम्पूर्ण मानव जाती है। सामान्य उद्देश्यों की प्रकृति भी विशिष्ट उद्देश्यों की भांती सीमित नहीं होती। अतः ये उद्देश्य सनातन, निश्चित तथा अपरिवर्तनशील होते है। संसार के सभी शिक्षा दर्शनों ने इन उद्देश्यों के सार्वभौमिक महत्व को स्वीकार किया है। मानव के व्यक्तित्व का संगठन उचित शारीरिक तथा मानसिक विकास समाज की प्रगति, प्रेम तथा अहिंसा आदि शिक्षा के कुछ ऐसे सार्वभौमिक उद्देश्य है जो, शिक्षा को सार्वभौमिक रूप प्रदान करते हैं।

3.वैयक्तिक उद्देश्यः–

व्यक्तिवादियों के अनुसार समाज के अपेक्षा व्यक्ति बड़ा है अतः शिक्षा का वैयक्तिक उदेश्य व्यक्ति की व्यक्तिगत शक्तियों को पूर्णरूपेण विकसित करने पर बल देता है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री सर टी० पी० नन ने इस उदेश्य पर बल देते हुए लिखा है ''संसार में जो भी अच्छाई आती है वह व्यक्तिगत पुरूषों तथा स्त्रियों के स्वतंत्र प्रयासों द्वारा आती है। शिक्षा की व्यवस्था इसी सत्य पर आधारित होनी चाहिये तथा शिक्षा को ऐसी दशायें उत्पन्न करनी चाहिये जिससे वैयक्तिकता का पूर्ण विकास हो सके तथा व्यक्ति मानव जीवन को अपना मौलिक योग दे सके''

4.सामाजिक उद्देश्यः–

समाजवादियों के अनुसार व्यक्ति की अपेक्षा समाज बड़ा है। अतः वे शिक्षा के सामाजिक उदेश्य पर विशेष बल देते हैं। उनका विश्वास है कि व्यक्ति सामाजिक प्राणी है। वह समाज से अलग रह कर अपना विकास नहीं कर सकता है। अतः उनके अनुसार व्यक्ति को अपनी वैयक्तिकता का विकास समाज की आवश्यकताओं तथा आदर्शों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिये।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है की शिक्षा के उद्देश्यों का व्यक्ति के जीवन तथा समाज के आदर्शों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यदि हम व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए

अलग–अलग शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करना चाहें, तो हम दोनों की आवश्यकताओं तथा आदर्शों को ध्यान में रखना होगा।

<u>अध्ययन का उद्देश्यः–</u>

1. नवीन ि ाक्षा पध्दति का समाज के परिवर्तन एवं विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. ि ाक्षा का आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. ि ाक्षा के प्रति बढ़ती उददासीनता से ग्रामीण विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

<u>अध्ययन परिकल्पनाएँः–</u>

1. ग्रामीण परिवे ा में ि ाक्षा का व्यापक प्रभाव नही पड़ता जिससे ग्रामीण व्यवस्थाएं अपने पारंपरिक स्वरूप को नही बदलती है।
2. वर्तमान ि ाक्षा पध्दति की संरचना अर्थ आधार पर अत्यंत खर्चीली है जिसके कारण समाज का हर वर्ग इससे लाभान्वित नही हो पाते हैं।
3. ि ाक्षा का वर्तमान स्वरूप उपयोगिता की दृश्टि से व्यापक नही है जिसके कारण इसके अर्जन में समाज का हर वर्ग सक्रिय नही होते।

<u>प्रविधि</u>–

<u>ऑकडो का संकलन</u> :– प्रस्तुत शोध प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ो पर आधारित होगा। प्राथमिक समंकों का संकलन प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक समंकों का संकलन शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदनों से संकलित किया गया है।

1. **प्राथमिक आँकड़ो का संकलन :–** प्राथमिक समंकों का संकलन चयनित न्यादर्श ग्रामों के साक्षर परिवारों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।
2. **द्वितीयक आँकड़ों का संकलन :–** प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन के द्वितीयक समंकों का भी उपयोग किया गया है। द्वितीयक समंकों के संकलन के लिए शासकीय एवं अर्ध्दशासकीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित विभागीय प्रतिवेदनों एवं इंटरनेट, पत्र, पत्रिकाओं से प्राप्त समंकों का प्रयोग किया गया है।

<u>आँकड़ो का विश्लेषण</u> – आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग जैसेः– रेखाचित्र, आरेख, सारणीयन, प्रतिशत विधि आदि के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय –

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन ''दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में ि ाक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता'' का अध्ययन करने के लिए दुर्ग जिला का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के अंतर्गत किया गया है। यहाँ अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहने के कारण सरकारी माध्यम से ि ाक्षा प्राप्त करने लगे हैं। इस लघु भाोध के लिए दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड की भौगोलिक, सामाजिक तथा आर्थिक पृश्ठभूमि के सबल पक्षों को ध्यान में रखकर यहां के कुछ गांवों को निद ान के रूप में अध्ययन के लिए चुना गया है।

शोध का महत्व–

भारतीय राश्ट्र के उत्थान में ि ाक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। ि ाक्षा क्षेत्र ही देश की कुल श्रम शक्ति के लगभग 65% लोगों के लिए रोजगार सृजन करता है। इसलिए इसे भारतीय समाज के विकास की आधार शिला कहा जाता है।

1. **राष्ट्रीय आय में ि ाक्षा का योगदान :–** प्रथम विश्व युध्द के समय भारत की ि ाक्षा का स्तर निम्नतम स्थिति में था। इसका प्रमुख कारण औद्योगिक विकास का न होना तथा औपनिवे ि ाक व्यवस्था का होना था। स्वतंत्रता के बाद, विशेष तौर पर योजनाओं को लागू करने के बाद से, द्वितीयक, तृतीयक क्षेत्रों के विकास के कारण समाज की द ाा में भौक्षणिक आधार पर लगातार सुधार होता गया है।
2. **रोजगार की दृष्टि से ि ाक्षा का महत्व :–** 1951 में कार्यकारी जनसंख्या का 22 प्रति ात कार्य ाील जनसंख्या ि ाक्षित थी। यह प्रतिशत संख्या 1991 में 31 तथा 2001 में 56.7 प्रति ात हो गई। वर्ष 2004–05 में कार्य ाील आबादी में शिक्षा का 58 प्रति ात योगदान था। 2008–11 की अवधि में पुरूष श्रम शक्ति का 65 प्रतिशत तथा स्त्री श्रम शक्ति का 46 प्रतिशत ही ि ाक्षित में था। जनसंख्या में तेज वृध्दि होने के कारण, ि ाक्षित लोगों की वास्ततिक संख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई है। अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों का उपयुक्त विकास न होने के कारण उनमें रोजगार अवसरों की वृध्दि बहुत कम हो पाई है जिसमें मजबूरन बहुत से लोगों को कृषि पर काम करना पड़ा है। भूमि पर उनकी सीमांत उत्पादकता बहुत कम हैं इससे अल्परोजगार तथा छिपी हुई बेरोजगारी जैसी समस्याएँ पैदा होती है जिसके आधार में निहित कारणों में भौक्षिक पिछड़ापन एक वि ोश कारण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

3. **बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए रोजगार की आपूर्ति :–** भारत जैसे श्रम–आधिक्य वाले देशों में जनसंख्या के भारी दबाव के कारण, रोजगार अवसरों की मांग में तेज वृध्दि होती है। इसके अलावा, गरीबी के कारण खाद्य–उपभोग तथा बुनियादी विकास का वर्तमान स्तर बहुत कम है। इसलिए रोजगार के सुगम अवसरों की उपलब्धता के लिए ि ाक्षा का विकास प्राथमिक आव यकता है। संभव है कि इससे प्रति व्यक्ति आय बढ़ने पर, सबसे पहले रोजगाार के अवसर स्वतः बढ़ती जाएगी।
4. **पूंजी निर्माण में सहयोग :–** भारत जैसे विकासशील देशों में प्राथमिक क्षेत्र सबसे बड़ा क्षेत्र है इसलिए पूंजी निर्माण में उसका अधिक सहयोग अनिवार्य है। यदि यह क्षेत्र ऐसा कर पाने में असफल होगा तो आर्थिक विकास की प्रक्रिया अवरूध्द हो जाएगी। निम्नलिखित नीतियाँ अपनाने की बात की जाती है– 1. गैर– ौक्षणिक क्षेत्रों का ि ाक्षा की ओर श्रम व पूंजी का अंतरण, 2. ि ाक्षा पर इस प्रकार से कराधान कि उस पर करों का भार न्यूनमत हो, 3. भौक्षणिक निकायों पर इस प्रकार कीमत– नियंत्रण लगाना जिससे विनिमय की शर्तें अध्ययन के अनुकूल हो जाएँ।
5. **औद्योगिक विकास के लिए ि ाक्षा का महत्वः–** भारत में औद्योगिक विकास की दृष्टि से कृषि का बहुत महत्व है। भारत में महत्वपूर्ण उद्योगों को जिनमें सूती वस्त्र, जूट, चीनी, तथा वनस्पति उद्योग है। कृषि से ही कच्चे पदार्थो की प्राप्ति होती है। औद्योगिक क्षेत्र में लगे हुए लोगों के लिए खाद्यान्नों के उत्पादन की जिम्मेदारी कृषि क्षेत्र पर ही है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र में विनिर्माण उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का बाजार भी होता है। अभी भारतीय किसानों और खेतिहार मजदूरों की आय का स्तर काफी नीचा है। इसलिए इस क्षेत्र में तैयार वस्तुओं के लिए बाजार सीमित है। कृषि विकास से भारतीय उद्योगों के लिए ग्रामीण क्षेत्र में बाजार विस्तृत होना स्वाभाविक है।
6. **अंतर्राष्ट्रीयता और ि ाक्षा :–** बहुत लम्बे समय तक तीन कृषि वस्तुओं (चाय, पटसन तथा सूती वस्त्रों) का भारत की निर्यात आय में 50 प्रतिशत हिस्सा था। यदि हम अन्य कृषि वस्तुओं जैसे कॉफी, तम्बाकू, काजू, वनस्पति तेल, चीनी इत्यादि को भी शामिल कर लें तो कृषि का निर्यात आय में हिस्सा 70 से 75 प्रतिशत तक पहुँच जाता है। कृषि वस्तुओं पर इतनी अधिक निर्भरता भारत के अल्प–विकास को प्रतिलक्षित करती थी। आर्थिक विकास के साथ–साथ उत्पादन में विस्तार व विविधीकरण हुआ जिससे निर्यात आय में कृषि का हिस्सा कम हुआ।

शोध की सीमाएँ–

1. चयनित न्यादर्श क्षेत्र का अध्ययन करने की एक निश्चित सीमा होती है, जिसके कारण हमें सही आँकड़े उपलब्ध हो पाते है।
2. लघु शोध–प्रबंध का अध्ययन हम चयनित गाँवों का ही जानकारी एकत्र किया जाएगा, इसके बाहर के गाँवों का नही कर सकते।
3. दुर्ग जिले के धमधा़ विकासखण्ड में ि ाक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता के क्या कारण रहे तथा उनका क्या प्रभाव पड़ा है, इसका अध्ययन किया गया है।

अध्याय 02
शोध साहित्य का पुनरावलोकन

शोध साहित्य की समीक्षा

1. चौबे प्रसाद सरयू, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, दशम संशोधित संस्करण 2009.

प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षा की समाजशास्त्रीय आधारों के मूल्य तत्वों विचारों तथा सिद्धांतों का विवेचना है। इसके प्रथम खंड में विविध बातों को समझाने के लिए पूरे संसार की पृष्ठभूमि को आधार के रूप में लिया गया है। तथा विभिन्न अवस्थाओं में मनुष्य की सार्वभौमिक प्रवृत्ति संदर्भ बिंदु रही है। समाजशास्त्री आधारों के शैक्षणिक महत्व की व्याख्या भारतीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में की गई है। इस व्याख्या में अपने देश की जन्म निरक्षरता सामाजिक आर्थिक स्थिति राजनैतिक व्यवस्था राष्ट्रीय समृद्धि समाजवादी समाज तथा नियोजन की समस्याओं के शैक्षणिक पक्षों की विवेचना समाजशास्त्री दृष्टिकोण से की गई है। तथा स्वतंत्र भारत में शिक्षा के स्वरूप की ओर संकेत किया गया है प्रस्तुत रचना में लेखक का उद्देश्य विषय की संपूर्ण परिधि को पाठ के सामने रखना एवं लेखक ने देश–विदेश में चलित शैक्षणिक समाजशास्त्री संबंधी पाठ्यक्रमों का तथा देश और विदेशों में विषय पर उपलब्ध ग्रंथों का अध्ययन किया है। विगत 45 वर्षों के अपने अध्ययन के अध्यापन के क्रम में शिक्षा के समाचारों पर सामाजिक और सामुदायिक विकास में शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहे हैं। यही कारण है कि शिक्षा के समाजशास्त्रीय अध्ययन अब जोर पकड़ता जा रहा है। तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षा शास्त्र के स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का इसे आवश्यक बना दिया है। इस प्रकार से यह पुस्तक शोध कार्य के लिए युक्त है।

2. अस्थाना विपिन एवं निधि अग्रवाल पब्लिकेशन द्वितीय संस्करण 2015.

प्रस्तुत पुस्तक में शैक्षिक मूल्यांकन का प्रादुर्भाव हमारे मन से तब हुआ जब हमने अनुभव किया कि इस क्षेत्र की अधिकांश पुस्तकें में मापन को ही प्राथमिकता प्रदान की गई है। इस विषय पर उपलब्ध अधिकांश पुस्तक की शीर्षक मापन और मूल्यांकन जो स्वयं इस तथ्य को उजागर करते हैं कि इन पुस्तकों और उनके लेखकों की उन्मुक्त समापन की ओर ही है। पता लेखक ने मूल्यांकन को प्राथमिकता प्रदान करती है। शैक्षणिक मूल्यांकन विकृति को वर्तमान प्रदान करने की कोशिश की गई है। शिक्षा का उद्देश्य एवं उदाहरण प्रस्तुत किया गया है ।आंकड़ों के परीक्षण के लिए परीक्षण के लिए सांख्यिकी व्यक्तिगत मापन का उपयोग किया

जाता है। क्रमबद्ध वर्ग कर्म विधि की विश्वसनीयता विधि का प्रयोग साक्षरता एवं अन्य विधि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण विधि शारीरिक परीक्षण विधि प्रक्षेपण विधि का अर्थ एवं परिभाषा एवं महत्व का विस्तार से लिया गया है। इस प्रकार से यह शोधार्थी के लिए उपयुक्त है।

3. बक्शी एन.एस. शिक्षा दर्शन प्रेरणा प्रकाशन 2009.

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बताया कि शिक्षक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक उसके साथ चलती हैं। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के द्वारा भली–भांति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं किया जा सकता इसीलिए निश्चित आयोग के पश्चात बालक को शिक्षा प्राप्त करने हेतु विद्यालय में भेजा जाता है जहां पर उनके द्वारा शिक्षा प्राप्त की जाती है विद्यालय में शिक्षक के द्वारा बताए जाने वाली विभिन्न व्यवहारों को बालक के द्वारा भली–भांति अपने व्यक्तित्व में सम्मिलित किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसके द्वारा भली–भांति अपने व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। वर्तमान में राष्ट्रपति भी ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है। जिनके द्वारा शिक्षा प्राप्त की गई हो लेखक ने बताया कि यदि देश में सभी लोग शिक्षित होंगे तो निश्चय ही सदियों से चली आ रही पुरानी वीडियो का विरोध करने में उनके द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है। इन विरोधियों को समाप्त करते ही देश में शांति व्यवस्था को उत्पन्न किया जा सकता है। भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया गया जिसके अंतर्गत देश में सभी नागरिकों को समान रूप से अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर प्रदान किया गया है। जिससे उनके द्वारा भली–भांति अपने पूर्ण विकास किया जा सके इस प्रकार से शिक्षा विभिन्न व्यक्ति को पशु के समान माना जा सकता है। इसके द्वारा अपने सभी प्रकार के शब्दों की सूची भली–भांति नहीं की जा सकती इसलिए शिक्षा प्रदान करना बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके आधार पर ही व्यक्ति में सभी प्रकार के आवश्यक गुणों को विकसित किया जा सकता है। महात्मा गांधी जी के अनुसार बालक के मन आत्मा तत्व शरीर की सर्वोत्तम का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है। कौटिल्य के अनुसार राष्ट्र के प्रति व्यापार अब देश के प्रति प्रशिक्षण शिक्षा है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य में निहित देवी पूर्णता का विकास किया जाता है। ऐसी शिक्षा को महत्व प्रदान की जाए जिसके आधार पर हम अपना आचरण पूर्ण सदाचारी बना सकें जो हमारी मानसिक बल को बढ़ाएं तथा बौद्धिकता का विकास करने में सहायता प्रदान करते हुए मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाएं इस प्रकार से अब सुभारती के शोध कार्य के लिए उपयुक्त है

4. पांडे आर. एस. ''भारतीय शिक्षा'' चिंता एवं मुद्दे .

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात जनतांत्रिक शासन व्यवस्था लागू की गई जनतंत्र शिक्षा व्यवस्था के तहत यह प्रयास किया जा रहा है। कि सभी वर्ग के लोग समान रूप से शिक्षित हो तथा देश की समृद्धि एवं विकास में सहयोग दे सकें ।शासन प्रयासरत हैं। कि जन –जन तक शिक्षा पहुंचे और सभी व्यक्ति गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त करें इसके लिए शिक्षा का लोक व्यापी करण किया जा रहा है जिससे शिक्षा सभी वर्गों तक पहुंच सके।

5. यागी जी एस डी. एवं पाठक पी डी 1985, ''भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं '',आगरा विनोद पुस्तक मंदिर.

हमारे देश में शिक्षा देने की जो पद्धति अपनाई जाती हैं। वह प्रयोगात्मक ना होकर सट्टेबाजी वाली है। अधिकांश शिक्षक बच्चे में संस्कार और जीवन में पढ़ाई के महत्व को समझने से बचते हैं। क्योंकि उन्हें खुद नहीं पता कि एक बच्चे को उसी के मानसिक स्तर पर उसको जैसे समझाया जाए आजकल के बच्चों में बौद्धिक स्तर की गिरावट देखने को मिलती हैं। इसलिए शिक्षा के प्रति लोगों में उदासीनता बढ़ती जा रही है इस प्रकार से यह शोध कार्य के लिए उपयुक्त है।

6. वास्तव नारायण गोपाल शिक्षा के प्रति युवाओं में बढ़ती उदासीनता 1436 सीतापुर रोड.

शिक्षा एक गुणात्मक प्रक्रिया है। जो जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर अबाध गति से चलती रहती हैं। लोगों का विश्वास है कि शिक्षा एवं उनके विकास की प्रक्रिया शिशु में माता के गर्भ से ही प्रारंभ होकर उसके अंतिम सांस तक चलती है। शिक्षा की मूलभूत समस्याओं के अंतर्गत शिक्षा शास्त्रियों ने उपयुक्त संदर्भ में चिंता व्यक्त किए हैं। जिसका बोर्ड उनके द्वारा उल्लेखित पुस्तकों से होता है। देश एवं प्रदेश की सरकारी यथासंभव इस समस्याओं को दूर करने का प्रयास करती है। भारत के जो निर्णय वर्गी छात्राएं उनके अभिभावक की अधिक शिक्षा के पक्ष में नहीं है। काम चलाओ शिक्षा दिलाने के बाद इस वर्ग के छात्रों के पिता उन्हें आज व्यवसाय में हाथ बंटाने के लिए उन्हें शिक्षा से विरत कर देते हैं। परिवार से शिक्षा के प्रति उचित प्रोत्साहन ना पाकर ऐसे छात्र शिक्षा के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

7. गोपाल उषा, शिक्षा के सिद्धांत, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन ,प्रथम संस्करण 2006.

उपयुक्त पुस्तक के माध्यम शिक्षा के आधुनिक प्रतिमा मे काल एवं विज्ञान के रूपों का क्रमशः उल्लेख किया गया है। शिक्षण को प्रभावशाली एवं प्रबल बनाने के लिए जिन

मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक उपायों का अवलंबन लाया गया है। इसमें प्राचीन शिक्षा और आधुनिक शिक्षा को प्रदर्शित किया है । इस प्रकार यह पुस्तक शोधकर्ता के लिए उपयोगी है।

8. गुप्ता यू. सी., खेल मनोविज्ञान और शारीरिक शिक्षा के समाजिक, खेल साहित्य केंद्र, भारत में प्रकाशित 2008.

उपयुक्त पुस्तक के माध्यम से खेलो का सामाजिक गुणों को सिखाने में योगदान करता है तथा शारीरिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति तथा समूह का सामाजिकरण करता है। इसमें सीखने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार यह शोधकर्ता के लिए उपयोगी है।

9. मिश्रा महेंद्र कुमार, शिक्षा सिद्धांत एवं आधुनिक भारत की शिक्षा,यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा.) लिमिटेड.

उपयुक्त पुस्तक के माध्यम से शिक्षा के समाजिक परिवर्तन का माध्यम स्वीकारते हुए ओटावे का कथन है कि एक प्रजातांत्रिक समाज में शिक्षा का उपयोग के रूप में बताया गया है। यह समाज में परिवर्तन के लिऐ तैयार करती है और यह शिक्षा का रचनात्मक पक्ष है। इस प्रकार यह पुस्तक शोधकर्ता के लिऐ उपयुक्त है।

10. बिहारीलाल विश्वनाथ एवं त्रिपाठी नरेश चंद्र,''शिक्षा के नूतन आयाम'', श्री विनोद पुस्तक मंदिर– आगरा–2, 2009.

प्रस्तुत पुस्तक में स्वतंत्रता से पूर्व व उसके बाद के शिक्षा पद्धति के बारे में वर्णन किया गया स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न क्षेत्र में हुए परिवर्तन ने युवाओं में असंतोष, बेरोजगारी व युवाओं में अशांति समस्याओं के चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकताओं को बल दिया गया , जनसंख्या शिक्षा ,पर्यावरण शिक्षा ,मूल्य शिक्षा ,अभिभावक शिक्षा आदि शिक्षा को भारती शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित किया गया हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह पुस्तक शोध कार्य के लिए अति महत्वपूर्ण है।

11. त्रिपाठी मधुसूदन,''आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा'', ओमेगा पब्लिकेशंस नई दिल्ली, 2009.

इस पुस्तक में 14 अध्यायों को सम्मिलित किया गया है। जिनमें 'आधुनिक समाज और शिक्षा शिक्षा और शिक्षा दर्शन','मानवीय मूल्यों की शिक्षा शैक्षिक अवसरों की समानता 'भारतीय समाज में शिक्षा के उद्देश्य आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा', 'शिक्षा एवं वर्तमान भारतीय समाज', 'जनसंख्या शिक्षा', 'शिक्षा में समानता और निष्पक्षता', 'शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन', 'शिक्षा

की मूल प्रवृत्तियां', 'मानसिक विकास का स्तर', 'शिक्षा विनियोग के रूप में', प्रौढ़ शिक्षा' विषयों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक शोधकर्ता के लिए उपयोगी है।

अध्याय–3

1. दुर्ग जिला का सामान्य परिचय

2. धमधा विकासखण्ड का सामान्य परिचय

1. दुर्ग जिले का सामान्य परिचय

सामान्य परिचय छत्तीसगढ़ राज्य के हृदय स्थल पर शिवनाथ नदी के पूर्व में स्थित है दुर्ग जिला। जो 20° 51′ उत्तर अक्षांश से 21° 32′ उत्तर अक्षांश तक तथा 81° 8′ पूर्व देशांतर से 81° 37′ पूर्व देशांतर तक फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 271862 हेक्टेयर है। जिले के बीचो बीच से राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 06 (मुम्बई–नागपुर–कोलकाता राजमार्ग) गुजरता है। रेल्वे की दक्षिण–पूर्व रेल सेवा यहां उपलब्ध है। दुर्ग जिले का निकटस्थ हवाई अड्डा रायपुर एयरपोर्ट है जो यहां से लगभग 60 किलो मीटर दूर स्थित है। जिला ऊपरी शिवनाथ–महानदी घाटी के दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है। जिले का अधिकतम हिस्सा छत्तीसगढ़ का मैदानी हिस्सा है। दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ में औद्योगिक विकास का अग्रदूत है। जहां भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना के साथ न सिर्फ जिले बल्कि संपूर्ण प्रदेश का चौतरफा औद्योगिक विकास हुआ है। इसके साथ ही दुर्ग जिला सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक सामंजस्य, संसाधनों के अर्थपूर्ण उपयोग एवं विभिन्न जातियों एवं धर्मो के लोगों के बीच आपसी सौहार्द्र के लिये भी जाना जाता है। दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ राज्य का गौरव है। पुरातनकाल से अब तक दुर्ग जिले का इतिहास और वर्तमान अपने आप में प्राचीन मूल्यों और आधुनिकता का अद्‌भुत समन्वय है। यहां एक ओर तो सांस्कृतिक मूल्य गहराई से जुड़े हुए हैं तो वही निरंतर पल्लवित होती उद्यमिता इसे एक औद्योगिक जिले के रूप में स्थापित करती है। दुर्ग जिले का वर्तमान स्वरूप 1 जनवरी सन् 2012 से है। जिले का कुल क्षेत्रफल 271862 हेक्टेयर है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 17,21,948 है। जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 6,17,248 एवं शहरी जनसंख्याा 11,04700 है। दुर्ग जिले की सीमाएं पड़ोसी जिलों राजनांदगांव, रायपुर, बेमेतरा, बालोद, धमतरी को स्पर्श करती हैं। जिले की अधिकांश सीमाएं खारून और शिवनाथ नदी से बनी हुई है।

<u>नदियां–</u>

जिले की सामान्य ढलान उत्तर–पूर्व की ओर है और इसी दिशा में जिले प्रमुख नदियां प्रवाहित होती है।

शिवनाथ नदी

शिवनाथ जिले की सबसे महत्वपूर्ण नदी है। और यह महानदी नदी की सहायक नदी है। यह राजनांदगांव जिले में 625 मीटर ऊचीं पानाबरस की पहाड़ियों से निकलती है और

दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। यह अधिकतर जिले के मध्य में बहते हुये जिले को दो भागों में बांटती है। इसका तल बलुआ और चट्टान रहित है। यह उत्तर पुर्व की ओर खुज्जी, राजनांदगांव, दुर्ग, धमधा और नांदघाट से होते हुए बिलासपुर जिले के शिवरीनारायण के पास महानदी से मिल जाती है। शिवनाथ नदी की अनेक सहायक नदियां हैं जैसे– खारून, तान्दुला, खरखरा, हाफ, संकरी, आमनेर, सोनबरसा, सुरही, जुझरा, घुघरी, गब्दा, करूना, लोरी आदि। शिवनाथ नदी जिले में लगभग 250 कि.मी. की दूरी तय करती है।

खारून नदी

खारून नदी जिला बालोद के पेटेचुवा से शुरू होकर दुर्ग जिले के पूर्वी भागों में बहती है। यह नदी उत्तर की ओर बहती है और सोमनाथ में शिवनाथ नदी से मिल जाती है। यह नदी रायपुर और दुर्ग जिले की सीमा निर्धारित करता है। इस नदी की लंबाई करीब 120 किलोमीटर है।

<u>खनिज संसाधन</u>–

जिले में उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर का समृद्ध भंडार है। चूना पत्थर का उत्खनन मुख्यचतः नंदिनी, सेमरिया, खुदंनी, पिथौरा, सहगांव, देउरझाल, अहिवारा, अछोली, मातरागोटा, घोटवानी और मेडेसरा में किया जाता है। इस प्रकार उत्पुादित चूना पत्थर का उपयोग जिले में ही स्थोपित भिलाई इस्पाइत संयंत द्वारा इस्पात उत्पादन के लिए एवं जामुल और जे. के. लक्ष्मी फैक्टरी द्वारा सीमेंट उत्पादन के लिये किया जाता है।

<u>मौसम एवं जलवायु</u>–

जिले की जलवायु उष्णकटिबंधीय प्रकार की है। गर्मियों में तापमान 46 डीग्री सेन्टीग्रेट तक पहुंच जाता है। मार्च के महीने से तापमान में वृद्धि शुरू होकर मई माह तक होती है। मई और महिनों की तुलना में सबसे अधिक गर्म होता है। दुर्ग जिले की वार्षिक औसत वर्षा 1052 मिमी है। वर्ष के दौरान सबसे अधिक वर्षा मानसून के महीनों जून से सितंबर के दौरान होता है। जुलाई सर्वाधिक वर्षा का महीना है।

राजधानी दुर्ग

क्षेत्रफल : 2,238 किमी^{2}

जनसंख्या(2011): 33,43,079

क्षेत्र : 1500 किमी^{2}

उपविभागों के नाम : तहसील

उपविभागों की संख्या : 3

मुख्य भाषा(एँ) : हिन्दी, छत्तीसगढ़ी

दुर्ग जिला भारत के छत्तीसगढ़ राज्य का एक जिला है। जिले का मुख्यालय दुर्ग है। दुर्ग जिले के मुख्य शहर, दुर्ग, और भिलाई सम्मिलित रूप से ट्विनसिटी कहा जाता है। भिलाई में लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना के साथ ही दुर्ग का महत्व काफी बढ़ गया। शिवनाथ नदी के पूर्वी तट पर स्थित दुर्ग शहर के बीचोबीच से राष्ट्रीय राजमार्ग ६ (कोलकाता–मुंबई) गुजरती है। ट्विनसिटी के तौर पर दुर्ग–भिलाई शैक्षणिक और खेल केंद्र के रूप में न केवल प्रदेश में बल्कि देश में अपना स्थान रखता है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार दुर्ग नगर की जनसंख्या 2,31,182 थी। दुर्ग छत्तीसगढ़ का दूसरा बड़ा शहर हैं जो लगभग छत्तीसगढ़ के बीचोबीच बसा हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

प्राचीन काल में यह नगर महत्वपूर्ण रहा है जो मंदिरों और तालाबों के अवशेषों से प्रमाणित होता हैं। यहाँ कुछ मंदिर ऐसे है जो क्षेत्रीय शिल्पकला को प्रदर्शित करती है। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन मे दुर्ग नगर का अपना अलग ही महत्व है।

जिला गठन–

जिला दुर्ग का गठन 1 जनवरी, 1906 को रायपुर और बिलासपुर जिलों के कुछ क्षेत्रों को मिलाकर किया गया था। उस समय आज के राजनांदगांव कबीरधाम (कवर्धा)जिला भी दुर्ग जिले का हिस्सा थे 26 जनवरी 1973 को जिला दुर्ग को विभाजन किया गया और राजनांदगांव जिला अस्तित्व में आया 6 जुलाई 1998 को जिला राजनांदगांव भी विभाजित किया गया और नया कबीरधाम जिला अस्तित्व में आया। 1906 से पहले दुर्ग रायपुर जिले का तहसील था। '1996 में दुर्ग जिले के गठन के समय इसमें दुर्ग बेमेतरा और बालोद तीन तहसील थे ।

जनसंख्या–

दुर्ग जिला की जनसंख्या 2011 जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 17,21,948 हैं। जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 875813 व महिलाओं की जनसंख्या 846135 है। 0–6 आयु वर्ष की कुल जनसंख्या 210511 है। जिसमें पुरूष 108076 एवं महिला जनसंख्या 102435 है। अनुसुचित जाति की कुल जनसंख्या 245587 है जिसमें 123151 पुरूष तथा 122436 महिलाएँ

है। दुर्ग में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 101188 है, जिसमें 51202 पुरूष एवं 49986 महिलाएँ हैं। दुर्ग जिला का घनत्व 398 वर्ग कि.मी. है एवं लिंगानुपात प्रति हजार पुरूषों पर 988 महिलाएँ है।

साक्षरता दर–

दुर्ग जिला का कुल साक्षारता दर 79.06 प्रतिशत है, जिसमें पुरूषों का साक्षारता दर 87.82 प्रतिशत तथा महिलाओ का 70.23 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों की कुल साक्षरता दर 77. 58 प्रतिशत है। शहरी क्षेत्रों की कुल साक्षरता दर 82.5 प्रतिशत है।

<u>दुर्ग जिला की भौगोलिक संरचना</u>–

दुर्ग छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण–पश्चिमी भाग में स्थित है। यह समुद्र तल से 317 मीटर ऊपर स्थित है। दुर्ग का भौगोलिक क्षेत्रफल 8702 वर्ग किमी है। यह जिला छत्तीसगढ़ के दक्षिणपश्चिमी हिस्से में स्थित है और दक्षिण, दक्षिण–पश्चिम और उत्तर–पश्चिम में पहाड़ी देशों की बेल्टें हैं जो खनिज संसाधनों और जंगलों से समृद्ध हैं। जिला ऊपरी शोनथ–महानदी घाटी के दक्षिण–पश्चिमी भाग और दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम में सीमावर्ती पहाड़ियों पर स्थित है। भौगोलिक रूप से, जिले को छत्तीसगढ़ के मैदान और दक्षिणी पठार के रूप में दो प्रभागों में विभाजित किया जा सकता है। छत्तीसगढ़ का मैदान जिले में सबसे बड़े क्षेत्र में है। जिले का ढलान पश्चिम की ओर है। जिले की प्रमुख नदियाँ शोनथ और खारुन हैं। शेओनाथ नदी जिले की पश्चिमी सीमा के पास बहती है जबकि खारुन नदी जिले की पूर्वी सीमा बनाती है जो अंततः शेनाथ नदी में मिलती है। दुर्ग के तीन मुख्य मौसम गर्मी, सर्दी और बरसात के मौसम हैं। दुर्ग की औसत वर्षा 1071–16 है। जिला दुर्ग का अधिकतम, न्यूनतम और न्यूनतम वर्षा क्रम क्रमशः 1477–2 मिमी, 1071,16 मिमी और 781–5 मिमी प्रति वर्ष है।

ग्राम एवं पंचायत–

दुर्ग जिला में 3 तहसीलें है, 112 ग्राम पंचायते एवं 388 कुल गांवो की संख्या है।

लोकसभा एवं विधानसभा–

दुर्ग जिला में एक लोकसभा क्षेत्र एवं 4 विधान सभा क्षेत्र दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग शहर भिलाई नगर और वैशाली नगर है।

दर्शनीय स्थल–बम्बलेश्वरी मंदिर–

पर्यटन की दृष्टि से दुर्ग जिला प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण है। यहाँ की प्रसिध्द बम्बलेश्वरी मंदिर भिलाई से थोड़ी दूर एक पहाड़ी पर स्थित है. यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक

स्थल है। इसे बड़ी बम्ब्लेश्वरी के रूप में भी जाना जाता है। यह मंदिर डोंगरगढ़ में स्थित है और छोटी बम्लेश्वरी के नाम से दुसरे मंदिर से 1–2 दूर है।

सियादेवी– सीता मैया मंदिर के लिए जाना जाता है। यह एक सुरम्य स्थान के बीच में स्थित है। यदि आप जुलाई और फरबरी के बीच जगह का दौरा कर रहें हैं तो आप प्राकृतिक झरने के सुन्दर दृश्य का आनंद ले सकते हैं। सियादेवी को उन स्थानों में से एक माना जाता है जहां राम, लक्ष्मण और सीता जी अपने वनवास के दौरान रहते थे।

तांदुला जला ाय–भिलाई से 60 कि–मी– की दुरी पर स्थित है. तांदुला को एक मानव निर्मित चमत्कर के रूप में जाना जाता है. यह बांध तेंदुला नदी के ऊपर बना है. ये जगह पिकनिक के लिए आदर्श माना जाता है।

मैत्री बाग–यह एक चिड़ियाघर, पार्क और वयस्कों और बच्चो के लिए एक शांत आकर्षण है. यह भिलाई क्षेत्र का सबसे बड़ा चिड़ियाघर है. यहाँ मनोरंजन के लिए कई प्रकार के विकल्प है। मैत्री बाग को 1972 के वर्ष में यू एस एस आर और भारत के बीच दोस्ती के प्रतिक के रूप में स्थापित किया गया था और भिलाई स्टील प्लांट, सेल ने इसे विकसित किया था। इसे व्यापक रूप से फ्रेंडशिप पार्क के रूप में भी जाना जाता है और भारी संख्या में पर्यटकों घुमने के लिए।

हाजरा जलप्रपात–

भिलाई से 100 कि–मी– दूर एक छोटा सा स्टील सिटी और घने जंगल और पहाडियों के बीच में स्थित है. हाजरा जलप्रपात 150 मी. उंचाई पर एक शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है। स्थानियों लोगो के साथ–साथ पर्यटकों के बीच एक पिकनिक स्थल के रूप में भी प्रसिद्ध है। सिविक सेंटर सामाजिक गतिविधिया और मनोरंजन से भरपूर, भिलाई का एक प्रसिद्ध खरीदारी केंद्र है। इस क्षेत्र में एक गुंबद सुपरमार्केट भी है जहां कला प्रदर्शनियां आयोजित की जाती है. सिविक सेंटर एक ओपन एयर थिएटर भी है। जहा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ साथ संगीतमय रातों के लिए मंच के रूप में कार्य करता है।

कृशि–

दुर्ग जिला में कृशि जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन है। यहाँ कुल जिले के किसानों ने गत वर्ष एक लाख 27 हजार हेक्टेयर में धान की फसल ली थी। जबकि 2636 हेक्टेयर में दलहन और 4556 हेक्टेयर में तिलहन फसल लेने का लक्ष्य रखा गया था। जिलें में खरीफ फसल का कुल रकबा एक लाख 44 हजार 844 हेक्टेयर था। जिसमें से 81 फीसद रकबा में

किसानों ने धान की फसल ली थी। दुर्ग जिला में खरीफ फसलों में धान, अरहर, तिल, अलसी प्रमुख है। रबी में गेहुँ, चना, सरसों प्रमुख है।

शिक्षा–

दुर्ग जिला में साक्षरता का स्तर बहुत अच्छा है। सन् 2011 जनगणना के अनुसार प्राथमिक शाला 1091, माध्यमिक विद्यालय की संख्या 574, हाईस्कूलों की संख्या 87, उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की संख्या 149, महाविद्यालयों की संख्या 23 एवं 11 व्यवसायिक संस्थाएँ है।

परिवहन एवं संचार–

दुर्ग जिला में पक्की और कच्ची सड़के है। जिसमें 2011 जनगणना के अनुसार मोंटर साइकिल एवं स्कूटरों की संख्या 16392, टैक्सी की संख्या 60, टैक्टरों की संख्या 1601 बसों की संख्या 400, कार एवं जीप 6050 तथा माल वाहन 3560 तथा अन्य 22000 वाहने है।

बैकिंग एवं वित्तिय सुविधाएँ–

दुर्ग जिला में कुल बैंको की संख्या 247 है जिसमें ग्रामीण बैंको की संख्या 43, अर्ध्दशासकीय बैंक 80 सहकारी बैंक 79 तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक 45 है।

सामाजिक विशेषताएँ–

दुर्ग जिला एक बडा जिला है, जहाँ सभी वर्ग के लोग निवास करते है, इसमें हिन्दु, मुस्किल, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मो को मानने वाले लोग निवास करते है। यहाँ हिन्दु धर्म के मानने वालों की जनसंख्या अधिक है। वन बाहुल्य क्षेत्र नही होने के कारण यहाँ जनजातिय लोगों की संख्या कम है।

प्रशासनिक ढाँचा– तालिका–प्रशासनिक दृष्टि से दुर्ग जिला में निम्नलिखित विभाग है।

क्र		
1.	जिला कार्यालय	दुर्ग
	तहसीलों की संख्या	03 (दुर्ग,पाटन,धमघा)
	विकासखण्ड की संख्या	03 (दुर्ग,पाटन,धमघा,)
	लोकसभा क्षेत्र	01 (क्षेत्र क्र. 07 दुर्ग)
	विधानसभा क्षेत्र	05(दुर्ग ग्रामीण,दुर्ग शहरी पाटन ,वौशाली नगर भिलाई)
	नगर पंचायत	03 (धमधा,उतई,पाटन)
	नगर निगम	04 दुर्ग, भिलाई,चरौदा,रिसाली
	जिला न्यायलय	01 दुर्ग
	ग्राम पंचायत	112
	कुल ग्राम	388

धमधा विकासखण्ड का सामान्य परिचय

सामान्य परिचय :–

जनसंख्या :–

धमधा छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में एक नगर पंचायत शहर है। धमधा शहर को 15 वार्डों मे विभाजित किया गया है, जिसके लिए हर 5 साल में चुनाव होते हैं। धमधा नगर पंचायत की जनसंख्या 9,961 है। जिसमें से 4,935 पुरुष हैं जबकि 5,026 महिलाएं हैं। जैसा कि जनगणना भारत 2011 द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार है। 0–6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 1385 है जो धमधा (एनपी) की कुल जनसंख्या का 13–90 प्रति ात है। धमधा नगर पंचायत में, राज्य के औसत 991 के मुकाबले महिला लिंग अनुपात 1018 है। इसके अलावा धमधा में बाल लिंग अनुपात 969 के छत्तीसगढ़ राज्य के औसत की तुलना में लगभग 1037 है। धमधा शहर की साक्षरता दर राज्य के औसत 70–28ः से 79–64 प्रति ात अधिक है। धमधा में, पुरुष साक्षरता लगभग 88–95 प्रति ात है जबकि महिला साक्षरता दर 70–47 प्रति ात है। धमधा नगर पंचायत का कुल प्रशासन 2,175 से अधिक घरों में है। जिसमें यह पानी और सीवरेज जैसी बुनियादी सुविधाओं की आपूर्ति करता है। यह नगर पंचायत की सीमा के भीतर सड़कें बनाने और अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली संपत्तियों पर कर लगाने के लिए भी अधिकृत है।

सामाजिक स्थिति :–

धमधा़ विकासखण्ड में सभी धर्मो के लोग निवास करते है जिसमें सबसे ज्यादा हिन्दु धर्म के लोग 96.62 प्रति ात अत्यधिक है, मुस्लिम 3.07 प्रति ात ईसाई 0.25 प्रति ात सिख 0.02 प्रति ात है। धमधा़ में 15 वार्डो की संख्या है।

शिक्षा :–

दुर्ग जिले में 1011 सरकारी स्कूल हैं जहां पर 1 लाख 63 हजार 19 स्टूडेंट और 6300 टीचर है। वहीं 589 निजी स्कूल के 1 लाख 56 हजार स्टूडेंट और 9300 टीचर है। साथ ही सरकारी स्कूल में 16 अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भी पढ़ाई होती है। शिक्षा हेतु प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर तक की सुविधा उपलब्ध है। धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत ग्रांम ढ़ाबा में अर्धशासकीय महाविद्यालय है, जिसमें ढ़ाबा क्षेत्र के आस–पास के गाँवो से छात्र–छात्राएँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है। इस विकासखण्ड में हर गाँव में प्राथमिक शाला उपलब्ध है।

साक्षारता दरः–

2011 के अनुसार बोरसी, मुरमुंदा, गोढ़ी, सांकरा, ढ़ाबा पंचायत की औसत साक्षरता दर 75.66 प्रति ात थी, जिसमे पुरूष और महिला साक्षरता क्रमशः 85.72 प्रति ात और 65.72 प्रति ात थी। धमधा़ विकासखण्ड में कुल साक्षरता 79393 थी, जिसमें पुरूष और महिला क्रमशः 44699, 34694 थी।

अन्य सुविधाएँ :–धमधा जनपद पंचायत में कृषि उपज मण्डी, यातायात के साधन, सीटी बस, पुलिस थाना, नगर पंचायत कार्यालय, बस स्टाफ, यात्री प्रतिक्षालय, डाकघर, सरकार बैंक, बैंक सेवा, यातायात के साधन नियमित बस सुविधा, पक्की सड़के आदि सुविधाएँ उपलब्ध है।

बाल जनसंख्या धमधा :–

2011 की जनगणना के अनुसार धमधा़ तहसील में 0 से 6 साल की उम्र के 16,494 बच्चे यें। जिनमें से 16,494 पुरूष थे जबकि 16,494 महिलाएँ थीं। शहरी ग्रामीण 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी क्षेत्रों में धमधा तहसील में कुल 1,434 परिवार रहते है, जबकि 1,434 परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे है। इस प्रकार धमधा़ तहसील की कुल जनसंख्या का लगभग 5.2 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहता है जबकि 94.8 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। शहरी क्षेत्र में बच्चों की जनसंख्या 787 है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या 15,707 है।

लिंग अनुपात :–

धमधा तहसील का लिंग अनुपात 1009 है। इस प्रकार प्रत्येक 1000 पुरूषों के लिए धमधा़ तहसील में 1009 महिलाएँ थीं। 2011 की जनगणना के अनुसार बच्चों का लिंग 991 या जो धमधा तहसील के औसत लिंग अनुपात (1009) से कम है।

अध्याय 4

प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण

न्यादर्श परिवार की आयु समुह का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 01

ग्राम	कुल परिवार	आयु समुह			
		15–24	24–54	55–64	65+
गोढ़ी	20	01	17	02	00
ढ़ाबा	20	04	14	01	01
सांकरा	20	02	12	03	03
मुरमुंदा	20	05	12	03	03
बोरसी	20	07	09	02	02
योग	100	19	63	12	06
प्रतिशत	–	19%	63%	12%	06%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वेक्षित न्याद ार्ों के आयु समूह में (25–54 वर्ष) आयु समूह के न्याद ार्ों की संख्या 63% सवार्धिक है तथा 65 वर्ष से अधिक न्याद ार्ों की सबसे कम 6% है तथा शेष उत्तरदाता न्याद ार्ों की आयु समूह में 19% (15–24वर्ष) आयु समूह के तथा 12% (55–64वर्ष) आयु समूह के न्याद ार् है।

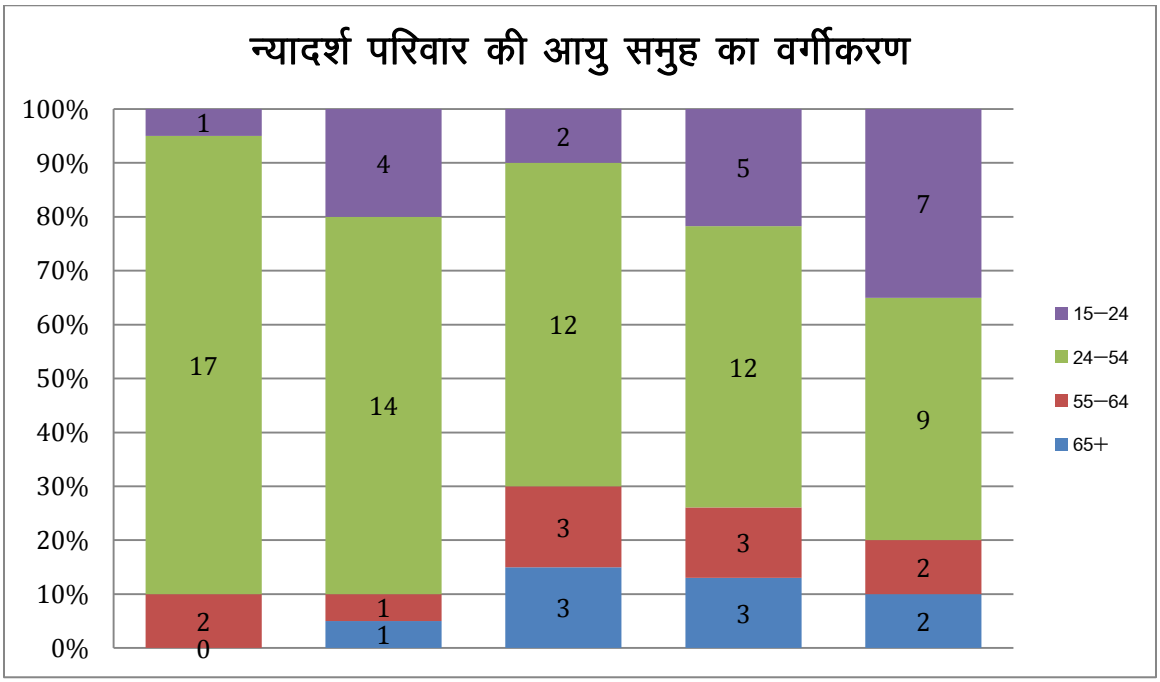

न्यादर्श परिवार की शैक्षणिक स्थिति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 02

ग्राम	कुल परिवार	शैक्षणिक स्थिति		शिक्षा का स्थिति				
		शि.	अशि.	प्राथ.	माध्य.	उ.मा.	स्नातक	स्नातकोत्तर
गोढ़ी	20	18	02	08	04	09	00	02
ढ़ाबा	20	17	03	07	03	06	03	00
सांकरा	20	15	05	09	04	03	00	00
मुरमुंदा	20	17	03	11	03	03	01	00
बोरसी	20	18	02	12	04	08	00	00
योग	100	85	15	47	18	29	04	02
प्रतिशत	–	85%	15%	47%	18%	29%	04%	02%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में न्यादर्श परिवारों की शिक्षा का स्थिति का अध्ययन किया गया है कि चयनित 100 न्यादर्श परिवारों में सर्वाधिक 85% शिक्षित तथा 15% अशिक्षित है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त लोगों की संख्या 47% स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त 02% है, माध्यमिक प्राप्त 18% है उच्च मा. शिक्षा प्राप्त 29% है तथा स्नातक शिक्षा प्राप्त 04% है। इससे ज्ञात होता है कि सर्वाधिक शिक्षा प्राप्त प्राथमिक शिक्षा का है जबकि न्यूनतम शिक्षा प्राप्त स्नातकोत्तर का है।

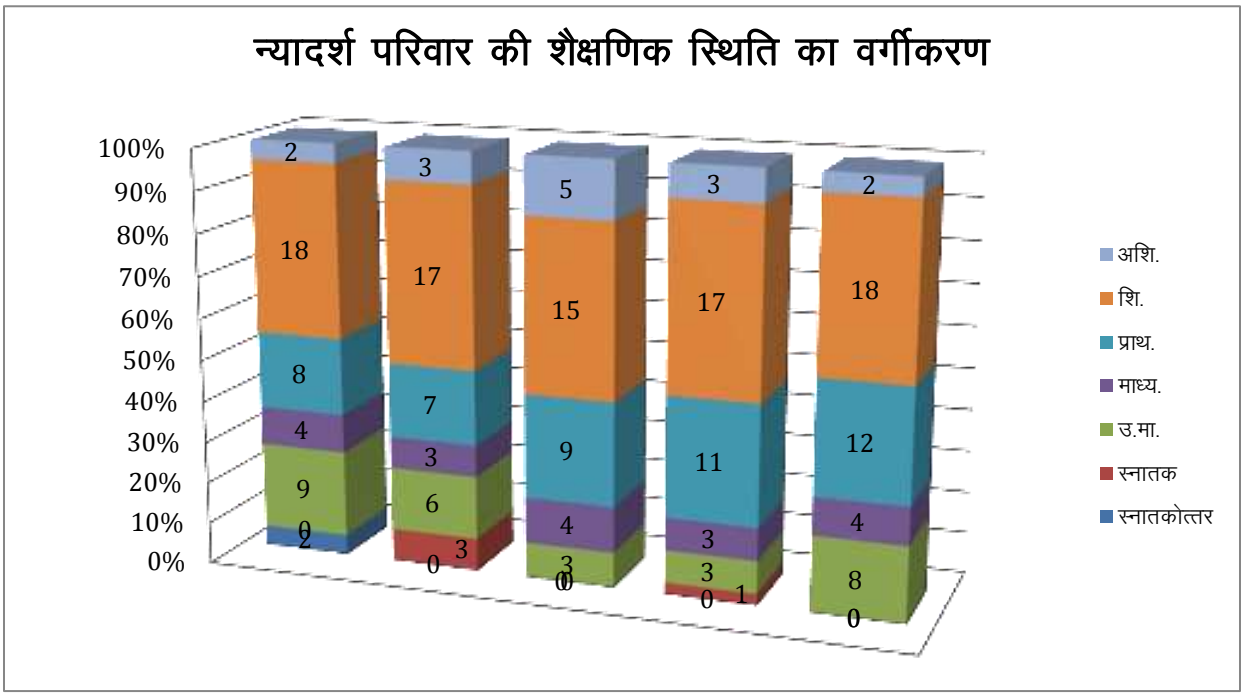

न्यादर्श परिवार की वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 03

ग्राम	कुल परिवार	लिंग			वैवाहिक स्थिति			
		पुरूष	महिला	योग	विवाहित	अविवाहित	विधवा	विधुर
गोढ़ी	20	17	03	20	17	03	00	00
ढ़ाबा	20	14	06	20	16	02	02	00
सांकरा	20	15	05	20	18	02	00	00
मुरमुंदा	20	18	02	20	17	03	01	00
बोरसी	20	18	02	20	16	02	01	00
योग	100	82	18	100	84	12	04	00
प्रतिशत	–	82%	18%	100 %	84%	12%	04%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में चयनित कुल 100 साक्षर परिवारों में पुरूषों की संख्या 82% है तथा महिलाओं की संख्या 18% है। इसमें 84% साक्षर विवाहित है तथा 4% साक्षर विधवा है तथा अविवाहितों साक्षर 12% है।

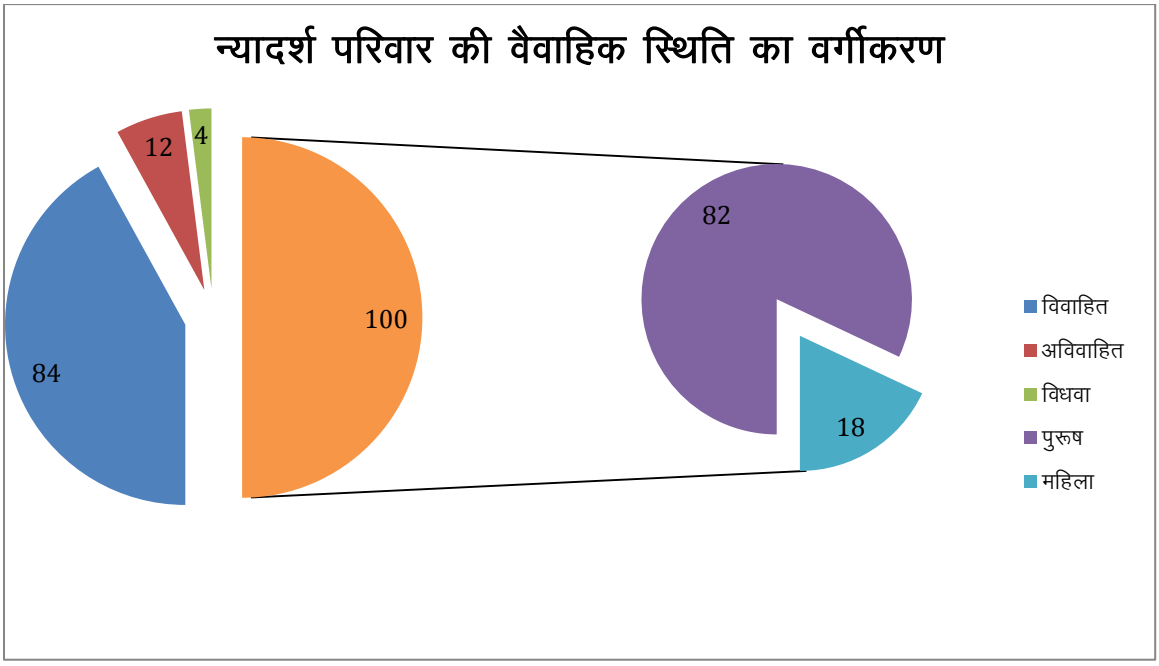

न्यादर्श परिवार की साक्षर कृ ाक का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 04

ग्राम	कुल परिवार	साक्षर कृ ाक वर्ग			
		सीमांत	अर्ध्द मध्यम	मध्यम	उच्च
गोढ़ी	20	18	01	01	00
ढ़ाबा	20	17	03	00	00
सांकरा	20	16	02	02	00
मुरमुंदा	20	18	01	00	01
बेरसी	20	15	03	01	01
योग	100	84	10	04	02
प्रतिशत	–	84%	10%	04%	02%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में चयनित साक्षर कृ ाक परिवारों में सर्वाधिक सीमांत साक्षर कृ ाक परिवार 84% हैं, उच्च साक्षर कृ ाक 02% है, तथा अर्ध्दमध्यम साक्षर कृ ाक 10% है, मध्यम साक्षर कृ ाक 04% है।

सर्वेक्षित परिवारों में सर्वाधिक साक्षर कृ ाक सीमांत श्रेणी के हैं जबकि सबसे कम श्रेणी के कृ ाक उच्च वर्ग के साक्षरों है।

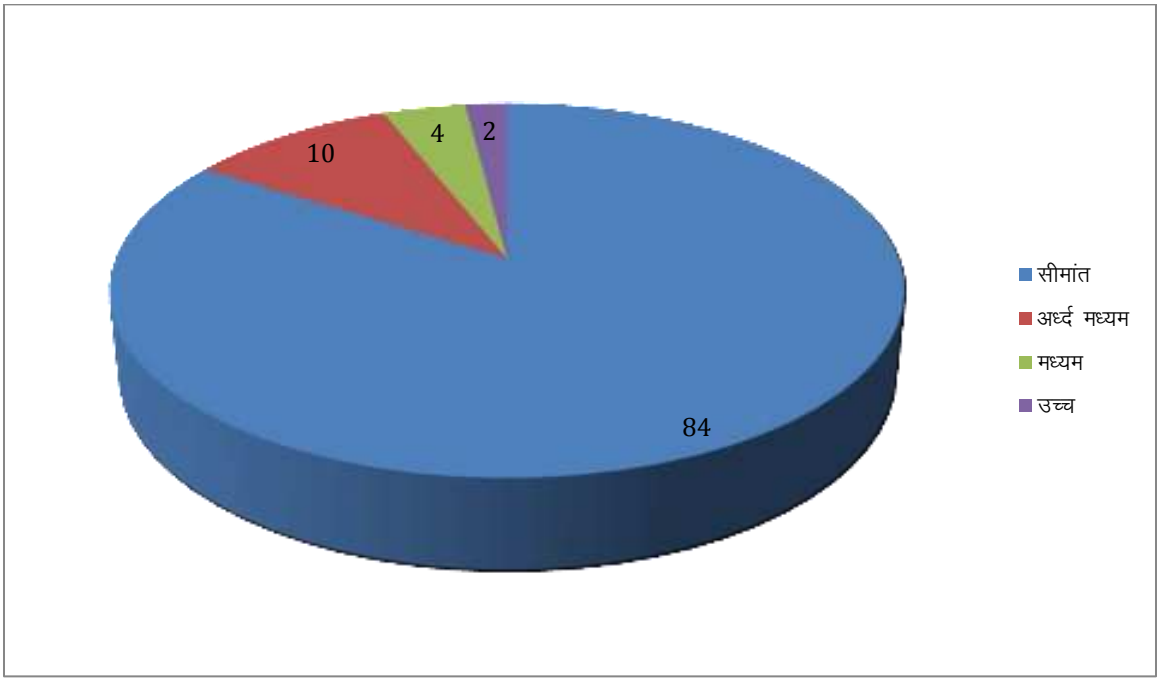

न्यादर्श परिवार की ि ाक्षा स्तर का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 05

ग्राम	कुल परिवार	साक्षर वर्ग		
		परम्परागत	उच्च ि ाक्षित	मध्यम
गोढ़ी	20	00	07	13
ढ़ाबा	20	00	05	15
सांकरा	20	00	11	09
मुरमुंदा	20	00	13	07
बोरसी	20	00	11	09
योग	100	00	47	53
प्रतिशत	–	00%	47%	53%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्तमान में पूर्णतः परम्परागत् तकनीक से कोई भी ि ाक्षा प्राप्त नहीं कर रहे हैं। अधिकांश 53% साक्षर परम्परागत मध्यम एवं आधुनिक मिश्रित पध्दति की ि ाक्षा प्राप्त कर रहे हैं तथा 47% साक्षर परिवार आधुनिक तकनीकी या उच्च ि ाक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

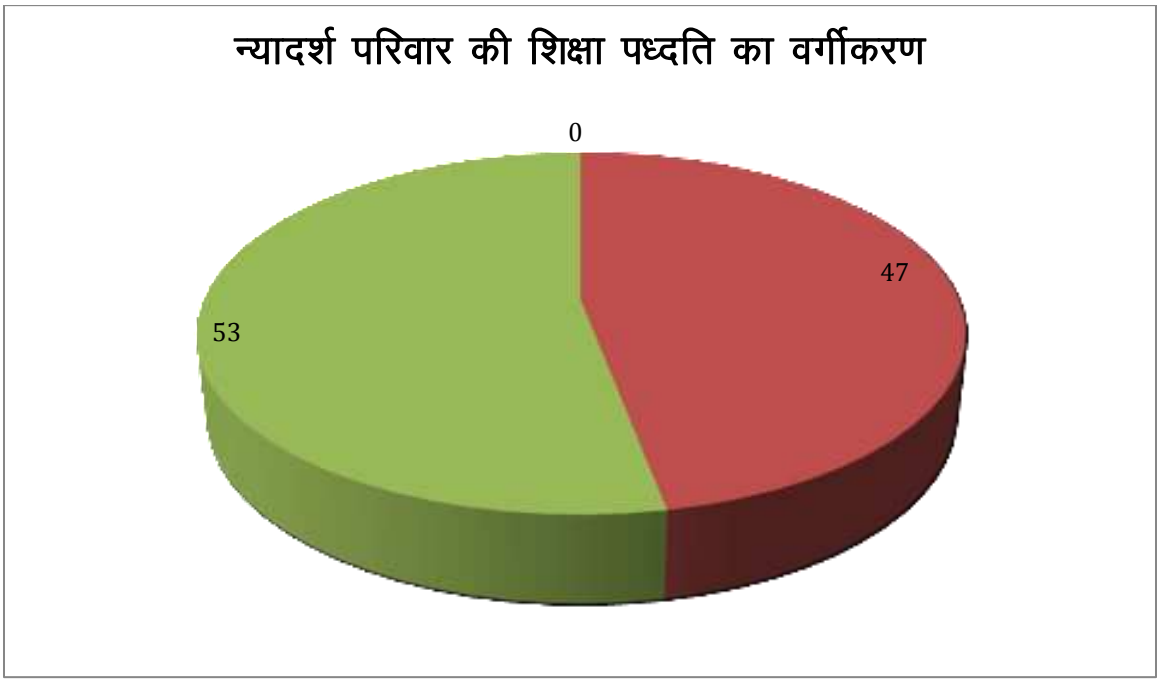

सर्वेक्षित परिवारों के विभिन्न अवस्था वर्गों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 06

ग्राम	कुल परिवार	विभिन्न पारिवारिक अवस्था वर्ग के सदस्य					
		पुरूश	कि ोर	कि ोरी	महिलाएं	बच्चे	अन्य
गोढ़ी	20	12	05	05	11	05	00
ढ़ाबा	20	13	03	03	12	03	00
सांकरा	20	09	01	01	08	01	00
मुरमुंदा	20	08	00	00	05	00	00
बोरसी	20	06	00	00	05	00	00
योग	100	48	09	09	41	09	00
प्रतिशत	–	48%	09%	09%	41%	09%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 07 स्पष्ट है कि चयनित परिवारों में परम्परागत विभिन्न आयु वर्ग के साक्षर लोगों का अध्ययन किया गया है। जिसमें पुरूश 48% , साक्षर कि ोर 09% हैं तथा साक्षर महिलाओं की संख्या 41% है।

सर्वेक्षित परिवारों की ि ाक्षा विशयों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 07

ग्राम	कुल परिवार	फसल चक्र		
		उच्च ि ाक्षा	स्कूली ि ाक्षा	व्यवसाय की ि ाक्षा
गोढ़ी	20	18	02	00
ढ़ाबा	20	17	03	00
सांकरा	20	16	04	00
मुरमुंदा	20	15	05	00
बोरसी	20	16	04	00
योग	100	82	18	00
प्रतिशत	–	82%	18%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल 100% चयनित परिवारों में 82% उच्च ि ाक्षा लेते हैं, जबकि 18% साक्षर स्कूली ि ाक्षा लेते है।

न्यादर्श परिवारों में पारंपरिक ि ाक्षा का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 08

ग्राम	कुल परिवार	पारंपरिक ि ाक्षा	
		सरकारी स्कूल से	निजी स्कूल से
गोढ़ी	20	18	02
ढ़ाबा	20	16	04
सांकरा	20	17	03
मुरमुंदा	20	18	02
बोरसी	20	19	01
योग	100	88	12
प्रतिशत	–	88%	12%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 10 में सर्वेक्षित चयनित कुल 100% परिवारों में 88% द्वारा सरकारी स्कूलों से ि ाक्षा प्राप्त किया गया तथा 12% ने निजी संस्थानों द्वारा प्रदत्त ि ाक्षा प्राप्त किया है।

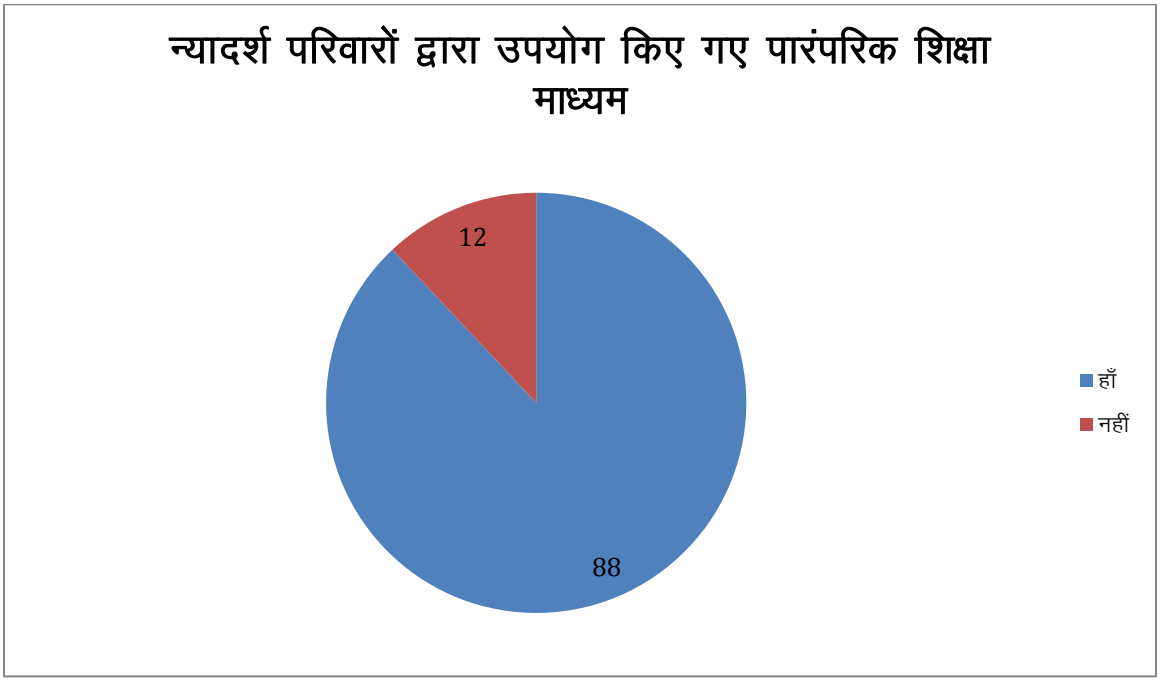

न्यादर्श परिवारों की ि ाक्षा में रूझान का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 09

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा रूझान	
		उच्च ि ाक्षा	स्कूली ि ाक्षा
गोढ़ी	20	03	17
ढ़ाबा	20	02	18
सांकरा	20	05	15
मुरमुंदा	20	03	17
बोरसी	20	04	16
योग	100	17	83
प्रतिशत	–	17%	83%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

प्रस्तुत तालिका में सर्वेक्षित कुल परिवारों में केवल स्कूली ि ाक्षा प्राप्त करने वाले 83% तथा 17% उच्च ि ाक्षा प्राप्त करते हैं यहाँ अध्ययन से देखा गया है कि ज्यादातर साक्षर स्कूल ि ाक्षा ही प्राप्त करते हैं।

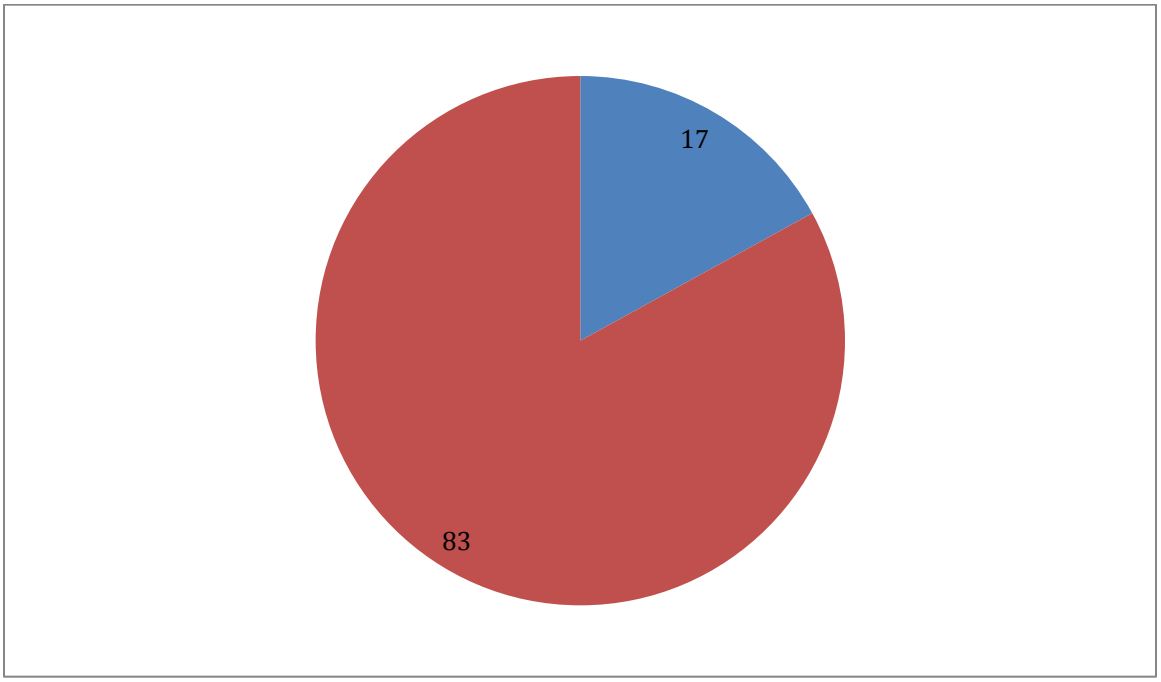

सर्वेक्षित परिवारों की ि ाक्षा के माध्यम का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 10

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा माध्यम		
		हिंदी	अंग्रेजी	दोनों
गोढ़ी	20	18	02	00
ढ़ाबा	20	17	03	00
सांकरा	20	16	04	00
मुरमुंदा	20	15	05	00
बेरसी	20	16	04	00
योग	100	82	18	00
प्रतिशत	–	82%	18%	00

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल 100 चयनित परिवारों में 82% साक्षर हिंदी माध्यम से ि ाक्षा प्राप्त करते हैं। जबकि 18% साक्षर अंग्रेजी माध्यम की ि ाक्षा प्राप्त करते है।

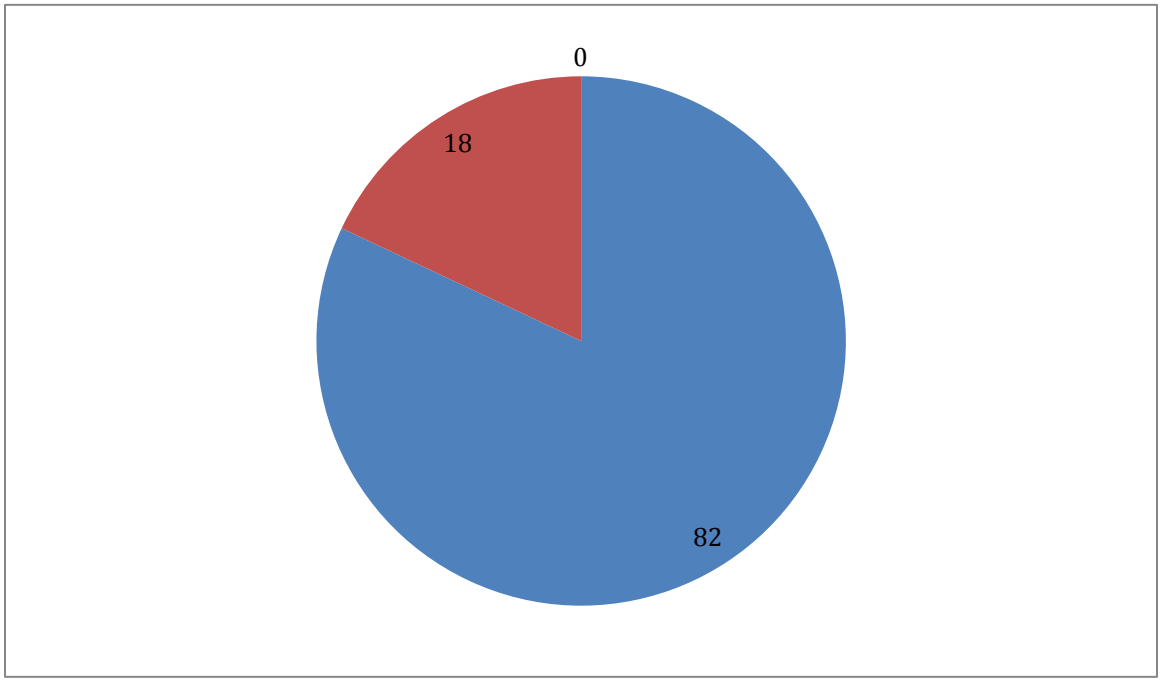

न्यादर्श परिवारों में ि ाक्षा पर सरकारी अनुदान प्राप्ति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 11

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा पर सरकारी अनुदान	
		अनुदान	नही
गोढ़ी	20	18	02
ढ़ाबा	20	16	04
सांकरा	20	17	03
मुरमुंदा	20	18	02
बोरसी	20	19	01
योग	100	88	12
प्रतिशत	–	88%	12%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 10 में सर्वेक्षित चयनित कुल 100 परिवारों में ि ाक्षा पर सरकारी अनुदान का प्रयोग 88% साक्षरों द्वारा किया गया तथा 12% साक्षरों ने सरकारी अनुदान का का प्रयोग नहीं किया गया है अपितु स्ववित्तिय ि ाक्षा प्राप्त किया।

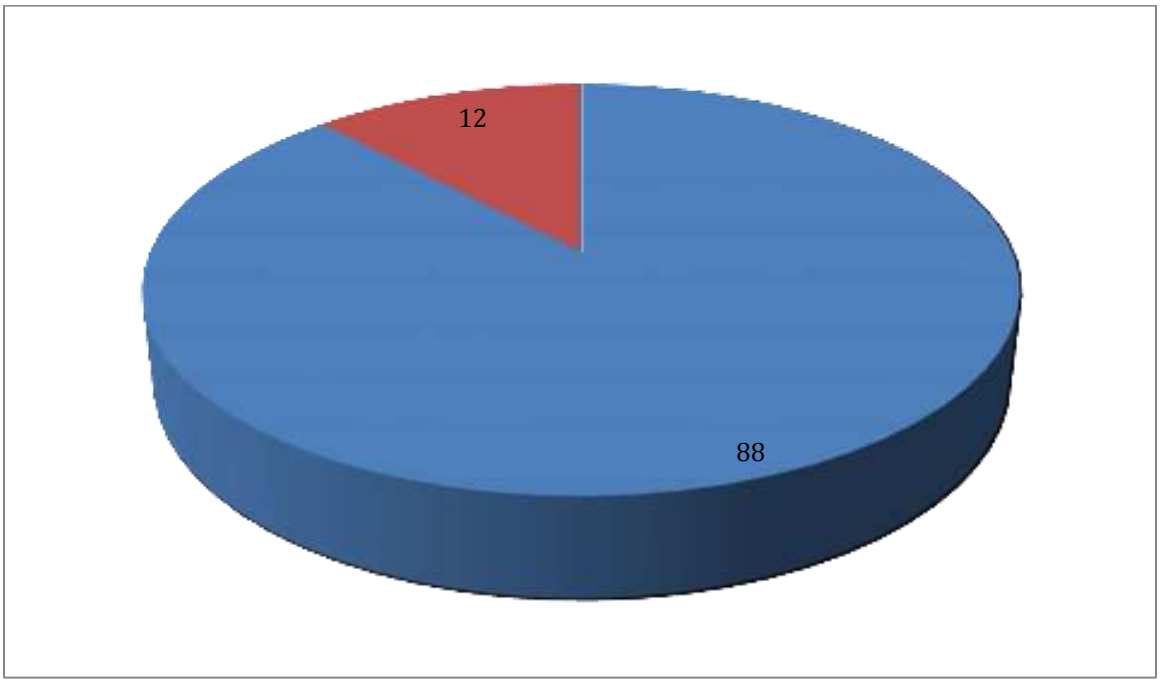

न्यादर्श परिवारों के ि ाक्षा के लिए ऋण का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 12

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा के लिए ऋण				
		हाँ	नही	साहूकार	बैंक	बिचोलिया
गोढ़ी	20	20	00	00	20	00
ढ़ाबा	20	20	00	00	20	00
सांकरा	20	20	00	00	20	00
मुरमुंदा	20	20	00	00	20	00
बोरसी	20	20	00	00	20	00
योग	100	100	00	00	100	00
प्रतिशत	–	100%	00%	00%	100%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका से स्पष्ट है कि कुल सर्वेक्षित परिवारों में 100 साक्षरों परिवार बैंक से ि ाक्षा के लिए ऋण लेते है तथा साहुकार एवं बिचौलियों से 00% ि ाक्षा के लिए ऋण नही लेते है।

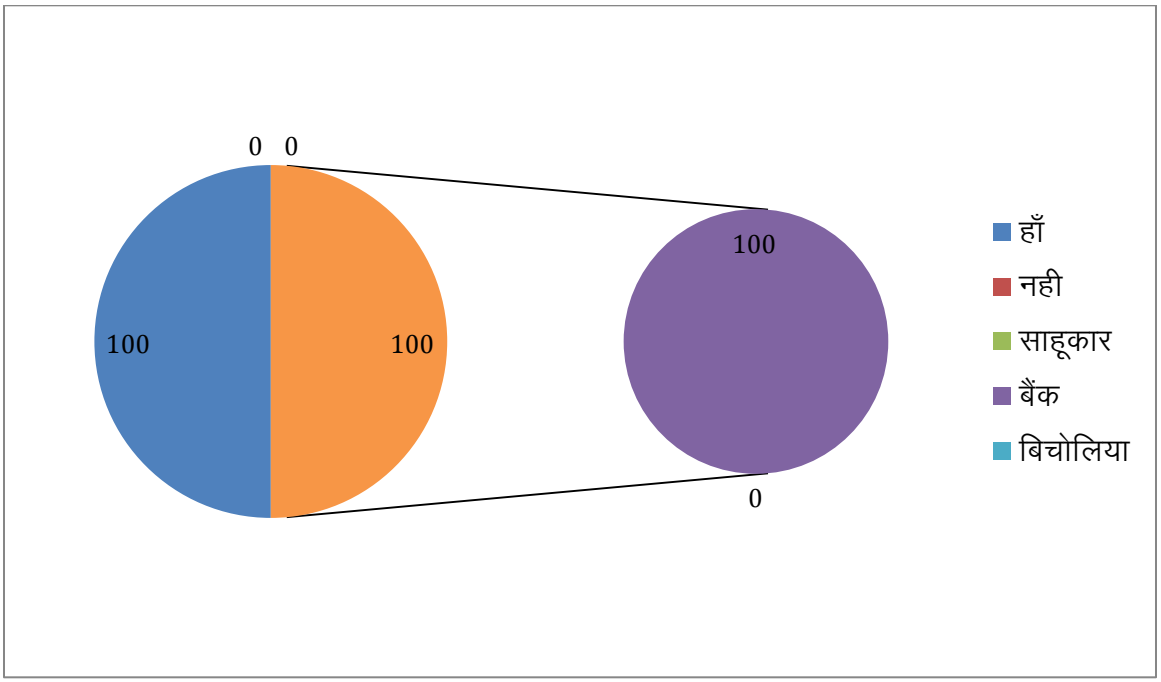

सर्वेक्षित साक्षरों के ि ाक्षा कार्य में सरकारी योजना का लाभ का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 13

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा में सरकारी योजना का लाभ	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
ढ़ाबा	20	16	04
सांकरा	20	19	01
मुरमुंदा	20	20	00
बोरसी	20	17	03
योग	100	90	10
प्रतिशत	–	90%	10%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका से स्पष्ट है कि कुल चयनित परिवारों में 90% साक्षर ि ाक्षा कार्य में सहकारी योजना का लाभ उठाते है तथा 10% साक्षर परिवार ि ाक्षा कार्य में सहकारी योजना का लाभ प्राप्त नही कर पाते है।

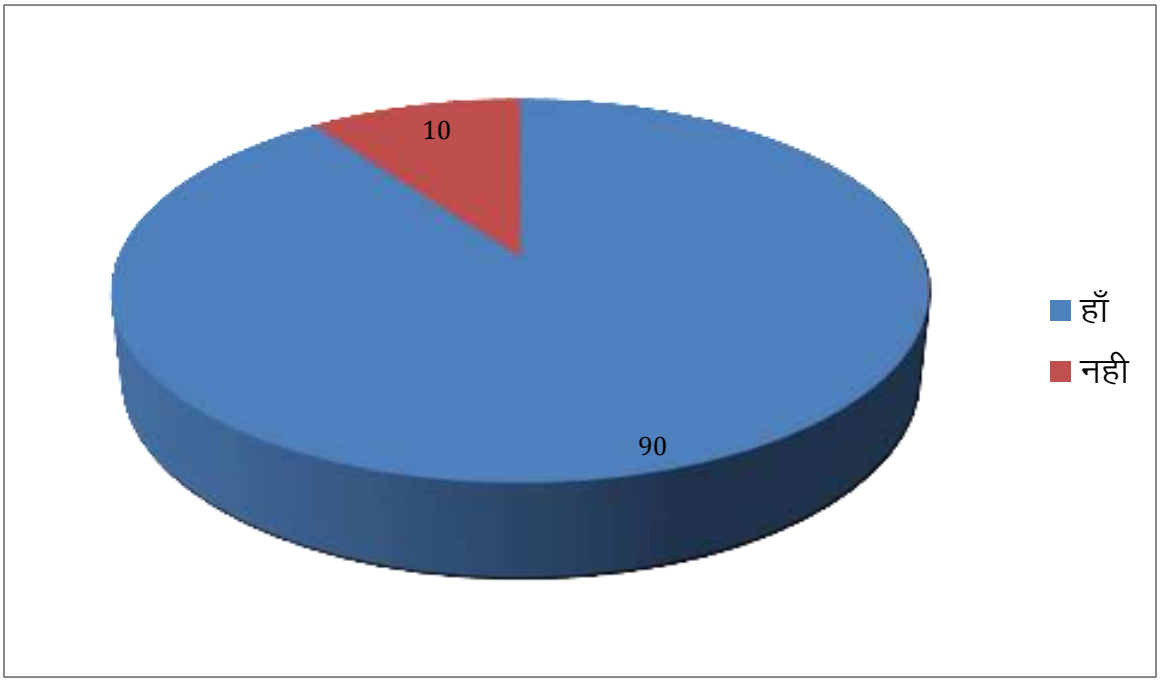

न्यादर्श परिवारों की अि ाक्षा का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 14

ग्राम	कुल परिवार	अि ाक्षा	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	00	20
ढ़ाबा	20	06	14
सांकरा	20	08	12
मुरमुंदा	20	00	20
बोरसी	20	00	20
योग	100	14	86
प्रतिशत	–	14%	86%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में कुल चयनित 100 साक्षरों परिवारों में से 14% परिवारों के पास ि ाक्षा उपलब्ध नही है तथा 86% साक्षरों के पास ि ाक्षा उपलब्ध है।

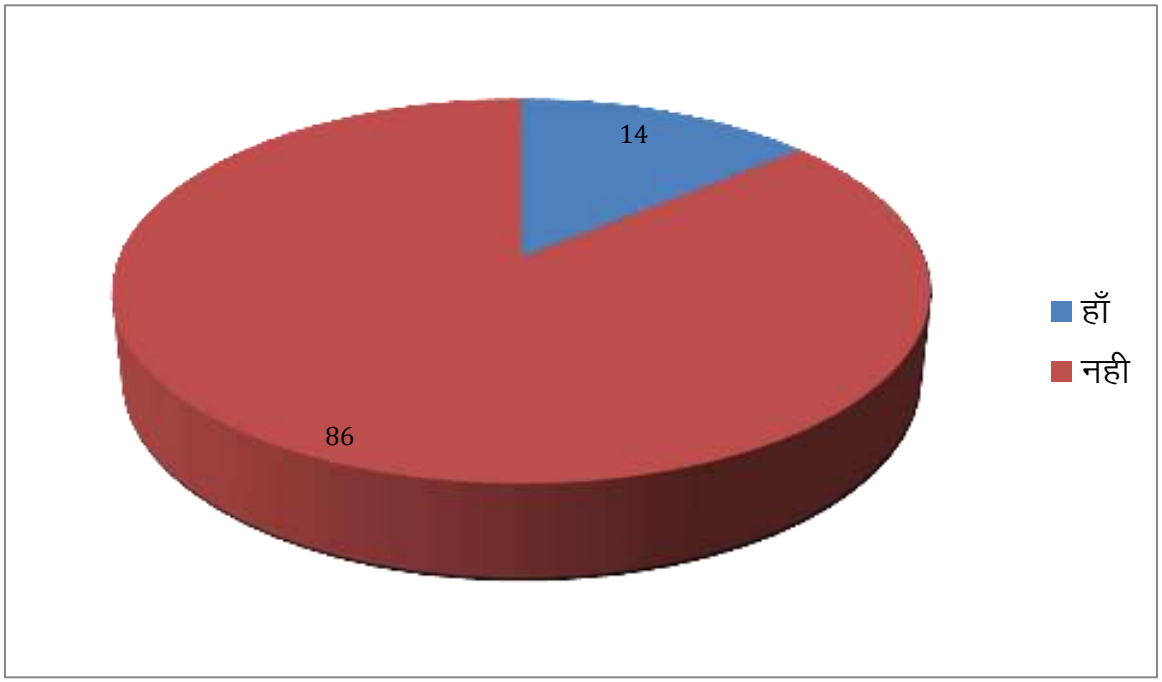

न्यादर्श परिवारों की ि ाक्षागत आय से परिवार का आवश्यकता की पूर्ति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 15

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षागत आय से परिवार का आवश्यकता की पूर्ति	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	11	09
ढ़ाबा	20	07	13
संकरा	20	12	08
मुरमुंदा	20	07	13
बोरसी	20	06	14
योग	100	43	57
प्रतिशत	–	43%	57%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में न्यादर्श साक्षरों परिवारों की ि ाक्षागत आय से परिवार की आवश्यकता की पूर्ति का अध्ययन किया गया है। जिसमें 43% ि ाक्षागत आय से आवश्यकता की पूर्ति हो पाती है तथा 57% साक्षर परिवारों की आवश्यकता की पूर्ति नही हो पाती है।

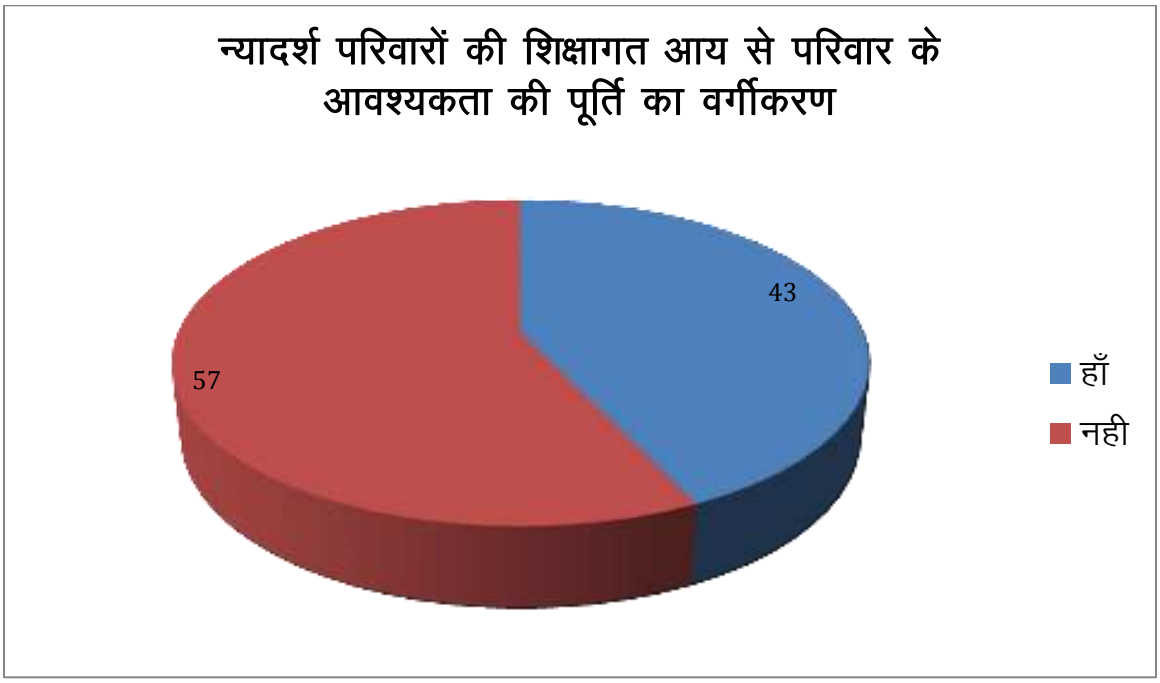

न्यादर्श परिवारों की ि ाक्षा कार्य संबंधी सलाह का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 16

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा संबंधी वि ोशज्ञ सलाह	
		नही	हां
गोढ़ी	20	18	02
ढ़ाबा	20	16	04
संकरा	20	17	03
मुरमुंदा	20	15	05
बोरसी	20	18	02
योग	100	84	16
प्रतिशत	–	84%	16%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में ि ाक्षा कार्य संबंधी सलाह 84% न्याद र्ा परिवार सलाह नही लेते है जबकि 16% साक्षर परिवार ि ाक्षा कार्य संबंधी सलाह लेते है। अध्ययन से ज्ञात होता 84% साक्षर परिवार जानकारों से सलाह नही लेते है तथा 16% साक्षर परिवार जानकारों से सलाह लेते है।

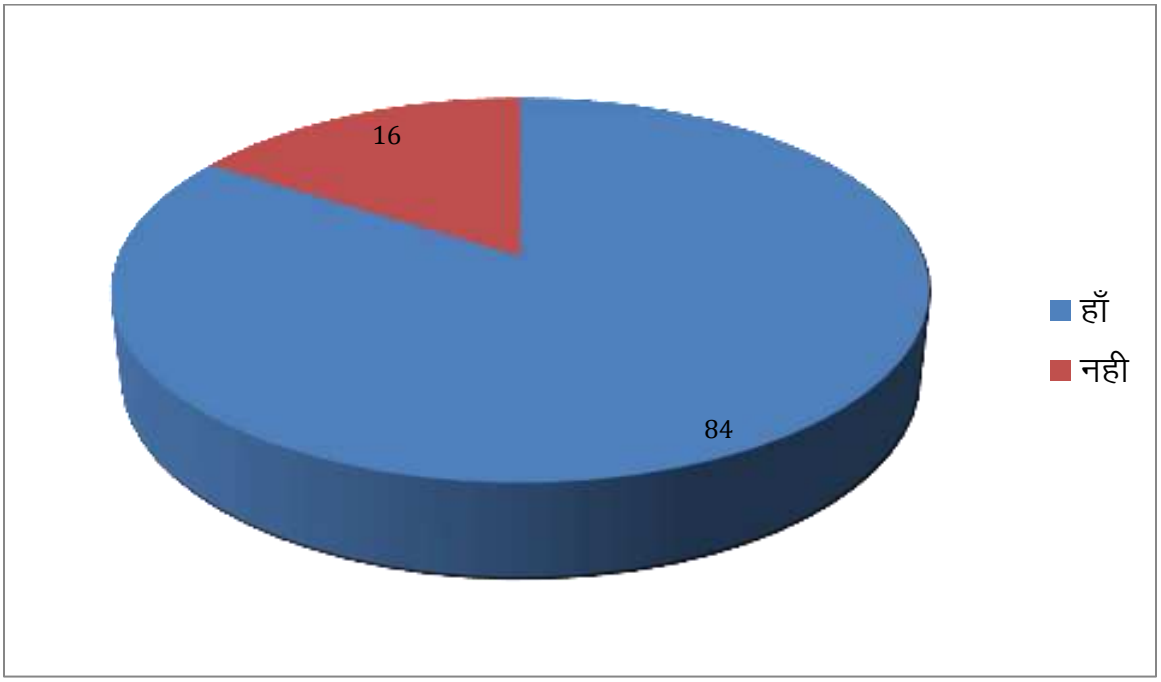

न्यादर्श परिवारों द्वारा अध्ययन केन्द्रो में ि ाक्षा गुणवत्ता परीक्षण का वर्गीकरण
तालिका क्रमांक– 17

ग्राम	कुल परिवार	ि ाक्षा गुणवत्ता परीक्षण	
		नही	हां
गोढ़ी	20	12	08
ढ़ाबा	20	18	02
सांकरा	20	16	04
मुरमुंदा	20	17	03
बोरसी	20	20	00
योग	100	83	17
प्रतिशत	–	83%	17%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में सर्वेक्षित परिवारों म अध्ययन केन्द्रो में ि ाक्षा गुणवत्ता परीक्षण 83% साक्षर परिवार द्वारा नही किया जाता है तथा 17% साक्षर परिवार अध्ययन केन्द्रो में ि ाक्षा गुणवत्ता परीक्षण करते हैं।

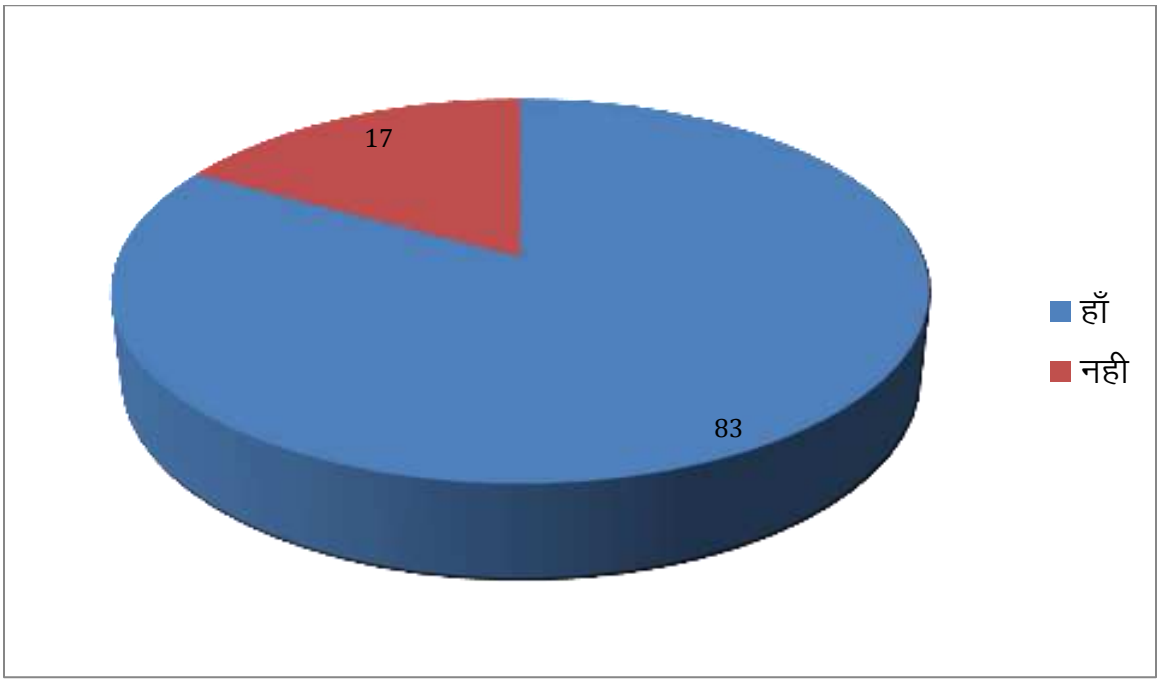

अध्याय–5
सारांश, सुझाव एवं निष्कर्ष

परिणामः– दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में ि ाक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता'' विशयक वि ि ाश्ट अध्ययन की इस प्रयोजनात्मक मुल्यांकन के अंतर्गत आंकड़े तथा सूचना संग्रहण की साक्षात्कार प्रविधि द्वारा धमधा विकासखण्ड के परियाजनात्मक ग्रामों से जुटाए गए आंकडों के प्रति ात विधि द्वारा गणना करने पर प्राप्त परिणाम अध्ययन पूर्व निर्धारित किए गए अपेक्षित परिणामों का समर्थन करते हैं। इस अध्ययन में कुछ निर्धारित मानकों के अंतर्गत आंकड़े जुटाए गए जिनमें मानदंडों का आधार समााज के विभिन्न आयु समूह, उनकी भौक्षणिक स्थिति, ि ाक्षा प्राप्त सफल कृशक, व्यवसायी, रोजगार प्राप्त वर्ग, न्याद ि परिवारों की ि ाक्षा का स्तर, विभिन्न अवस्था वर्ग समूह की ि ाक्षा का स्तर, सामान्य ि ाक्षा एवं मेडिकल या तकनीकी कौ ाल की ि ाक्षा, माध्यम आधारित ि ाक्षा, परम्परागत ि ाक्षा, विभिन्न आय वर्ग एवं ि ाक्षा के प्रति रूझान, अनुदान प्राप्त ि ाक्षा तथा जोखिम आधारित ि ाक्षा इत्यादि बिंदुओं पर आंकडों का विस्तृत वि लेशण करने पर प्राप्त होने वाले परिणाम इस तथ्य को उजागर करतें हैं कि न्याद ि क्षेत्र मध्यम वर्गीय कृशक बाहुल्य क्षेत्र है, जहां मिश्रित जाति समूह के लोग साझे की व्यवस्था में अजीविका बसर करते हैं। यहां पर अधिकां ा लोग पुरातनवादी परम्पराओं से जुड़े हैं तथा इन्ही कारणों से ि ाक्षा के प्रति रूझान की स्पश्ट कमी है। कृशक परिवार होने के कारण प्राप्त आय की संतुश्टि तथा भूमि की जिम्मेदारी भी अगली पीढ़ी के उपर भीघ्र ही अभिसरित हो जाती है जिसके चलते दीर्घ अवधि की ि ाक्षा प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है। साथ ही तकनीकी के आधुनिक विकास के परिणामस्वरूप मनोरंजन के साधनों एवं जीवनोपयोगी तकनीकी उपकरणों का दक्षता एवं समझ के अभाव में किए जाने वाले अति–उपयोग का भी ि ाक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता में अहम योगदान है। उपरोक्त परिणामों के इतर इन्ही न्याद ि क्षेत्रों में कुछ संघर्श ाील परिवार भी उपस्थित हैं जो ि ाक्षा की महत्ता को समझते हुए पर्याप्त जोखिम लेते हुए निरंतर प्रयासरत हैं।

सारांश–

प्रस्तुत अध्ययन में ''दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में ि ाक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता'' का अध्ययन किया गया है, जिसे अध्ययन की दृष्टि से पाँच भागों में विभक्त किया गया है।

''किसी भी राश्ट्र की उन्नति एवं सभ्य समाज के निर्माण में उस राश्ट की ि ाक्षा व्यवस्था का अहम योगदान होता है'' इस बात को ध्यान में रखते हुए ि ाक्षा को भारत में प्रोत्साहन देना अत्यंत आव यक है। स्वतंत्रता से पूर्व दे ा में ि ाक्षा व्यवस्था के लिए अनुकूल परिस्थितियां नही थी। फिर भी इस क्षेत्र में किए गए प्रयास औपनिवे ि ाक भाासन की प्र ाासनिक तथा व्यापारिक आव यकताओं से प्रेरित थे और यहां ि ाक्षा के लिए अनुकूल परिस्थितियां न बन सकीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के प चात भारतीय राजनीतिज्ञों ने इस विशय को प्राथमिकता के तौर पर स्वीकार किया तथा ि ाक्षा को आधुनिक स्तर तक विकसित करने के लिए निरंतर प्रयास किए गए।

तमाम प्रयासों के बावजूद सरकारी स्कूलों में नामांकन में आई कमी का सीधा–सा मतलब है कि अभिभवाक अब अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए सरकारी स्कूलों से ज्यादा निजी स्कूलों को तरजीह दे रहे हैं। दरअसल, सरकारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में आ रही लगातार गिरावट से अभिभावकों को यह एहसास होने लगा है कि यहां उनके बच्चों का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस दौर में जहां निजी नौकरियां ही एकमात्र विकल्प हैं, ऐसे में यदि उनके बच्चों को आगे रहना है तो सरकारी नहीं बल्कि पब्लिक स्कूल ही उचित होगा। उन्हें इस बात का यकीन है कि प्राइवेट कंपनियों की कार्य–संस्कृति और उस वातावरण को तैयार करने की क्षमता पब्लिक स्कूलों में होती है। यह कार्य–संस्कृति वास्तव में अंग्रेजी भाषा से जुड़ी है।

अभिभावकों को लगता है कि सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी केवल एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, वह भी नाममात्र के लिए जबकि पब्लिक स्कूलों में हिंदी विषय को छोड़ कर अन्य सभी विषय न केवल अंग्रेजी में पढ़ाए जाते हैं। बल्कि स्कूल परिसर में छात्रों को अंग्रेजी भाषा में ही बात करने के लिए प्रेरित भी किया जाता है। अंग्रेजी भाषा से स्कूली पढ़ाई करने वाले बच्चों को भविष्य में मेडिकल, इंजीनियरिंग कानून प्रबंधन और मीडिया जैसे पेशेवर क्षेत्रों की पढ़ाई कराने वाले देश के उच्च शिक्षण संस्थाओं में आसानी से प्रवेश मिल सकता है। जबकि सरकारी स्कूलों में हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले बच्चों को इन्हीं क्षेत्रों में प्रवेश पाना मुश्किल हो जाता है।

विगत कुछ वर्शों से यह एक समस्या के रूप में देखने को मिला है कि बच्चों में पढाई के प्रति उदासीनता का वातावरण है। वास्तविक कारणों का रूख करें तो कई जिम्मेदार कारण मिलेंगे। वर्तमान परिवारों की बदलती जीवन भौली तथा व्यस्तता के कारण अभिभावकों द्वारा बच्चों को पर्याप्त समय न दे पाना, बच्चों को सामाजिक वातावण से दूर रखना तथा मनोरंजन के आधुनिक साधनों का अनाव यक उपयोग ि ाक्षा के प्रति बच्चों में कम होते रूझान का एक कारण है।

सरकारी स्कूलों की खराब होती गुणवत्ता के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों की उदासीनता और लापरवाही जिम्मेदार है। अधिकारी और शिक्षक सरकारी खजाने से वेतन और अन्य सुविधाएं तो प्राप्त करते हैं, लेकिन अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में पढ़ाते हैं। जरूरत है 2015 में दिए गए इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले को सख्ती से लागू करने की, जिसमें कोर्ट ने सभी नौकरशाहों और सरकारी कर्मचारियों के लिए उनके बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़वाना अनिवार्य किया था। जब सरकारी अफसरों और कर्मचारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ेंगे तभी इन स्कूलों की हालत सुधर पाएगी।

सुझाव–

1 बच्चों में शिक्षा को लेकर तुलनात्मक मुल्यांकन कभी भी न करें।

2 माता–पिता अपने बच्चों को अधिक–से–अधिक समय दें।

3 बच्चों की असफलता पर गुस्सा ना करें और न ही उन्हें किसी प्रकार का लालच दें।

4 बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार रखें।

5 अपने बच्चों के मित्रों से मिलें उन्हें समझें और चीजों को समझाएं।

6 समय–समय पर ट्यूशन कोचिंग और बच्चे की पढ़ाई के अतिरिक्त उसके मोबाइल फोन की भी जांच करें और अच्छे बुरे की जानकारी देकर प्यार से समझाएं।

7 बच्चों की जीत पर उन्हें उनके मांग के मुताबिक उन्हें तुरंत चीजें मुहैया करवाकर पल्ला झाड़ लेना भी ठीक नहीं होता।

8 बच्चों को गलती करने पर भी सच बोलने के लिए प्रेरित करना गलतियों पर सजा न देकर समझाएं।

9 हमारे देश में शिक्षा की जो पद्धति अपनाई जाती हैं वह प्रयोगात्मक न होकर रटने वाले होते हैं उसमें सुधार करना चाहिए।

10 परिवार के सदस्यों द्वारा बच्चों को नैतिक व मूल्यवान शिक्षा देनी चाहिए जिससे बच्चों में

पढ़ाई के प्रति रुचि उत्पन्न हो।

11 विगत 2 वर्षों में मोबाइल फोन लैपटॉप जैसे डिवाइस ने छोटे बच्चों में टेक्नोलॉजी की अधिकता और उपयोगिता को बढ़ा दिया है इससे बच्चों को थोड़ा दूर रखना चाहिए।

निष्कर्श –

प्रत्यके राश्ट्र के सर्वांगीण विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा की होती है। कोई भी प्रदेश इसकी अनदेखी करके उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता है। स्कूलों व कॉलेजों में दी जाने वाली गुणवत्ता युक्त शिक्षा बच्चों व युवाओं में बेहतर व्यवहार, कौ ाल, तथा व्यवहार का निर्माण करेगी जिससे प्रदेश के विकास की नींव उतनी ही मजबूत होगी। अच्छी शिक्षा के लिए आधारभूत ढांचे के साथ ही यह भी जरूरी है कि शिक्षकों को समय पर वेतन भत्तों के अलावा आव यक प्र ि ाक्षण उपलब्ध कराया जाना चाहिए जिससे ि ाक्षा में तकनीकी एवं नवाचार प्रयोगों का पुश्ट लाभ मिलता रहे।

सरकारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में लगातार गिरावट आने का बड़ा कारण शिक्षकों की कमी भी है। देशभर में सरकारी स्कूलों में तकरीबन साठ लाख शिक्षकों के पद स्वीकृत हैं, लेकिन अलग–अलग स्तरों पर जारी किए गए सरकारी आंकड़ों और कई संस्थाओं के शोध–सर्वे में यह बात सामनेलाख शिक्षकों के पद स्वीकृत हैं लेकिन अलग–अलग स्तरों पर जारी किए गए सरकारी आंकड़ों और कई संस्थाओं के शोध–सर्वे में यह बात सामने आई है कि इस वक्त देशभर में सरकारी स्कूलों में शिक्षकों के लगभग दस लाख पद खाली हैं। इनमें अकेले नौ लाख पद प्राथमिक स्कूलों में खाली हैं। प्राथमिक स्तर पर सबसे ज्यादा दो लाख चौबीस हजार से ज्यादा पद उत्तर प्रदेश में खालीहैं। इसी तरह बिहार में दो लाख से ज्यादा प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के पद खाली हैं। पश्चिम बंगाल और झारखंड के प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में भी शिक्षकों के औसतन एक तिहाई पद खाली हैं।

इसके बाद मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ का नंबर आता है, जहां स्थिति कुछ बेहतर है लेकिन इसे भी संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है। इसके विपरीत गोवा, ओड़ीशा और सिक्किम में प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों का कोई पद खाली नहीं है। सिक्किम देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के शत–फीसद पद भरे हुए हैं। जबकि माध्यमिक स्तर पर देश में शिक्षकों की सबसे ज्यादा कमी झारखंड में है। बिहार में भी माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के स्वीकृत सत्रह हजार से अधिक पद खाली हैं। देश के सबसे

अशांत राज्य जम्मू–कश्मीर में भी इक्कीस हजार से अधिक माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की जगह खाली है।

समस्या केवल शिक्षकों की कमी की नहीं, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी की भी है। सेंटर फॉर बजट एंड गवर्नेंस अकाउंटबिलिटी (सीबीजीए) और चाइल्ड राइट एंड यू (क्राई) के एक शोध के अनुसार योग्य शिक्षकों की कमी देश के लगभग सभी राज्यों में है। समूचे देश में शिक्षक–छात्र अनुपात, शिक्षकों की संख्या और उनके प्रशिक्षण के मामले में बिहार की स्थिति सबसे खराब है, जहां खाली पड़े पदों को भरने के लिए अतिथि शिक्षकों के नाम पर बड़ी संख्या में अप्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती कर दी गई। बिहार के प्राथमिक स्कूलों में अड़तीस फीसद से ज्यादा अध्यापक प्रशिक्षित नहीं हैं, जबकि माध्यमिक स्तर पर ऐसे शिक्षकों की संख्या पैंतीस फीसद है। दूसरे स्थान पर पश्चिम बंगाल आता है जहां प्राथमिक स्तर पर 31.4 और माध्यमिक स्तर पर 23.9 फीसद शिक्षक प्रशिक्षित नहीं हैं।

सरकारी स्कूलों की खराब होती गुणवत्ता के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों की उदासीनता और लापरवाही जिम्मेदार है। अधिकारी और शिक्षक सरकारी खजाने से वेतन और अन्य सुविधाएं तो प्राप्त करते हैं, लेकिन अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में पढ़ाते हैं। जरूरत है 2015 में दिए गए इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले को सख्ती से लागू करने की, जिसमें कोर्ट ने सभी नौकरशाहों और सरकारी कर्मचारियों के लिए उनके बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़वाना अनिवार्य किया था। जब सरकारी अफसरों और कर्मचारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ेंगे तभी इन स्कूलों की हालत सुधर पाएगी।

शिक्षा हमें यह तर्क करने में मदद करती है कि क्या सही है और क्या गलत। शिक्षा से मनुष्य के विचारों में संतुलन और स्थिरता आती है। शिक्षा से हमारा धैर्य, चिंतन–मनन और संकल्प की शक्ति बढ़ती है। शिक्षा से हम गरीबी और अज्ञानता को मिटा सकते हैं और शिक्षा से ही हम अपने आस–पास शांति और भाई–चारे का माहौल बना सकते हैं। इसलिए स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ नागरिक के निर्माण के लिए समाज के अंतिम पंक्ति तक ि ाक्षा के पहुंच को

संदर्भ ग्रंथ सुची–

1. चौबे प्रसाद सरयू, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा दशम संशोधित संस्करण 2009
2. अस्थाना विपिन एवं निधि अग्रवाल पब्लिकेशन द्वितीय संस्करण 2015.

3. बक्शी एन.एस. शिक्षा दर्शन प्रेरणा प्रकाशन 2009.

4. पांडे आर. एस. ''भारतीय शिक्षा'' चिंता एवं मुद्दे 2012.

5. यागी जी एस डी. एवं पाठक पी डी 1985, ''भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं '',आगरा विनोद पुस्तक मंदिर.

6. वास्तव नारायण गोपाल शिक्षा के प्रति युवाओं में बढ़ती उदासीनता 1436 सीतापुर रोड.

7. गोपाल उषा, शिक्षा के सिद्धांत, स्पोर्ट्स पब्लिकेशन ,प्रथम संस्करण 2006.

8. गुप्ता यू. सी., खेल मनोविज्ञान और शारीरिक शिक्षा के समाजिक, खेल साहित्य केंद्र, भारत में प्रकाशित 2008.

9. मिश्रा महेंद्र कुमार, शिक्षा सिद्धांत एवं आधुनिक भारत की शिक्षा,यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा.)लिमिटेड.

10. बिहारीलाल विश्वनाथ एवं त्रिपाठी नरेश चंद्र,''शिक्षा के नूतन आयाम'', श्री विनोद पुस्तक मंदिर– आगरा–2, 2009.

11. त्रिपाठी मधुसूदन,''आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा'', ओमेगा पब्लिकेशंस नई दिल्ली, 2009

परिि ाश्टः–

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

अछोटी (दुर्ग), दिनांक 23/12/21

सां. ए. / 2021 / क्रमांक 3 सं. (A.)

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–ढाबा,

विषय :– ग्राम– ढाबा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 23.12.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत–ढाबा
वि.ख. धमधा जि. दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Registered Office : LIG - II / 148, Sector - 2, Pt. Dindayal Upadhyay Nagar, Raipur (Chhattisgarh) 492 010

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2021/क्रमांक 364(13) — अछोटी (दुर्ग), दिनांक 17/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–मुरमुंदा,

विषय :– ग्राम– मुरमुंदा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD) दिनांक 17.12.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत मुरमुंदा
वि.ख.धमधा, जि.-दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

Registered Office : LIG - II / 148, Sector - 2, Pt. Dindayal Upadhyay Nagar, Raipur (Chhattisgarh) 492 010

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2021/क्रमांक 365(A)   अछोटी (दुर्ग), दिनांक 20/12/21

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–बोरसी,

विषय :– ग्राम– बोरसी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के प्रति बढ़ते उदासीनता विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD) दिनांक 20.12.2021 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत–बोरसी
वि.खं. धमधा जि.दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

ACHHOTI (MURMUNDA), DURG (C.G.)

शिक्षा के प्रति बढ़ती उदासीनता

धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत

जिला–दुर्ग (छ.ग)

व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसूची

(आपके द्वारा दी गई जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जाएगी। इसका उपयोग केवल लघु शोध कार्य हेतु किया जाएगा।)

(अ) सामान्य जानकारी

न्यादर्श क्र. ..... ग्राम .. गोड़ही ..... विकासखण्ड – धमधा

1. उत्तरदाता का नाम ..... 2. पिता/पति का नाम .....
3. आयु ..... (वर्ष में) 4. लिंग– पुरूष / महिला / अन्य
5. वैवाहिक स्थिति– विवाहित / अविवाहित / विधवा / विदुर / परित्यक्ता
6. शैक्षणिक स्थिति – शिक्षित / अशिक्षित

(ब) पारिवारिक विवरण

क्र.	सदस्य का नाम	लिंग	मुखिया से संबंध	आयु (वर्ष में)	शैक्षणिक स्थिति	वैवाहिक स्थिति	व्यवसाय	मासिक आय (रू. में)
1.								
2.								
3.								
4.								
5.								
6.								
7.								
8.								
9.								

10.								
11.								
12.								

(स) शिक्षण संबंधी जानकारी

1. परिवार का प्रकार – संयुक्त/एकल

2. शिक्षा का स्तर – प्राथमिक/माध्य./उच्च माध्य./उच्चतर माध्य./स्नातक/स्नातकोत्तर/तकनीकी शिक्षा/अन्य

3. आपके घर की महिलाएं शिक्षित हैं– हां/नहीं

4. आय का साधन क्या है .....

5. कितने लोग सरकारी नौकरी में हैं .....

6. शिक्षा की सरकारी योजना का लाभ उठाया जा रहा है हां/नहीं

7. क्या आपके यहां कोई सिविल सर्विस सेवा की तैयारी कर रहे हैं हां/नहीं

8. आपके घर में कोई विद्यार्थी नवोदय/प्रयास विद्यालय में चयनित हुए हैं हां/नही

दिनांक – हस्ताक्षर

WELCOME
GPS Map Camera
Godhi, Chhattisgarh, India
8FGQ+97H, Godhi, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.325869°
Long 81.486238°
08/01/22 12:25 PM
Google

ग्राम पंचायत मुरमुंदा
जनपद पंचायत - धमधा, जिला - दुर्ग (छ.ग.)
स्वागतम्

Durg, Chhattisgarh, India
Unnamed Road, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.323817°
Long 81.481851°
16/12/21 02:16 PM
Google

Durg, Chhattisgarh, India
Unnamed Road, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.322443°
Long 81.480612°
16/12/21 01:43 PM
Google

ग्राम पंचायत मुरमुंडा
Murmunda, Chhattisgarh, India
8F57+7J5, Murmunda, Chhattisgarh 490036, India
Lat 21.308098°
Long 81.463823°
14/03/22 02:22 PM
Murmunda
Google

परियोजना निदे ाक
डॉ. आभा दूबे
(निर्दे ाक एवं सहा. प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहायक प्राध्यापक)

मार्गद ाक
सुश्री ममता ध्रुव (सहायक प्राध्यापक)

भोधकर्ता
विद्यार्थीगण बीएड. एवं बीए. बीएड. (द्वितीय वर्श)

भोध संस्थान
ि ाक्षा विभाग, सांदीपनी एकेडमी,
अछोटी (मुरमुंदा), दुर्ग (छत्तीसगढ़)

धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सत्र–2021–22

SANDIPANI ACADEMY

निर्देशक
श्री महेन्द्र चौबे

परियोजना निदेशक
डॉ. आभा दूबे
(Advisor)
(सहायक प्राध्यापक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहायक प्राध्यापक)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रूव
(सहायक प्राध्यापक)

शोधकर्ता
विद्यार्थीगण
बीए. बीएड. (द्वितीय वर्ष)

शोध संस्थान
सांदीपनी एकेडमी, ग्राम–अछोटी, पोस्ट–मुरमुंदा
व्हाया–धमधा जिला–दुर्ग(छत्तीसगढ़)
फैक्स–07821–270220
मोबाइल नं.919300008230

SANDIPANI ACADEMY ACHHOTI (MURMUNDA) DISTT.-DURG (C.G.)

आभार

सांदीपनी एकेडमी अछोटी मुरमुंदा दुर्ग के तत्वावधान में "दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड के अंतर्गत नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर लघु–शोध प्रबंध लेखन कार्य में कुशल मार्गदर्शन हेतु संस्था प्रमुख श्री महेन्द्र चौबे का विशेष आभार। इस परियोजना कार्य के लिए बतौर निर्देशक अपना योगदान देने के लिए शिक्षा विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. संध्या पुजारी(सह संयोजक) का हार्दिक आभार तथा आभार परियोजना निर्देशक डॉ. आभा दूबे (मुख्य सलाहकार एवं सहायक प्राध्यापिका) का जिन्होंने इस परियोजना कार्य के क्रियान्वयन को सुचारू एवं सफल बनाने में शोध सलाहकार के रूप में अपना योगदान दिया। अग्रलिखित बीए बीएड द्वितीय वर्ष के उन समस्त विद्यार्थियों का विशेष आभार जिन्होने परियोजना कार्य को पूर्ण करने में न केवल अपना सहयोग दिया अपितु प्रभावी कार्य हेतु अपने ज्ञान एवं कौशल का भी सार्थक प्रयोग किया। साथ ही इस लघु शोध कार्य को पुर्ण करने में आरंभ से अंत तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना बहुमुल्य मार्गदर्शन, सहयोग, सुझाव, सलाह प्रदान करने वाले समस्त सूधीजनों का हार्दिक आभार ।

परियोजना निर्देशक
डॉ. आभा दूबे
(सहायक प्राध्यापक)
(Advisor)

प्रस्तुतकर्ता
छत्तीसगढ़ शैक्षिक, सामाजिक
सांस्कतिक संगठन(CESCO)
रायपुर, (छत्तीसगढ)

मार्गदर्शक
सुश्री ममता ध्रूव
(सहायक प्राध्यापिका)

राजनैतिक मानचित्र–1.छत्तीसगढ राज्य़, 2.दुर्ग जिला

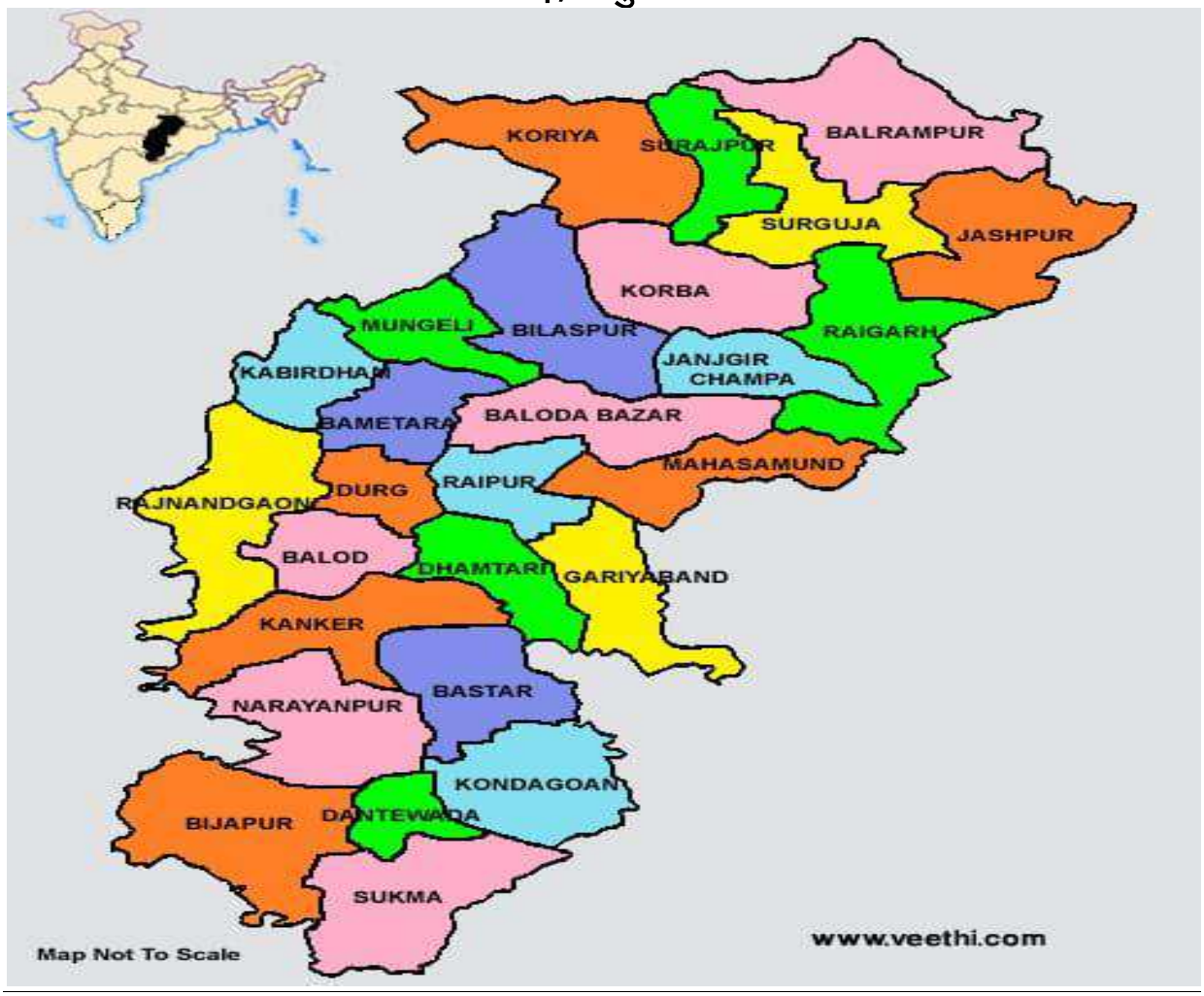

बीए. बीएड. (द्वितीय वर्श) के भाोधकर्ता विद्यार्थीगण

क्र.	समूह A	समूह B	समूह C
1	दिने ा कुमार सेन	अजय पटेल	कल्पना सोम
2	खु ाी भार्मा	मोहन कोमरे	इन्द्र कुमार
3	प्रीति बाघमारे	भरतभूशण	अदिति ध्रुव
4	खु ाबू वर्मा	चित्रेण	दीक्षा वाहने
5	प्रिया बंजारे	उत्तम ध्रुव	दुर्गा
6	तमिनी पाडी	हरप्रीत कौर	रेणुका यादव
7	अतुल देवांगन	नेहा भार्मा	किरण मंडावी
8	दामिनी	गरिमा श्रीवास	लोके ा पटेल
9	आभा लकरा	सौरभ साहू	नितां ा
10	रवि कुमार	दामिनी निशाद	टुके वर वर्मा

विषय–सूची

अध्याय		पृष्ठ क्रमांक
अध्याय 1	1.1 भूमिका 1.2 शोध का उद्देश्य 1.3 शोध परिकल्पनाएँ 1.4 शोध प्रविधि 1.5 अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय 1.6 शोध का महत्व 1.7 शोध की सीमाएँ	
अध्याय 2	शोध साहित्यों का पुनरावलोकन	
अध्याय 3	1. दुर्ग जिले का सामान्य परिचय 2. धमधा विकासखण्ड का सामान्य परिचय	
अध्याय 4	प्राथमिक आँकड़ो का विश्लेषण 4.1 न्यादर्श की आयु समुह का वर्गीकरण 4.2 न्यादर्श की शैक्षणिक स्थिति का वर्गीकरण 4.3 न्यादर्श की वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण 4.4 न्यादर्श की सिंचित एवं असिंचित भूमिका वर्गीकरण 4.5 न्यादर्श परिवार की कृषकों का वर्गीकरण 4.6 न्यादर्श परिवार की कृषि पध्दति का वर्गीकरण 4.7 सर्वेक्षित परिवारों की परम्परागत कृषि उपकरणों का वर्गीकरण	
अध्याय 5	सारांश, सुझाव एवं निष्कर्ष	

दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव

प्रस्तावना :–

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की अधिकांश जनसंख्या आज भी कृषि से ही अपनी आजीविका अर्जित करती है। भारत में नही विश्व के अनेक देशों में भी कृषि एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है, क्योंकि यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। किसी भी देश में उद्योगों के विकास के पहले कृषि का विकास किया जाना अत्यंत आवश्यक है। भारत जैसे देश के लिये जहाँ जनसंख्या के एक बड़े भाग की आजीविका का साधन कृषि है। इसलिए कृषि विकास पहली प्राथमिकता है।

भारतीय कृषि कई शताब्दी पहले ही सापेक्षिक दृष्ठि से परिपवक्ता की स्थिति में पहुंच चुकी थी और उस समय देश में कृषि तथा उद्योग में संतुलन था, जिससे कृषकों की दशा उतनी खराब नही थी जितनी आज है। स्थिती अठारहवी शताब्दी के मध्य तक बनी रही। स्वतंत्रता से पूर्व कृषि व्यवसाय 'जीवन–निर्वाह' का साधन मात्र बनकर रह गया। जमींदार और महाजन ऋणों की आड़ में किसानों की जमीन हड़प जाते थे इससे खेतिहर मजदुरों का एक नया वर्ग चंदा हो गया। ये लोग अन्य किसानों की भुमि पर मजदुरी करने लगे। मजदुरी का स्तर बहुत ही कम होता था। किसानों का एक बड़ा वर्ग कृषि से केवल जीवन–निर्वाह योग्य आय ही अर्जित कर पाता था। यह स्थिति लम्बे समय तक बनी रही।

1960–70 के दशक के मध्य में भारत में पारंपरिक कृषि व्यवहारों का प्रतिस्थापन आधुनिक कृषि तकनीकों से किया गया। इसके परिणाम स्वरूप भारत में एक से कृषि क्रांति व्यक्त हुई। आरंभ में नविन तकनीकों का प्रयोग 1960–61 में सात आई. ए. डी. पी. जिलों में मार्गदर्शी परियोजना के रूप में किया गया। इसके बाद अधिक उपजाउ किस्म के बीज के प्रोग्राम को आई.ए.डी.पी. के साथ जोड़ दिया गया और इस विकास रणनीति का पुरे देश भर में विस्तार करने का लक्ष्य तय किया गया। पारंपरिक कृषि अधिकरतर देशीय आदानों पर निर्भर करती है। इसमें कार्बनिक खाद, साधारण हल एवं अन्य आदिकालीन कृषि औजारों बैलों आदि का प्रयोग होता है। इसके विरूध्द, आधुनिक तकनीक में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, बीजो

की उन्नत किस्मों (जिसमें संकर बीज भी शामिल है) कृषि मशीनरी, विस्तृत सिंचाई, डीजल और विद्युत शक्ति आदि का प्रयोग सम्मिलित है। 1966 के पश्चात् आधुनिक कृषि आदानों के

प्रयोग में 10 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृध्दि दर से उन्नति हुई है। भारत में कृषि का यंत्रीकरण अपना आधुनिकीकरण एक विवाद का विषय रहा है। जो लोग आधुनिकीकरण का समर्थन करते है, उनका कहना है कि इससे उत्पादकता में वृध्दि होती है। कृषि कि अन्य आगतों जैसे उत्कृष्ठ बीजों सिंचाई की सुविधाओं उर्वरकों आदि के अधिक प्रयोग की आवश्यकता तभी पड़ती है और इसका लाभ तभी प्राप्त होता है, जबकि कृषि में पहले पर्याप्त मात्रा में शक्ति में शक्ति का प्रयोग संभव हो जो कि मशीन से ही हो सकता है।

आधुनिकीकरण के आलोचनों का कहना है कि इससे भारत जैसे अतिरेक श्रम शक्ति वाले देश में बरोजगारी की संभावनाएँ और अधिक बढ़ जाती है। अधिक आबादी वाले देशों में जो अभी तक आर्थिक रूप से अविकसित है, छोटे खेतों का होना। ऐसे देशों में आबादी का अधिकतर भाग कृषि पर निर्भर करता है। अधिक आबादी वाले देशों में जो अभी तक आर्थिक रूप से अविकसित है, छोटे खेतों का होना, एक आम बात है।

ऐसे देशों में आबादी का अधिकतर भाग कृषि पर निर्भर करता है तथा इस कारण इन देशों में जोतों के आकार बहुत छोटे हो जाते है। भारत में खेती की दृष्टि में (न कि खेतों की मलकियत की दृष्टि से) जोतों का औसत आकार वर्ष 1976–77 में हो हैक्टर या जबकि वर्ष 1955–96 में यह कम होकर 1–41 हेक्टर हो गया था। भारतीय कशि श्रमिकों की स्थिति बहुत ही दयनीय है। सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से हमारे समाज का यह सबसे कमजोर वर्ग है। उनको मजदुरी बहुत कम मिलती है। 1947 तक ब्रिटिश सरकार ने इनकी दशा को सुधारने की और ध्यान नही दिया किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय सरकार ने इनकी दशा को सुधारने के लिये अनेक उपाय किए है।

शोध का उद्दे य–

1. नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. नवीन कृषि पध्दति का कृषकों की आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

3. नवीन कृषि पध्दति से ग्रामीण विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ–

1. बदलती कृषि पध्दति से कृषि उत्पादन पर कोई सकारात्मक प्रभाव नही पड़ा है।
2. बदलती कृषि पध्दति से कृषकों के जीवन स्तर में कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।
3. कृषि पध्दति के परिवर्तन से ग्रामीण विकास पर कोई सकारात्मक प्रभाव नही पड़ा है।

शोध प्रविधि–

ऑकड़ो का संकलन :– प्रस्तुत शोध प्राथमिक व द्वितीयक ऑकड़ो पर आधारित होगा। प्राथमिक समंको का संकलन प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक समंको का संकलन शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदनों से संकलित किया गया है।

1. **प्राथमिक आँकड़ो का संकलन :–** प्राथमिक समंको का संकलन चयनित न्यादर्श ग्रामों के कृषक परिवारों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।
2. **द्वितीयक आँकड़ों का संकलन :–** प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के द्वितीयक समंको का भी उपयोग किया गया है। द्वितीयक समंको के संकलन के लिए शासकीय एवं अर्ध्दशासकीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित विभागीय प्रतिवेदनों एवं इंअरनेट, पत्र, पत्रिकाओं से प्राप्त समंको का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ो का विश्लेषणः– आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग जैसेः– रेखाचित्र, आरेख, सारणीयन, प्रतिशत विधि आदि के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध '' दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड में नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' का अध्ययन करने के किए दुर्ग जिला का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के अंतर्गत किया गया है। यहाँ अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहने के कारण मुख्य रूप से कृषि कार्य करते है। यहाँ अधिकतर कृषक कृषि कार्य को नवीन तकनीकों के माध्यम से करने लगे है। इन नवीन कृषि पध्दति से कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर क्या प्रभाव पड़ा है। इसका अध्ययन करने के लिए दुर्ग जिला के मागरलोड़ विकासखण्ड को चुना गया है।

शोध का महत्व–

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषि क्षेत्र ही देश की कुल श्रम शक्ति के लगभग 49% लोगों के लिए रोजगार सृजन करता है। इसलिए इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की आधार शिला कहा जाता है।

1.**राष्ट्रीय आय में कृषि का आग :–** प्रथम विश्व युध्द के समय भारत की राष्ट्रीय आय का लगभग दो–तिहाई कृषि से प्राप्त होता था। इसका प्रमुख कारण औद्योगिक विकास का न होना था। स्वतंत्रता के बाद, विशेष तौर पर योजनाओं को लागू करने के बाद से, द्वितीयक, तृतीयक क्षेत्रों के विकास के कारण कृषि का हिस्सा लगातार कम होता गया है। 1950–51 में साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद में कृषि सहायक गतिविधियों का हिस्सा 53.1 प्रतिशत तथा 2013–14 में 13.9 प्रतिशत रह गया।

2.**रोजगार की दृष्टि से कृषि का महत्व :–** 1951 में कार्यकारी जनसंख्या का 69.5 प्रतिशत कृषि में लगा हुआ था। यह प्रतिशत संख्या 1991 में गिर कर 66.9 तथा 2001 में 56.7 हो गई। वर्ष 2004–05 में श्रम शक्ति का 52.1 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में लगा हुआ था। 2008–11 की अवधि में पुरूष श्रम शक्ति का 46 प्रतिशत तथा स्त्री श्रम शक्ति का 65 प्रतिशत कृषि में लगा हुआ था। जनसंख्या में तेज वृध्दि होने के कारण, कृषि में लगे हुए लोगों की वास्ततिक संख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई है। अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों का उपयुक्त विकास न होने के कारण उनमें रोजगार अवसरों ये वृध्दि बहुत कम हो पाई है जिसमें मजबूरन बहुत से लोगों को कृषि पर काम करना पड़ा है भूमि पर उनकी सीमांत उत्पादकता बहुत कम हैं इससे अल्प रोजगार तथा छिपी हुई बेरोजगारी जैसी समस्याएँ पैदा होती है।

3 **बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्नों की आपूर्ति–** भारत जैसे श्रम–आधिक्य वाले देशों में जनसंख्या के भारी दबाव के कारण, खाद्यान्नों की मांग में तेज वृध्दि होती है। इसके अलावा, गरीबी के कारण खाद्य–उपभोग का वर्तमान स्तर बहुत कम है। इसलिए प्रति व्यक्ति आय बढ़ने पर, सबसे पहले खाद्यान्नों की माँग बढ़ती है। इसलिए यह आवश्यक है कि कृषि क्षेत्र में उत्पादन लगातार बढ़ता रहे नही तो खाद्य–संकट पैदा हो सकता है।

3. **पूंजी निर्माण में सहयोग–** भारत जैसे विकासशील देशों में कृषि सबसे बड़ा क्षेत्र है इसलिए पूंजी निर्माण में उसका अधिक सहयोग अनिवार्य है। यदि यह क्षेत्र ऐसा कर पाने में असफल होगा तो आर्थिक विकास की प्रक्रिया अवरूध्द हो जाएगी।

निम्नलिखित नीतियाँ अपनाने की बात की जाती है– 1. कृषि से गैर–कृषि क्षेत्रों की ओर श्रम व पूंजी का अंतरण,

2 कृषि पर इस प्रकार से कराधान कि उस पर करों का भार,

3 कृषि उत्पादों पर इस प्रकार कीमत– नियंत्रण लगाना जिससे विनिमय की शर्तें कृषि के प्रतिकूल हो जाएँ।

5.**औद्योगिक विकास के लिए कृषि का महत्व–** भारत में औद्योगिक विकास की दृष्टि से कृषि का बहुत महत्व है। भारत में महत्वपूर्ण उद्योगों को जिनमें सूती वस्त्र, जूट, चीनी, तथा वनस्पति उद्योग है। कृषि से ही कच्चे पदार्थो की प्राप्ति होती है। औद्योगिक क्षेत्र में लगे हुए लोगों के लिए खाद्यान्नों के उत्पादन की जिम्मेदारी कृषि क्षेत्र पर ही है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र में विनिर्माण उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का बाजार भी होता है। अभी भारतीय किसानों और खेतिहार मजदूरों की आय का स्तर काफी नीचा है। इसलिए इस क्षेत्र में तैयार वस्तुओं के लिए बाजार सीमित है। कृषि विकास से भारतीय उद्योगों के लिए ग्रामीण क्षेत्र में बाजार विस्तृत होना स्वाभाविक है।

6 **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और कृषि–** बहुत लम्बे समय तक तीन कृषि वस्तुओं (चाय, पटसन तथा सूती वस्त्रों) का भारत की निर्यात आय में 50 प्रतिशत हिस्सा था। यदि हम अन्य कृषि वस्तुओं जैसे कॉफी, तम्बाकू, काजू, वनस्पति तेल, चीनी इत्यादि को भी शामिल कर लें तो कृषि का निर्यात आय में हिस्सा 70 से 75 प्रतिशत तक पहुँच जाता है। कृषि वस्तुओं पर इतनी अधिक निर्भरता भारत के अल्प–विकास को प्रतिलक्षित करती थी। आर्थिक विकास के साथ–साथ उत्पादन में विस्तार व विविधीकरण हुआ जिससे निर्यात आय में कृषि का हिस्सा कम हुआ।

शोध की सीमाएं–

1. चयनित न्यादर्श क्षेत्र का अध्ययन करने की एक निश्चित सीमा होती है, जिसके कारण हमें सही आँकड़े उपलब्ध हो पाते है।
2. लघु शोध–प्रबंध का अध्ययन हम चयनित गाँवों का ही जानकारी एकत्र किया जाएगा, इसके बाहर के गाँवों का नही कर सकते।
3. धमधा विकासखण्ड में नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर क्या प्रभाव पड़ा है, इसका अध्ययन किया गया है।

अध्याय 02

शोध साहित्यों का पुनरावलोकन

शोध साहित्य की समीक्षा–

1. **अग्रवाल फूलचंद, अग्रवाल मातादीन, (1972) ''भारत का आर्थिक विकास''** नामक अपने शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का बहुत आर्थिक महत्व होते हुए भी भारतीय कृषि आज पिछड़ी हुई अवस्था में है तथा उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय कृषि की प्रमुख समस्यायें ही इसके पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार है– भूमि पर जनसंख्या का अधिक भार, प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन कृषि जोतों का छोटा तथा बिखरा होना, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, कृषि विता का अभाव एवं कृषि ऋण ग्रस्तता, दोषपूर्ण भू–स्वामित्व व्यवस्था, खादों की अपर्याप्तता, अधिक उपज देने वाले बीजों का अीााव, मिट्टी की कटाव की समस्या, कृषि विपणन की दोषपूर्ण व्यवस्था है।
2. **शाह के. एन., (1973)''भारत और विदेशों में कृषि विकास''** नामक अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष ज्ञात किया कि राजस्थान में पंचवर्षीय योजनाओ के माध्यम से कृषि की स्थिति को पर्याप्त सुधारा गया है, किन्तु वह अभी भी संतोषजनक नही हैं इसमें उनके प्रमुख समस्याओं का उल्लेख किया गया हैं। सिंचाई के साधनों का अभाव, वित्तिय साधनों का अभाव, यातायात के अपर्याप्त साधन, अधिक जनसंख्या अकुशल एवं पक्षपात पूर्ण प्रशासन, दोषपूर्ण मूल्य नीति, जनसाधारण में सहयोग का अभाव में सभी इनके बाधक है।
3. **भालेराम एम.एम.,(1977) '' भारतीय कृषि अर्थशास्त्र''** नामक अपने शोध लेख में यह अध्ययन किया कि सिंचाई के अभाव से भारत में सघन खेती बहुत कम क्षेत्र में होती हैं व अधिकतर क्षेत्र में विस्तृत खेती होती है जिसमें कृषि श्रमिकों को सालीार काम न ही मिलता तथा मौसमी व अल्पराजगारी की समस्या बनी रहती है। अतः कृषि क्षेत्र में हीरोजगारी बढ़ाने के लिए सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ाकर व उन्नत बीज, खाद, दवा आदि कृषि आवश्यक वस्तुएँ किसानों को उपलब्ध कराकर सघन खेती को प्रोत्साहन देना आवश्यक है। इस दिशा में सघन कृषि जिला कार्यक्रम, सघन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, भारी उपजदायी किस्म, कार्यक्रम आदि।
4. **मिश्र जगदीश नारायण, (1979) ''भारतीय अर्थशास्त्र''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया भारतीय कृषि के समक्ष अनक समस्याये बताये है जिसमें इन समस्या को तीन भागों में बॉटा है :–

कृषि की परिस्थितियों तथा तरीकों में भिन्नता हैः– देश के भिन्न–भिन्न भागों में मिट्टी की बनावट, जलवायु तथा फसलों के तरीकों में विभिन्नता पाई जाती है।

1. **प्रति श्रमिक निम्न उत्पादकता :–** प्रति व्यक्ति श्रम उत्पादता के निम्न होने का एक महत्वपूर्ण कारण कृषि में अधिक व्यक्तियों का लगा होना है। इस स्थिति के कारण कृषि में अल्परोजगार और बेरोजगारी उत्पन्न हो जाती है।
2. **प्रति हेक्टर कम उपज :–** भारतीय कृषि की तीसरी महत्वपूर्ण समस्या अन्य देशों की तुलना में यहाँ प्रति हेक्टयर निम्न उत्पादन तथा फसलों की उपज का कम होना है। भारत में प्रति हेक्टर गेहूँ का उत्पादन मिश्र के एक–तिहाई तथा हालैड एवं डेनमार्क के एक चौथाई के बराबर एवं चावल का उत्पादन इटली के लगभग एक चौथाई भाग के बराबर है।

5. **मिश्र जगदीश नारायण, (1979) ''भारतीय अर्थशास्त्र''** नामक अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष ज्ञात किया कि भारत में कृषि के यंत्रीकरण के मार्ग में बाधाएँ है। भारत 1966–67 से कृषि में यंत्रीकरण को बढ़ावा मिला है। देश में पम्प–सैटों व ट्रेक्टरों आदि की मांग बढ़ रही है और कृषि का व्यवसायीकरण होनें लगा जिसमें कई समस्याएँ उत्पन्न हुई है कृषकों के पास यंत्रों को खरीदने के लिए विता का अभाव यंत्रों के उत्पादन में कमी, सेवा सुविधाओं तथा मरम्मत का अभाव, विस्तार, संस्थाओं की कमी, छोटे कृषकों को विशेष कठिनाइयाँ, खेतों का छोटा आकार होगा।
6. **अग्रवाल ए.एन. (1987)''भारतीय अर्थव्यवस्था विकास एवं आयोजन''** नामक अपने शोध अध्ययन में कृषि कार्यो के भली प्रकार संचालन और विकास के लिए विता या उधार की आवश्यकता स्पष्ट है लेकिन भारत में इसकी उपलब्धि एक बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इस समस्या को तीन महत्वपूर्ण पहलू में बताया गया है :–

1. **पर्याप्त, सस्ता एवं अल्प समय ऋण :–** कृषि संबंधी विभिन्न कार्यो के लिए आवश्यक मात्रा में ऋण का उपलब्ध होना जरूरी है। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है। कि ऋण नीची ब्याज दर पर और समय पर उपलब्ध हो अपर्याप्त मात्रा में ऋण मिलने से उद्देश्य की पूर्ति सम्भव नही हो पाती, बल्की इससे सारे कार्य में रूकावट पैदा होती है।

2. **कृषि अनुकूल ऋण :–** कृषि क्षेत्र की विता की आवश्यकताओं की अपनी कुछ अलग विशेषताएँ है। कृषि क्षेत्रों में बआई और फसल की बिक्री के बीच का भी समय लगता है और फिर कृषि एक मौसमी धंधा है। लेकिन किसानों को कृषि–कार्य चलाने के अतिरिक्त अपने उपयोग के लिए भी सारे वर्ष ऋण की आवश्यकता रहती है।

3. **छोटे किसान और ऋण :–** भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ अधिकांश किसान बहुत छोटी–जोतों पर खेती करते है। सीमित साधन वाले किसान होने के नाते एक और तो इन्हे ऋण की बड़ी आवश्यकता बहुत ऊँचे ब्याज पर महाजनों से उधार लेते है और ऋण न लौटा पाने के फलस्वरूप उपनी भूमि खो बैठते है।

7. **सायमन लेजली, कटारे श्याम सुन्दर, (1989) ''कृषि भूगोल''** नामक अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष ज्ञात किया कृषि में सामाजिक तथा आर्थिक कारण को बताया, ग्रामीण कृषक में आर्थिक तंगी संसाधनों की कमी, और धन की कमी, जागरूता की की के कारण वह उत्पादन सही तरीके से नहीं कर पाता है और अशिक्षा आदि से कृषि में अनेक समस्या उत्पन्न होती है। समाज में संगठन का अभाव एकता की कभी से किसान एक दुसरे की सहायता नही करते है यह भारतीय किसानों की मूल समस्या है। परिवहन का अभाव होना उचित जल की सिंचाई का अभाव खाद की अभाव में फसलों का उत्पादन कम होता है।

8. **भारती आर.के. (2000) ''भारत में कृषि आधारित उद्योग समस्याएँ एवं संभावनाएँ''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि भारतीय कृषि की उत्पादकता अपेक्षाकृत अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। भारत में कृषि जोतो का आकार बहुत छोटा है। यहाँ की 76.3 प्रतिशत जोतें 2 हैक्टेयर या इससे भी छोटी होती है। आधुनिक तकनीकों के उपलब्ध होने के बाद भी अधिकांश उत्पादन पुरानी परंपरागत तकनीक से होता है। भारत में कृषि उत्पादन के कम होने का एक महत्पवपूर्ण कारण यह यह कि भारतीय किसान अच्छे उन्नत बीजों का उपयोग नहीं करता है। साथ ही अच्छी रासायनिक खादों को प्रयोग में नहीं लाया। भारत में 45 वर्षों के नियोजन के बाद भी मानसून पर निर्भरता में कोई विशेष कमी नही हुई है। अभी भी कुल भूमि का 33.3 प्रतिशत ही सिंचित क्षेत्र है। शेष 66.7 प्रतिशत मानसून पर निर्भर हैं। कृषि

अनुसंधान की जानकारी कृषकों तक नहीं पहुँचने के कारण भी निम्न उत्पादकता बनी रहती है।

9. **शर्मा ओ. पी., (2001)'' भारत में आर्थिक पर्यावरण''** नामक अपने शोध अध्ययन में भारत में कृषि विता के क्षेत्र मे ग्रामीण परिवेश में बैंक शाखाओं का अभाव होने के कारण बहुत से किसान, सेठ, साहूकारों के चंगुल में फंसे हुए है। पंचवर्षीय योजनाओं में ग्रामीण बैंक शाखाओं का विस्तार हुआ है किन्तु गाँवों में निरक्षरता के कारण किसान बैकिंग सुविधाओं का अपेक्षित लाभ नही उठा सके। कृषि विता के कारण कृषि विकास का तेज गति नही मिल सकी। गाँवों में बैंक शाखाओं का अभाव, निरक्षरता, भ्रष्टाचार, संस्थागत विता की कमी, कमजोर आर्थिक स्थिति, खेती के गलत तरीक, पक्षपात।

10. **शर्मा ओ. पी. (2001) ''भारतीय अथव्यवस्था की दिशा''** नामक अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान होने के बावजूद भी कृषि विकास पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। कृषि की उत्पादन क्षमता में वृध्दि के लिए खाद आवश्यक है। भारत मे खाद नितांत अभाव है। परम्परागत खाद जैसे गोबर को जलाकर राख कर दिया जाता है। रासायनकि खाद उत्पादन मांग की तुलना में कम है। देश में बुआई के समय रासायनिक खाद की किल्लत रहती है। बड़े पैमाने पर खााद की कालाबाजरी होती है। किसानों कों मंहगे दामों पर खाद खरीदना पड़ता है। भारत में रासायनिक उर्वरकों की कमी के साथ उत्तम बीजों का भी अभाव है।

11. **दत्त रूद्र, सुन्दरम के.पी.. एम., (2005)'' भारतीय अर्थव्यवस्था''** नामक अपने शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि भारतीय किसान खती में उन्नत बीजों के महत्व से परिचित है। उन्नत बीजों द्वारा 10 से20 प्रतिशत उत्पादन वृद्धि हो सकती हैं। परन्तु वे सामान्य तथा इस प्रकार के बीजों का प्रयोग करते हैं, क्योकि या तो अच्छे बीज जो बुआई के लिए रखे जाते है, उपभोग कार्य में लाए जाते हैं या संग्रह न कर सकने के कारण वे नष्ट हो जाते है। अधिक महत्व की बात यह है कि किसान उन्नत बीजो का प्रयोग करें। कृषि विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने उन्नत बीजों का विकास करने और उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए अपनाने के पश्चात् रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में तीव्र वृध्दि होती गई है।

12. **गुप्ता, डॉ. बी.पी., स्वामी डॉ. एच.आर. आई (2003) ''भारत में आर्थिक पर्यावरण''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कृषि वित्त की व्यवस्था को सुधारने के सुझाव निम्न दिये है :–

सहकारी साख व सहकारी विपणन में आवश्यक तालमेप कृषकों को रचया उधार देते समय इस बात की व्यवस्था की जानी चाहिए कि वह अपनी उपज कोसहकारी सतिति के माध्यम से ही बेचें।

1. ऋण चुकाने पर जोर :– लघु व सीमांत किसानों व अन्य काश्तकारों तक साख की सहूलियत पहँचाने के लिए जमानत के लिए 'भुमि' पर जोर न देकर चुकाने की योग्यता पर अधिक जोर देना चाहिए।
2. किसानों में बचत की आदत को बढ़ावा :– किसानों में बचत की आदत को विकसित करना चाहिए तथा ग्रामीण बचत को एकत्र करने के सर्वोत्तम उपाय अपनाये जाने चाहिए जिससे उन्हे अधिक ऋण नही लेना पड़े।
3. विभिन्न एकीकृत कार्यक्रमों को लागू करना :– सिंचाई, चकबन्दी भूमि, सुधार आदि के लिए विभिन्न एकीकृत कार्यक्रम जैसे – IRDP, JRY आदि कार्यक्रमों को सरल बनाया जाये, ताकि गाँव में रोजगार व आददनी बढ़ सके तथा निर्धनता का कुछ सीमा तक उन्मुलन हो सके।

13. **सिंह सुदामा, सिंह राजीव कृष्ण, (2003) ''भारतीय अर्थव्यवस्था''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि भारतीय कृषि के यंत्रीकरण से बहुत सारे श्रमिकों के बेराजगार होने की आशंका रहती है। एक मशीन कई सौ मजदूरां के बराबर कार्य करती है। अतएव यंत्रीकरण से लाखों की संख्या में खेतिहार मजदूर बेकार हो जाएंगे और इतनी बड़ी संख्या में खेतिहार मजदूरों को कृषि के अतिरिक्त अन्य उद्योंगों में रजागार प्रदान करने में कठिनाई होगी। भारतीय कृषक निर्धन है तथा ऋणग्रस्त रहता है। उसके पास इतने वित्तिय साधन नही होने कि वह खेती के लिए बड़े–बड़े कृषि यंत्र एवं उपकरएण्ए खरीद सके । वित्त अभाव में कृषक न चाहते हुए भी पुराने उपकरणों व चंत्रों पर ही निर्भर रहता है। इस समस्या का समाधान चकबंदी, सहकारी समितियों, साख संस्थाओं एवं बैंक में मदद से ही हो सकता है।

14. **लेखराज, (2004) ''छ.ग. में कृषि एवं पोषण एक भौगोलिक अध्ययन''** नामक अपने शोध अध्ययन में कृषि की मूल समस्या को दो प्रकार से बताएँ है जिसमें पहला मौलिक समस्या, दुसरा व्यवस्थापक समस्या है जिसमें पहला मौलिक समस्या, दुसरा व्यवस्थापक समस्या है मौलिक समस्या को कृषि में महत्वपूर्ण बताया गया है।

1. **मैलिक समस्या**–धान के खेत के भूमि का समतल होना नितांत आवश्यक है

जलवायु–जलवायु, अनिश्चित वर्षा के कारण कृषि उत्पादन प्रति हेक्टेयर अन्य कृषि प्रदेशों की तुलना में कम है।

2. **भुजल** की समस्या और मेड़ का आकार अच्छा होना चाहिए।
3. **व्यवहारिक समस्या**–मोटे अनाज, एवं कृषि फसलों में गोबर खाद का उपयोग नही होता है। लोगों में शिक्षा की कमी, परंपरा एवं रीति रिवाज, गरीबी तथा परिवार की दायित्व कृषि नवाचार क विकास एवं उपयोग विकास मे प्रमुख बाधक है।

15. **चौधरी सी.एम., (2004)'' भारत में आर्थिक पर्यावरण ''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कृषि में जोखिम एवं अनिश्चितता के नियंत्रण के लिए निम्न उपाय किये जा सकते है :– किसानों को शिक्षित किया जाना चाहिए जिससे वे कृषि साख, कृषि विपणन, बाजार की दशाओं, कृषि आदानों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सके। इसके साथ ही साथ कृषि में नये प्रवर्तनों के बारे में समय–समय पर कृषि अधिकारियों के साथ विचार–विमर्श तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे किसानो को प्रोत्साहित करके कृषि जोखिम एवं अनिश्चितता को कम किया जा सकेगा। कृषि की जोखिम एवं अनिश्चितताओं को दूर करने के लिए न केवल कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृध्दि करना आवश्यक है बल्कि किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलना भी आवश्यक है।

16.गुप्ता पी.के, (2005)'' कृषि अर्थशास्त्र'' नामक अपने शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कृषि विपणन के दोषों को दूर केने के उपाय तथा सरकार द्वारा इस संबंध में उठायें गये व्यय इस प्रकार हैः–

1. नियंत्रित मण्डियों की स्थापना :– किसानों को अनियत्रित मण्डियों की कपटपूर्ण पध्दतियों से मुक्त करने के लिए देश के विभिन्न स्थानों पर नियंत्रित मण्डियों स्थापित की जाएं।

2. कृषि उपज का श्रेणीयन एवं प्रमाणीकरण :– अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ख्याति प्राप्त करने तथा उपज की किस्म में सुधार करने के लिए कृषि वस्तुओं का श्रेणीयन व प्रमाणीकरण होना चाहिए । इससे कृषकों को अपनी उपज का उचित मूल्य मिलेगा तथा देश में बढ़िया किस्म के कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन मिलेगा।

3. विपणन सूचनाओं का प्रसारण एवं प्रकाशन :– किसानों को उनकी उपज मूल्य संबंधी जानकारी देने के लिए विपणन सूचनाओं का प्रकाशन एवं प्रसारण।

4. वित्तिय सुविधाये :– किसनों को महाजन के चंगुल से बचाने तथा कृषि–विपणन उत्पादों सुधार लाने के लिए यह आवश्यक है कि सस्ते ब्याज की दर पर वित्तिय सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाए।

17. **गुप्ता पी.के., (2006)''कृषि अर्थशास्त्र''** नामक अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कृषि श्रमिकों की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव निम्न हैः–

1. कृषि कला में उन्नति :– उत्तम बीज का प्रबंध हो, सिंचाई के साधनों का प्रसार हो, यातायात के साधन का विकास हो, बंजर भूमि को खेती योग्य बनाये जाये। उपज की बिक्री में सुधार किया जाए तथा खेतों चकबंदी हो और खेतों को अधिक जोत के योग्य बनया जाए।
2. अन्य सुझाव :– 1. श्रम सहकारिताएं संगठित की जाए तथा सरकार इन्हे निर्माण कार्यो का ठेका देने में प्राथमिकता दें।

   2. भू–ह्रासता का अंत करने के लिए कृषि–श्रमिक परिवारों को शिक्षित किया जाए तथा इन्हे उन्नति के अवसर प्रदान किए जाए,
3. कृषि श्रमिकों के लिए सामाजिक बीमें की व्यवस्था की जाये ताकि असमर्थता की स्थिति में कृषि श्रमिकों का हित लाभ दिया जा सके।
4. गांवो में सार्वजनिक निर्माण कार्यो का प्रसार किया जाए
5. कृषि श्रमिकों को सस्ती साख प्रदान करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में गैर– कृषि साख नमितियों की स्थापना की जाये।

18. **सोनी कृष्ण, (2008)''कृषि अर्थशास्त्र के मुख्य विषय''** नामक अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि छोटे तथा सीमांत किसानों की तीन कारणों को बताया है जिसमें हैः– 1. खेत का अपने आकार में छोटा होना, 2. वित्त की कमी 3. खेती के विकास से संबंधित पर्याप्त जानकारी की उपलब्धि में रूकावट, आदि समस्या है जिनका

मुख्य रूप से केवल एक छोटे किसान को ही साधना करना पड़ता है। छोटे किसान अपने खेत में सिंचाई के लिये नलकूप नही लगा सकते। संसाधनों की कमी होती है, उपचारित बीज की कमी और खाद नहीं डाल सकता ।

19. **रामाप्रसाद, यादव सत्यवीर, (2007)'' कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नियोजन''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि जोतों के आकार का कृषि के विकास पर प्रभाव निम्न हैः– 1. बड़े आकार के जोत वाले कृषकों के पास उत्पादन आधिक्य होने से बचत अच्छी हाती है। इस कारण इनकी कृषि में पूंजी निवेश की क्षमता भी अधिक होती है। 2. बडे आकार के जोतो में उर्वरकों का प्रयोग भी अधिक होता है तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करते है जिससे उनकी उत्पादकता में वृध्दि होती हे। पिछले कई वर्षो से खाद्यान्नों के उत्पादन में जो वृध्दि हुई है, उसमें सबसे बड़ा योगदान सिंचाई अधिक उत्पादन देने वाली बीजों तथा उर्वरकों के प्रयोग का रहा है, जिसका उपयोग मध्यम व बड़े आकार के जोत अधिक करते है। 3. लघु व सीमांत कृषकों के पास साधन हीनता होती है । जिसमें इनके पास या तो बहुत कम बचत होती या बचत शून्य रहती हैं इसके कारण से खेती में पूंजी निवश अधिक नही कर पाते। उन्नत बीज व रासायनिक खाद का प्रयोग इस प्रकार के जोतो में बहुत सीमित है। लघु व सीमांत कृषक गरीबी के कुचक्र से अपने आप को नही बचा पाते। उत्पादन कम होने पर बचत कम होती है, जिसके कारण कृषि में सिंचाई, खाद आदि का प्रयोग सीमित होने के कारण उत्पादन पुनः कम होता है।

20. **मिश्र जय प्रकाश, (2008)'' कृषि अर्थशास्त्र''** नामक शोध लेख में यह निष्कर्ष प्राप्त कया कि भारतीय कृषि की अनिश्चितता को दखते हुए फसल बीमा आवश्यक ही नही अपितु अपरिहार्य है। फसल बीमा योजना के भावी विस्तार के लिए राष्ट्रीय कृषि आयोग ने निम्न सुझाव दिए हैः–

1. फसल बीमा के संदर्भ में सभी कृषि वस्तुओं एवं प्रमुख खाद्यान्नों के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में पायलट योजनाएँ प्रारंभ की जानी चाहिए, ताकि सभी क्षेत्रों एवं विभिन्न फसलो में फसल बीमा के क्रियान्वयन की पुरी तस्वीर सामने आ सके।
2. देश के उन क्षेत्रों में जहां अनिश्चितता की अधिकता के कारण कृषक बीमा किस्त का भुगतान करने में समर्थ नही है, वहां किस्त का निर्धारण न्यूनतम स्तर पर किया जाना चाहिए। यह व्यवस्था समाज कल्याण कार्यक्रम के रूप मे अपानाई जा सकीत है

3. आयोग ने पूंजी सम्पदा की सीमा–योजना लागू करने की भी सिफारिश की है। आयोग की धारणा है कि पूंजी सम्पदा बीमा का महत्व बीमा की अपेक्षा कृषकों के लिए अधिक है।

अध्याय – 3

1. दुर्ग जिले का सामान्य परिचय
2. धमधा विकासखण्ड का सामान्य परिचय

1. दुर्ग जिले का सामान्य परिचय–

दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ राजय का एक जिला है यह राजधानी रायपुर से 35 कि.मी. दक्षिण दिशा में स्थित है। दुर्ग जिला को अधिकारिक तौर पर 1 जनवरी 1906 को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर जिले से विभाजित किया गया। इस जिले में तीन विकासखण्ड हैं जिसे धमधा, पाटन, दुर्ग के रूप में विभाजित किया गया है।

भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार–

दुर्ग जिला छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2238 कि.मी.^{2} है। यह जिला भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के मध्य में स्थित है। भौगोलिक दृष्टिकोण से दुर्ग जिला $20^0$51′ उत्तरी अक्षांश और $81^0$37′ पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। यह समुह तल से 314 मीटर ऊपर है। दुर्ग जिला के ऊपर में रायपुर और बेमेतरा के साथ–साथ दक्षिण में बालोद, पूर्व में धमतरी और पश्चिम में राजनांदगांव जिला घिरा हुआ है।

जनसंख्या–

दुर्ग जिले की जनसंख्या 2011 जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 33,43,872 है। जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 16,82,101 व महिलाओं की जनसंख्या 16,61,771 है। 0–6 वर्ष आयु वर्ग की कुल जनसंख्या 430,536 है। जिसमें पुरूष 219,341 एवं महिला जनसंख्या 211,195 है।

साक्षरता दर–

दुर्ग जिला का कुल साक्षारता दर 79.06 प्रतिशत है, जिसमें पुरूषों का साक्षारता दर 87.82 प्रतिशत तथा महिलाओं का 70.23 प्रतिशत है।

दुर्ग जिला की भौगोलिक संरचना

दुर्ग जिला की भौगोलिक संरचना को अध्ययन की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है–

1. मैदानी
2. पर्वतीय भाग
3. पठार भाग

1. **मैदानी भाग**

मैदानी भू–भाग जहाँ जीवन सरल एवं सुगम होता है जहाँ कृषि कार्य यातायात के साधन एवं अन्य सुविधाएँ पर्याप्त होती है दुर्ग जिला में मैदानी क्षेत्र का विस्तार अधिक है मैदानी क्षेत्रों में कृषि कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है।

2. पर्वतीय भाग

दुर्ग जिला में पर्वतीय क्षेत्र के पि चमी भाग के क्षेत्रों में देखने को मिलता है। पर्वतीय भू–भाग वे होते है जहाँ जीवन अत्यधिक कठिन व संचार साधनों कृषि भूमि का अभाव पाया जाता है।

3. पठार भाग

दुर्ग जिला के दक्षिण पश्चिमी भाग में पठार है यहाँ भी मानव बसावट कम होते हैं तथा कृषि या अन्य कार्य होता है।

लोकसभा एवं विधानसभा

दुर्ग जिला में एक लोकसभा क्षेत्र एवं 6 विधान सभा क्षेत्र दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग भाहरी, वै ाली नगर, भिलाई नगर, पाटन, और अहिवारा है।

कृषि–

दुर्ग जिला में कृषि जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन है। यहाँ कुल 244436 हेक्टेयर क्षेत्र में फसल उत्पादन किया जाता है। जिसमें खरीफ का क्षेत्र 1444912 हेक्टेयर तथा रबी का क्षेत्र 99524 हेक्टेयर है। दुर्ग जिला में खरीफ फसलों में धान, अरहर, तिल, अलसी प्रमुख है। रबी में गेहुँ, चना, सरसों प्रमुख है।

वनस्पति–

दुर्ग जिला का अधिकतर मैदानी क्षेत्र है। दुर्ग जिला में कुल वन का क्षेत्रफल 48546 वर्ग कि.मी. है। जिसमें आरक्षित वन का क्षेत्रफल 6200 किमी है। दुर्ग जिला में प्रमुख वनोपज सागौन, ईमारती लकड़ी, साल ईमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी एवं अन्य मिश्रित ईमारती लकड़ी पाए जाते हैं।

शिक्षा–

दुर्ग जिला में साक्षरता का स्तर बहुत अच्छा है। सन् 2011 जनगणना के अनुसार प्राथमिक शाला 1091, माध्यमिक विद्यालय की संख्या 574, हाईस्कूलों की संख्या 87, उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की संख्या 149, महाविद्यालयों की संख्या 23 एवं 11 व्यवसायिक संस्थाएँ है।

बैकिंग एवं वित्तिय सुविधाएँ–

दुर्ग जिला में कुल बैको की संख्या 91 है जिसमें ग्रामीण बैंको की संख्या 60, अर्ध्दशासकीय बैंक 31 सहकारी बैंक 9 तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक 20 है।

सामाजिक विशेषताएँ–

दुर्ग जिला एक छोटा सा जिला है, जहाँ सभी वर्ग के लोग निवास करते है, इसमें हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मो को मानने वाले लोग निवास करते है। यहाँ हिन्दु धर्म के मानने वालों की जनसंख्या अधिक है। सामान्य क्षेत्र होने के कारण वन इसके दक्षिणी भाग में जनजातिय लोगों की संख्या अधिक है।

प्रशासनिक ढाँचा–

तालिका

प्रशासनिक दृष्टि से दुर्ग जिला में निम्नलिखित विभाग है।

क्र		
1.	जिला कार्यालय	दुर्ग
	तहसीलों की संख्या	03 (दुर्ग,पाटन,धमघा)
	विकासखण्ड की संख्या	03 (दुर्ग,पाटन,धमघा,)
	लोकसभा क्षेत्र	01 (क्षेत्र क्र. 07 दुर्ग)
	विधानसभा क्षेत्र	05(दुर्ग ग्रामीण,दुर्ग शहरी पाटन ,वौशाली नगर भिलाई)
	नगर पंचायत	03 (धमधा,उतई,पाटन)
	नगर निगम	04 दुर्ग, भिलाई,चरौदा,रिसाली
	जिला न्यायलय	01 दुर्ग
	ग्राम पंचायत	112
	कुल ग्राम	388

2. धमधा विकासखण्ड का सामान्य परिचय

कृषि :–

धमधा विकासखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। ग्रामीण क्षेत्र के कृषकों को कृषि कार्य के लिए ज्यादातर मानसून पर निर्भर रहना पड़ता है, तथा इस ग्रामीण क्षेत्र में सिचाई के लिए बाँध, नहरों की उचित व्यवस्था नही है। कुछ कृषकों के पास

अपनी स्वयं की सिंचाई के साधन जैसे– कुआँ, बोरबेल होने से वे अपना कृषि का कार्य करते हैं और यहाँ किसान एक फसल व दो फसल लेते हैं। सबसे ज्यादा कृषक एक फसल की बोआई करते हैं लेकिन दो फसल कुछ कृषकों द्वारा की जाती है जिसमें सब्जी, गेहूं, चना, मटर आदि की खेती करते हैं।

जनसंख्या :– धमधा दुर्ग जिले का एक विकासखण्ड है। धमधा विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 2011 के जनगणना अनुसार 115150 है इस विकासखण्ड में कुल 63 ग्राम पंचायत है तथा 114 ग्राम है। यहाँ महिला जनंसख्या 57763 हैं तथा पुरूष जनसंख्या 57387 है, जिसमें अनुसूचित जाति की कुल संख्या 5280 है, अनुसूचित जन जाति. 28863, अन्य पिछडा वर्ग/सामान्य वर्ग के जनसंख्या 81007 है। सबसे अधिक जनसंख्या अनुसूचित जन जाति का है, सबसे कम अनुसूचित जाति का है।

सामाजिक स्थिति :–

धमधा विकासखण्ड में सभी धर्मों के लोग निवास करते है जिसमें सबसे ज्यादा हिन्दु धर्म के लोग 96.62% अत्यधिक है, मुस्लिम 3.07% ईसाई 0.25% सिख 0.02% है। धमधा में 15 वार्डों की संख्या है।

शिक्षा–धमधा विकासखण्ड में शिक्षा हेतु प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर तक की सुविधा उपलब्ध है। धमधा विकासखण्ड में शासकीय महाविद्यालय है, जिसने धमधा क्षेत्र के आस–पास के गाँवो से छात्र–छात्राएँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते है। इस विकासखण्ड में हर गाँव में प्राथमिक शाला उपलब्ध है।

साक्षारता दर–2011 के अनुसार धमधा पंचायत की औसत साक्षरता दन 75.66 थी, जिसमे पुरूष और महिला साक्षरता क्रमशः 85.72 और 65.72 थी। धमधा विकासखण्ड में कुल साक्षरता 79393 थी, जिसमें पुरूष और महिला क्रमशः 44699, 34694 थी

अन्य सुविधाएँ–

धमधा जनपद पंचायत में कृषि उपज मण्डी, यातायात के साधन, सीटी बस, पुलिस थाना, नगर पंचायत कार्यालय, बस स्टाप, यात्री प्रतिक्षालय, डाकघर, सरकारी बैंक, बैंक सेवा, यातायात के साधन नियमित बस सुविधा, पक्की सड़कें आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

बाल जनसंख्या धमधा–

2011 की जनगणना के अनुसार धमधा तहसील में 0 से 6 साल की उम्र के 16,494 बच्चे यें। जिनमें से 16,494 पुरूष थे जबकि 16,494 महिलाएँ थीं।

शहरी ग्रामीण 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी क्षेत्रों में धमधा, तहसील में कुल 1,434 परिवार रहते है, जबकि 1,434 परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे है। इस प्रकार धमधा तहसील की कुल जनसंख्या का लगभग 5.2 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहता है जबकि 94.8 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। शहरी क्षेत्र में बच्चों की जनसंख्या 787 है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या 15,707 है।

लिंग अनुपात–धमधा तहसील का लिंग अनुपात 1009 है। इस प्रकार प्रत्येक 1000 पुरूषों के लिए धमधा तहसील में 1009 महिलाएँ थीं। 2011 की जनगणना के अनुसार बच्चों का लिंग 991 या जो धमधा तहसील के औसत लिंग अनुपात (1009) से कम है।

अध्याय 4

न्यादर्श खण्ड

न्यादर्श परिवार की आयु समुह का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 01

ग्राम	कुल परिवार	आयु समुह			
		15–24	24–54	55–64	65+
गोढ़ी	20	01	17	02	00
लिमतरा	20	04	14	01	01
कंडरका	20	02	12	03	03
मुरमुंदा	20	05	12	03	03
अछोटी	20	07	09	02	02
योग	100	19	63	12	06
प्रतिशत	–	19%	63%	12%	06%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वेक्षित कृषकों की आयु समूह में (25–54 वर्ष) आयु समूह के कृषिकों की संख्या 63% सवार्धिक है तथा 65 वर्ष से अधिक कृषकों की सबसे कम 6% है तथा शेष उत्तरदाता कृषकों की आयु समूह में 19% (15–24वर्ष) आयु समूह के तथा 12% (55–64वर्ष) आयु समूह के कृषक है।

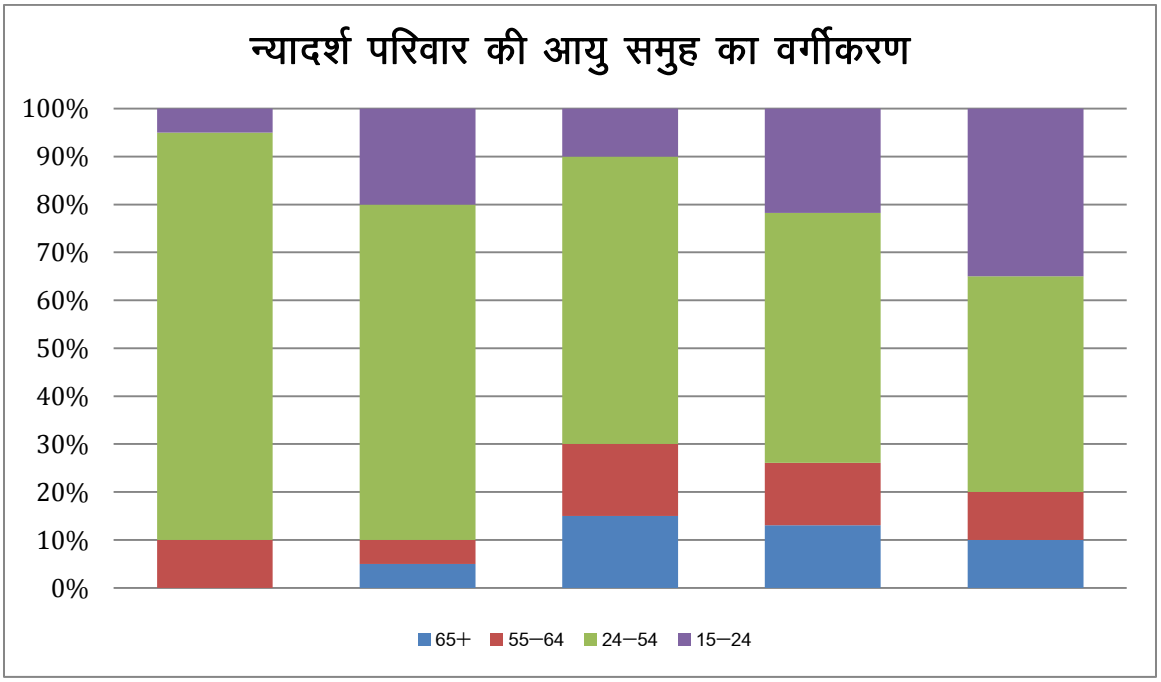

न्यादर्श परिवार की शैक्षणिक स्थिति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 02

ग्राम	कुल परिवार	शैक्षणिक स्थिति		शिक्षा का स्तर				
		शि.	अशि.	प्राथ.	माध्य.	उ.मा.	स्नातक	स्नातकोत्तर
गोढ़ी	20	18	02	08	04	09	00	02
लिमतरा	20	17	03	07	03	06	03	00
कंडरका	20	15	05	09	04	03	00	00
मुरमुंदा	20	17	03	11	03	03	01	00
अछोटी	20	18	02	12	04	08	00	00
योग	100	85	15	47	18	29	04	02
प्रतिशत	–	85%	15%	47%	18%	29%	04%	02%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में न्यादर्श परिवारों की शिक्षा का स्तर का अध्ययन किया गया है कि चयनित 100 न्यादर्श परिवारों में सर्वाधिक 85% शिक्षित तथा 15% अशिक्षित है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की संख्या 47% स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त 02% है, माध्यमिक प्राप्त 18% है उच्च मा. शिक्षा प्राप्त 29% है तथा स्नातक शिक्षा प्राप्त 04% है। इससे ज्ञात होता है कि सर्वाधिक शिक्षा प्राप्त प्राथमिक शिक्षा का है जबकि न्यूनतम शिक्षा प्राप्त स्नातकोत्तर का है।

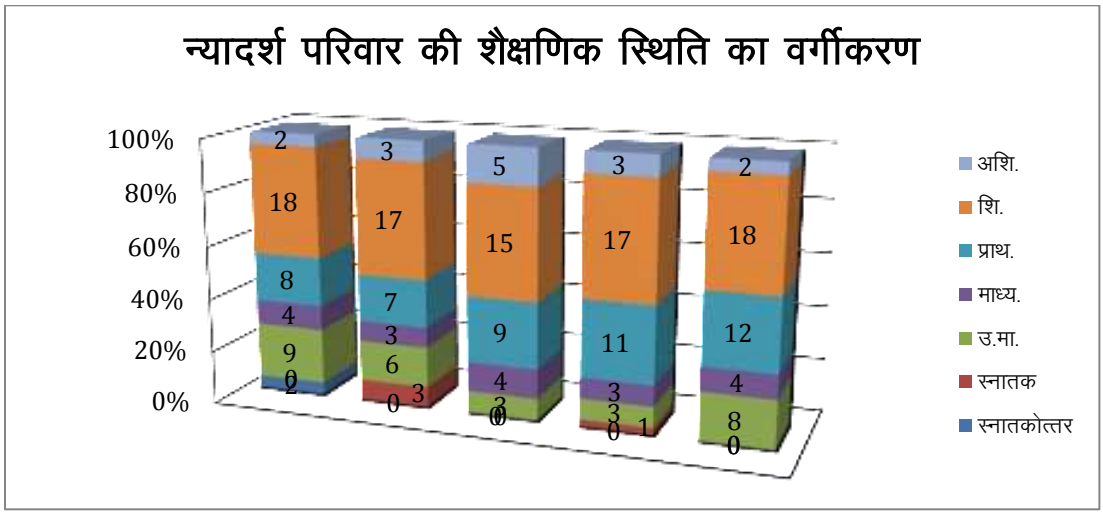

न्यादर्श परिवार की वैवाहिक स्थिति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 03

ग्राम	कुल परिवार	लिंग			वैवाहिक स्थिति			
		पुरूष	महिला	योग	विवाहित	अविवाहित	विधवा	विधुर
गोढ़ी	20	17	03	20	17	03	00	00
लिमतरा	20	14	06	20	16	02	02	00
कंडरका	20	15	05	20	18	02	00	00
मुरमुंदा	20	18	02	20	17	03	01	00
अछोटी	20	18	02	20	16	02	01	00
योग	100	82	18	100	84	12	04	00
प्रतिशत	–	82%	18%	100 %	84%	12%	04%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में चयनित कुल 100 कृषक परिवारों में पुरूषों की संख्या 82% है तथा महिलाओं की संख्या 18% है। इसमें 84% कृषक विवाहित है तथा 4% कृषक विधवा है तथा अविवाहितों कृषक 12% है।

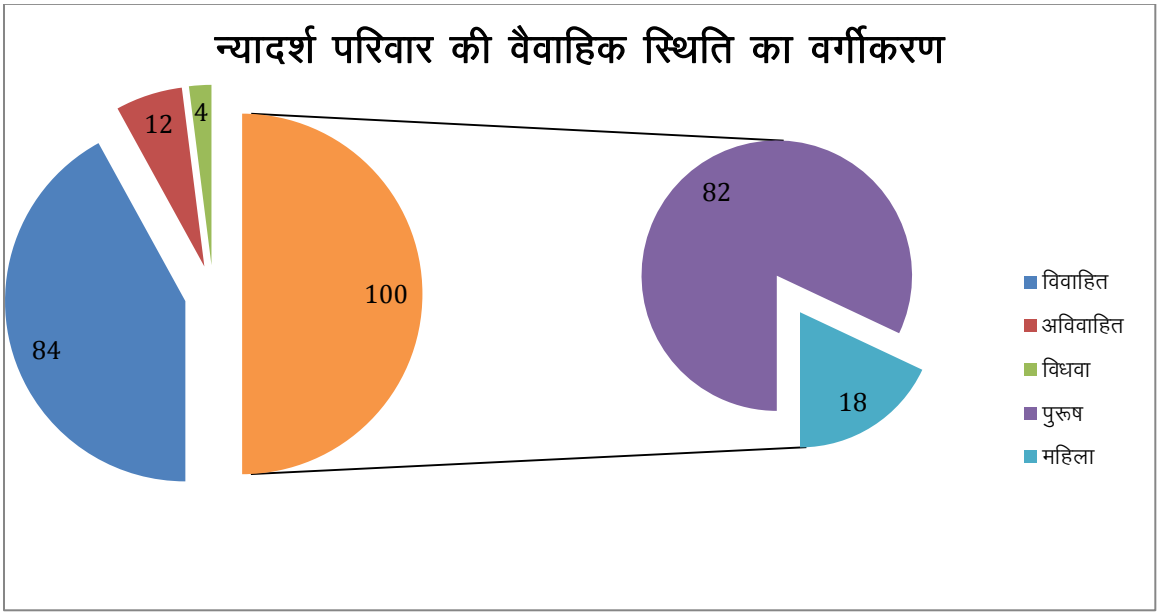

न्यादर्श परिवार की सिंचित एवं असिंचित भूमिका वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 04

ग्राम	कुल परिवार	कृषि भूमि	
		सिंचित	असिंचित
गोढ़ी	20	19	01
लिमतरा	20	20	00
कंडरका	20	18	02
मुरमुंदा	20	20	00
अछोटी	20	20	00
योग	100	97	03
प्रतिशत	–	97%	03%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 04 में न्यादर्श कृषक परिवारों की सिंचित एवं असिंचित भूमि का माध्यम किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि कुल 100% कृषक परिवारों में 97% कृषकों के पास सिंचाई सुविधा उपलब्ध है। सिंचित भूमि है तथा 03% असिंचित भूमि है। जिसमें सिंचाई भूमि की उपलब्ध सुविधा नहर, बोरवेल, इनके प्रमुख साधन है। जबकि असिंचित भूमि जिसमें सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नही है अर्थात् मानसून पर निर्भर है।

असिंचित

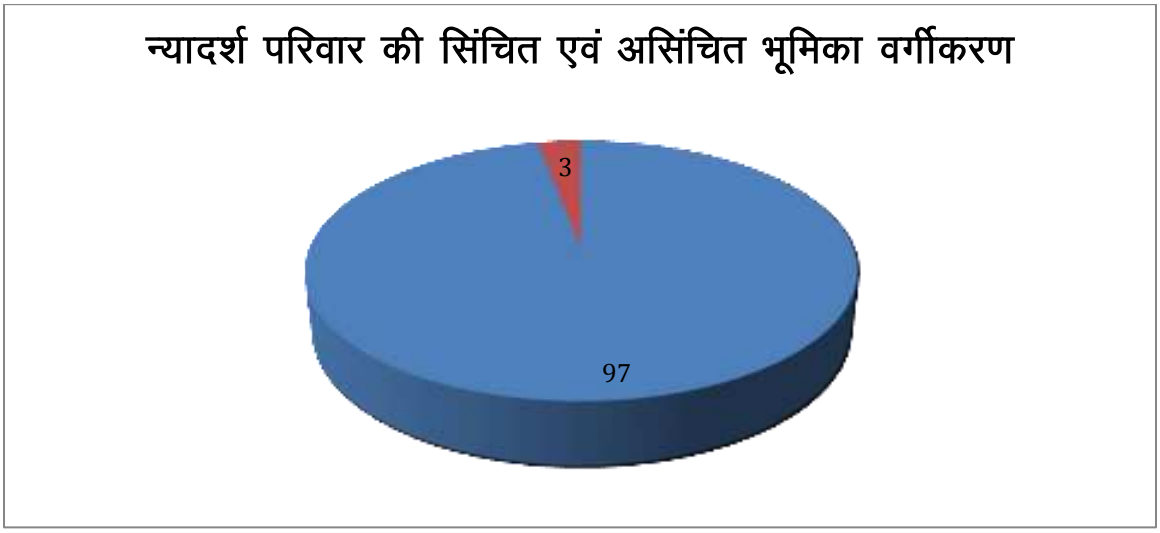

न्यादर्श परिवार की कृषकों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 05

ग्राम	कुल परिवार	कृषक वर्ग			
		सीमांत	अर्ध्द मध्यम	मध्यम	उच्च
गोढ़ी	20	18	01	01	00
लिमतरा	20	17	03	00	00
कंडरका	20	16	02	02	00
मुरमुंदा	20	18	01	00	01
अछोटी	20	15	03	01	01
योग	100	84	10	04	02
प्रतिशत	–	84%	10%	04%	02%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में चयनित कृषक परिवारों में सर्वाधिक सीमांत कृषक परिवार 84% है, उच्च कृषक 02% है, तथा अर्ध्दमध्यम कृषक 10% है, मध्यम कृषक 04% है।

सर्वेक्षित परिवारों में सर्वाधिक कृषक सीमांत श्रेणी के है जबकि न्यूनतम श्रेणी के कृषक उच्च वर्ग के कृषक है।

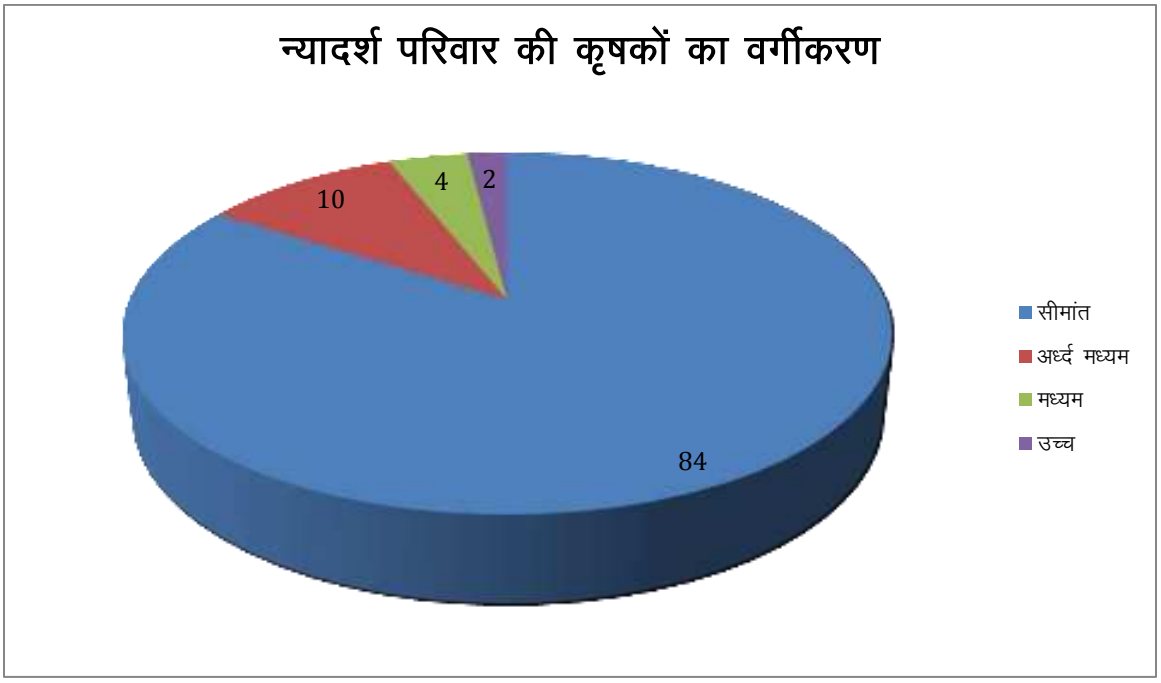

न्यादर्श परिवार की कृषि पध्दति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 06

ग्राम	कुल परिवार	कृषक वर्ग		
		परम्परागत	आधुनिक कृषि	मिश्रित
गोढ़ी	20	00	07	13
थ्लमतरा	20	00	05	15
कंडरका	20	00	11	09
म्रमुंदा	20	00	13	07
अछोटी	20	00	11	09
योग	100	00	47	53
प्रतिशत	–	00%	47%	53%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्तमान में पूर्णतः परम्परागत् तकनीक से कोई भी कृषि कार्य नहीं कर रहे हैं। अधिकांश कृषक 53% परम्परागत एवं आधुनिक कृषि, मिश्रित पध्दति का प्रयोग कृषि कार्य हेतु कर रहे हैं तथा 47% कृषक परिवार आधुनिक तकनीकों की सहायता से कृषि कार्य कर रहे हैं।

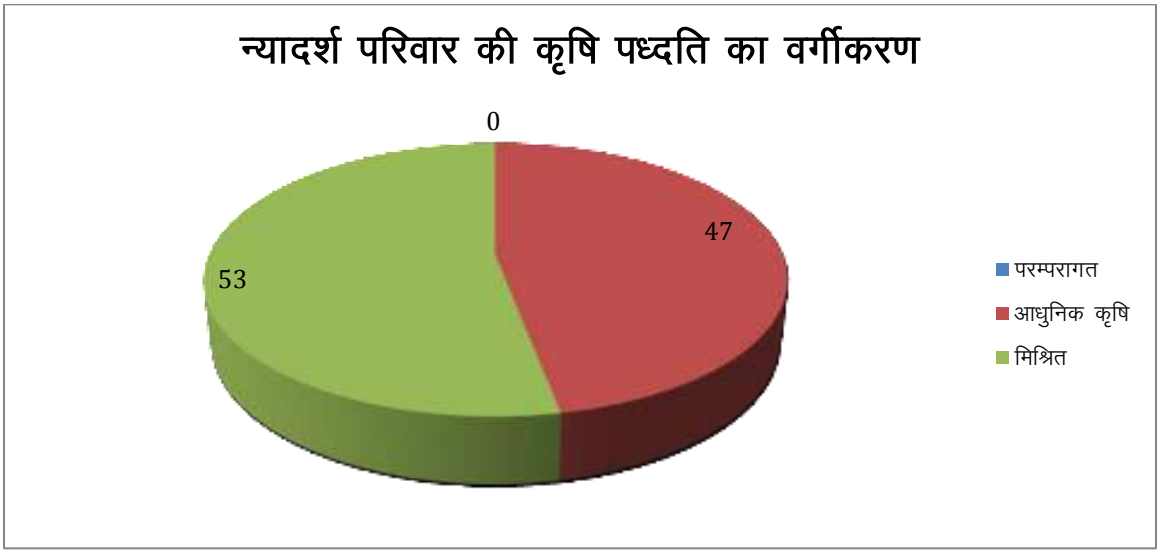

सर्वेक्षित परिवारों की परम्परागत कृषि उपकरण का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 07

ग्राम	कुल परिवार	परम्परागत कृषि उपकरणो का उपयोंग					
		हल	बेलन	कलारी	कोपर	उड़ानी पंखा	अन्य
गोढ़ी	20	12	05	05	11	05	00
लिमतरा	20	13	03	03	12	03	00
कंडरका	20	09	01	01	08	01	00
मुरमुंदा	20	08	00	00	05	00	00
अछोटी	20	06	00	00	05	00	00
योग	100	48	09	09	41	09	00
प्रतिशत	–	48%	09%	09%	41%	09%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 07 स्पष्ट है कि चयनित परिवारों में परम्परागत कृषि उपकरण का उपयोग का अध्ययन किया गया है। जिसमें हल का उपयोग 48% उपयोग करते है, कलारी, उड़ानी पंखा का उपयोग 09% कृषक उपयोग करते है तथा कोपर का उपयोग 41% कृषकों द्वारा किया जाता है।

परम्परागत कृषि उपकरणों का उपयोग में हल का उपयोग सर्मथक है तथा बोलन, कलारी उड़ानी पंखा का उपयोग समान रूप से किया जाता है।

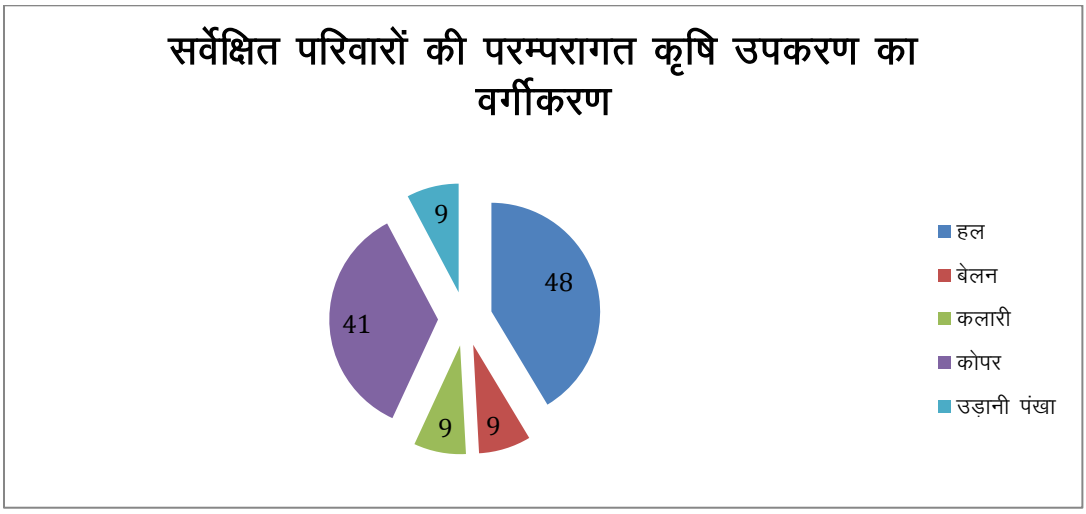

सर्वेक्षित परिवारों की फसल चक्र का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 08

ग्राम	कुल परिवार	फसल चक्र		
		एक फसल	दो फसल	तीन फसल
गोढ़ी	20	18	02	00
लिमतरा	20	17	03	00
कंडरका	20	16	04	00
मुरमुंदा	20	15	05	00
अछोटी	20	16	04	00
योग	100	82	18	00
प्रतिशत	–	82%	18%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल 100% चयनित परिवारों में 82% कृषक एक फसल लेते हैं, जबकि 18% कृषक दो फसल लेते है। एक फसल में केंरल धान फसल लिया जाता है तथा दो फसल में धान, गेंहूँ, चना, मटर, सब्जी आदि फसल लगाई जाती है।

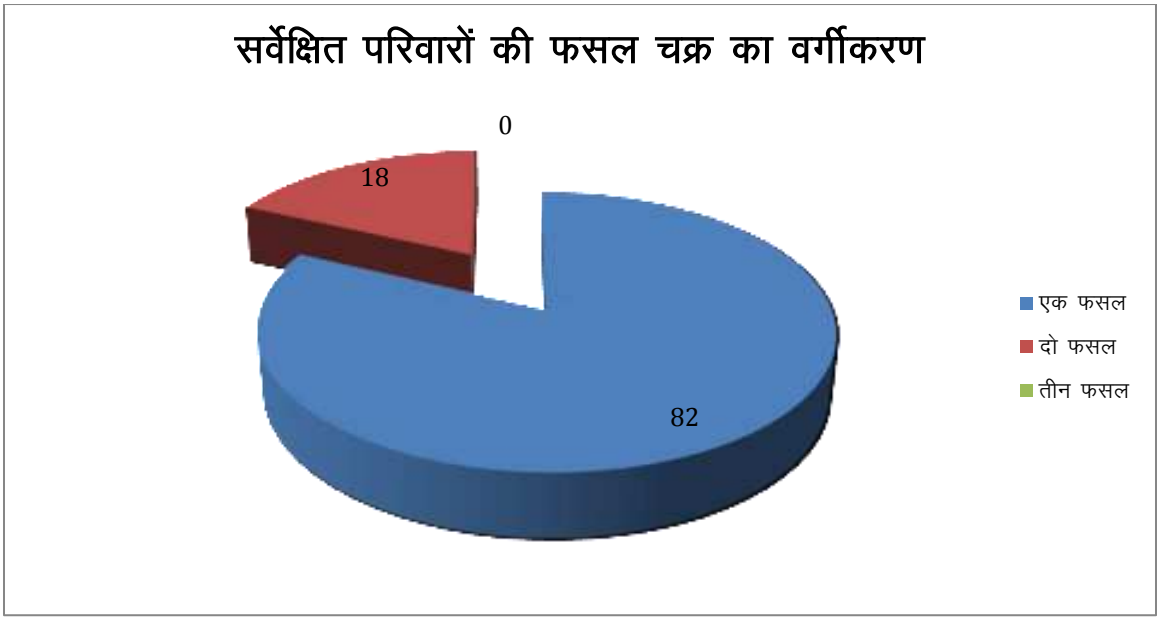

न्यादर्श परिवारों में सहकारी समितियों द्वारा बीजों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 09

ग्राम	कुल परिवार	फसल चक्र	
		हाँ	न्हीं
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	17	03
मुरमुंदा	20	18	02
अछोटी	20	19	01
योग	100	88	12
प्रतिशत	–	88%	12%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 10 में सर्वेक्षित चयनित कुल 100% परिवारों में सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग 88% कृषकों द्वारा किया गया तथा 12% कृषकों ने सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग नही किया गया है।

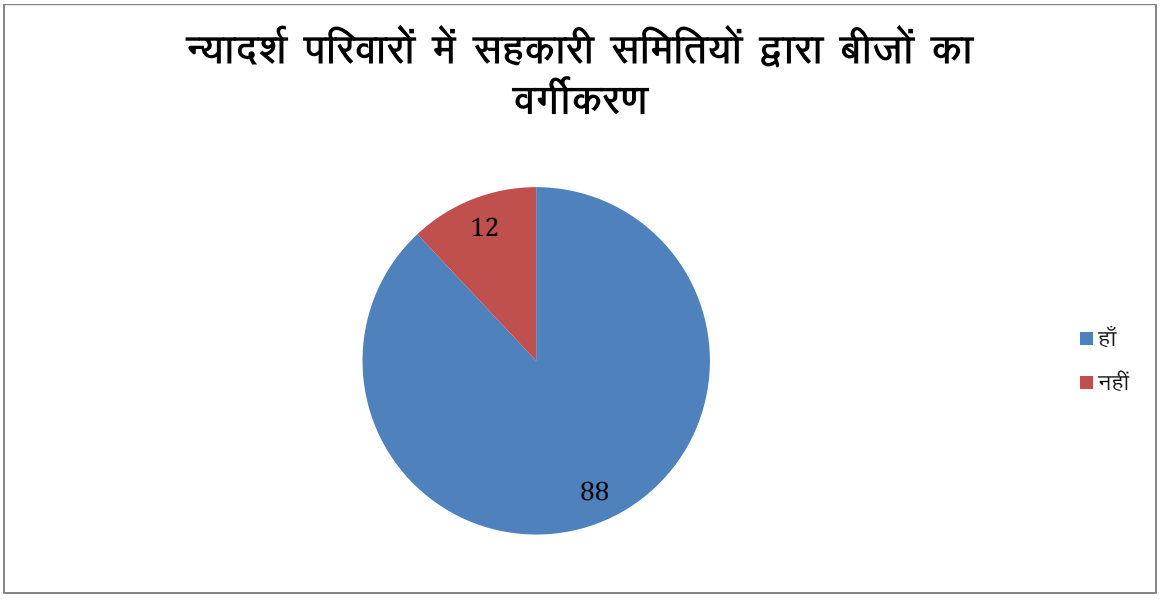

न्यादर्श परिवारों की बोआई विधि का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 10

ग्राम	कुल परिवार	बोआई विधि	
		लेई विधि	रोपा विधि
गोढ़ी	20	03	17
लिमतरा	20	02	18
कंडरका	20	05	15
मुरमुंदा	20	03	17
अछोटी	20	04	16
योग	100	17	83
प्रतिशत	–	17%	83%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

प्रस्तुत तालिका में सर्वेक्षित कुल परिवारों में कृषक रोपा विधि से 83% फसल की बोआई करते है तथा लई विधि से 17% बोआई करते है यहाँ अध्ययन से देखा गया है कि ज्यादातर कृषक रोपा विधि से कृषि कार्य करते है।

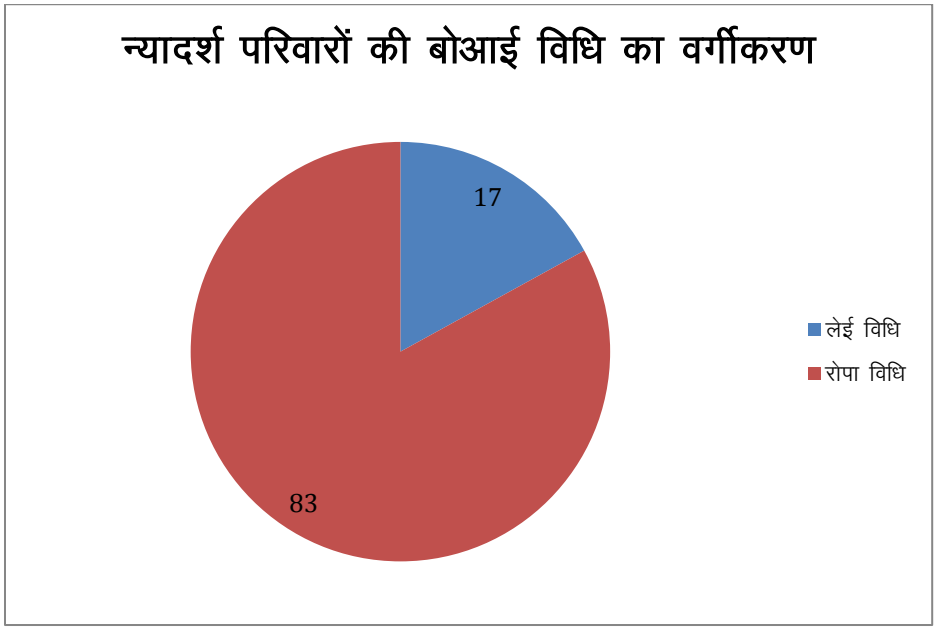

सर्वेक्षित परिवारों की फसल चक्र का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 11

ग्राम	कुल परिवार	फसल चक्र		
		एक फसल	दो फसल	तीन फसल
गोढ़ी	20	18	02	00
लिमतरा	20	17	03	00
कंडरका	20	16	04	00
मुरमुंदा	20	15	05	00
अछोटी	20	16	04	00
योग	100	82	18	00
प्रतिशत	–	82%	18%	00

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल 100 चयनित परिवारों में 82% कृषक एक फसल लेते है। जबकि 18% कृषक दो फसल लेते है। एक फसल में केवल धान फसल लिया जाता है, तथा दो फसल में धान, गेहूँ, चना, मटर, सब्जी आदि फसल लगाई जाती है।

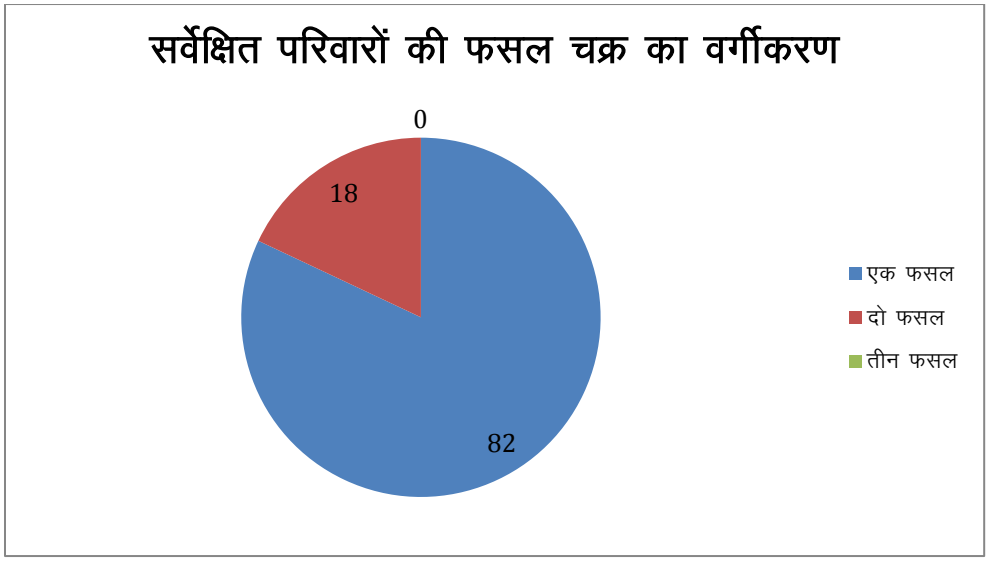

न्यादर्श परिवारों में सहकारी समितियों द्वारा बीजों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 12

ग्राम	कुल परिवार	सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग	
		हाँ	न्ही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	17	03
मुरमुंदा	20	18	02
अछोटी	20	19	01
योग	100	88	12
प्रतिशत	–	88%	12%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक 10 में सर्वेक्षित चयनित कुल 100 परिवारों में सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग 88% कृषकों द्वारा किया गया तथा 12% कृषकों ने सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग नहीं किया गया है।

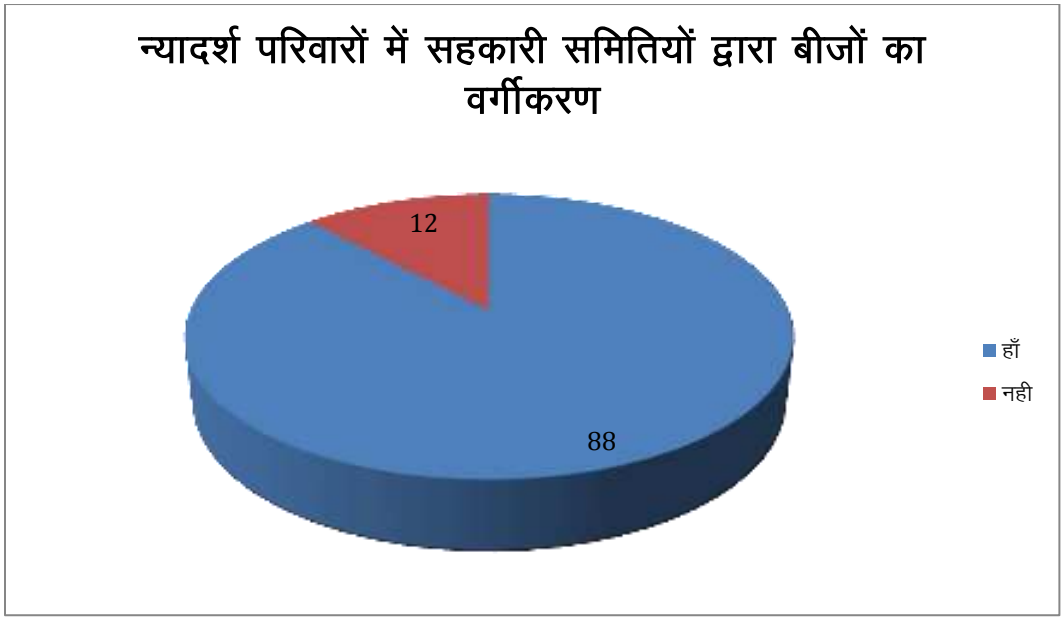

न्यादर्श परिवारों की सहकारी समितियों द्वारा रासायनिक उर्वरकों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 13

ग्राम	कुल परिवार	सहकारी समितियों द्वारा रासायनिक उर्वरको का प्रयोग	
		हाँ	न्ही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	14	06
मुरमुंदा	20	17	03
अछोटी	20	16	04
योग	100	81	19
प्रतिशत	–	81%	19%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल चयनित कृषक परिवारों में 81% रासायनिक उर्वरकों का प्रयोंग करते है जबकि 19% कृषक परिवारों सहकारी समितियों द्वारा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नहीं करते है।

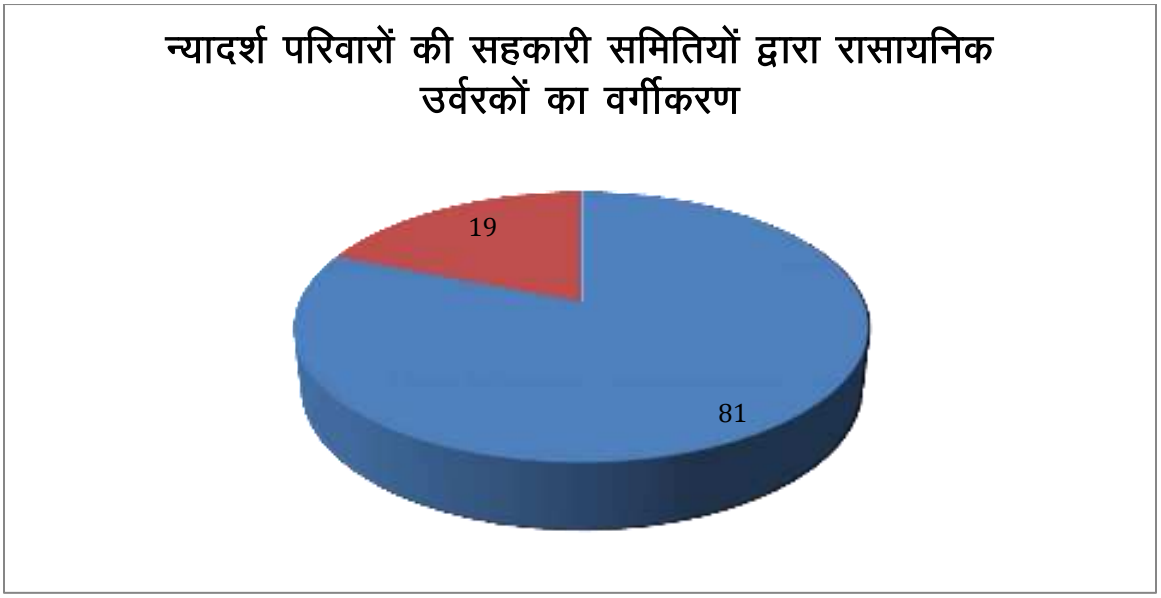

न्यादर्श परिवारों की रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से उत्पादकता मे प्रभाव का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 14

ग्राम	कुल परिवार	रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से उत्पादकता में प्रभाव	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	20	00
लिमतरा	20	20	00
कंडरका	20	20	00
मुरमुंदा	20	20	00
अछोटी	20	20	00
योग	100	100	00
प्रतिशत	–	100%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका से स्पष्ट है कि कुल चयनित 100% कृषक परिवारों में से रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से उत्पादकता में प्रभाव 100% कृषकों को प्रभाव पड़ रहा है। इससे ज्ञात होता है कि रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करने से उत्पादकता में सभी कृषकों के उत्पादन में प्रभाव पड़ रहा है।

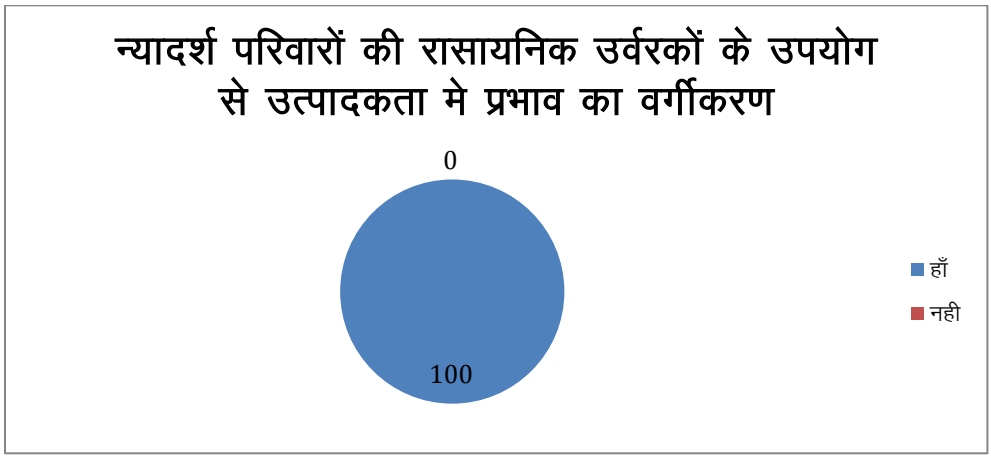

न्यादर्श कृषकों के कीटनाशक छिड़काव के नवीन तकनीकों का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 15

ग्राम	कुल परिवार	कीटनाशक छिड़काव के नवीन तकनीकों का उपयोग				
		हाँ	नही	फूट स्पियर	ड्रोन स्पियर	अन्य
गोढ़ी	20	20	00	00	20	00
लिमतरा	20	20	00	00	20	00
कंडरका	20	20	00	00	20	00
मुरमुंदा	20	20	00	00	20	00
अछोटी	20	20	00	00	20	00
योग	100	100	00	00	100	00
प्रतिशत	–	100%	00%	00%	100%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में चयनित कुल 100% कृषक परिवारों में कीटनाशक छिड़काव के नवीन तकनीकों का अध्ययन किया गया है, जिसमें फूट स्पियर का कोई भी कृषक उपयोग नही करते है जबकि ड्रोन स्पियर का उपयोग 100% कृषक उपयोंग में लाते हैं।

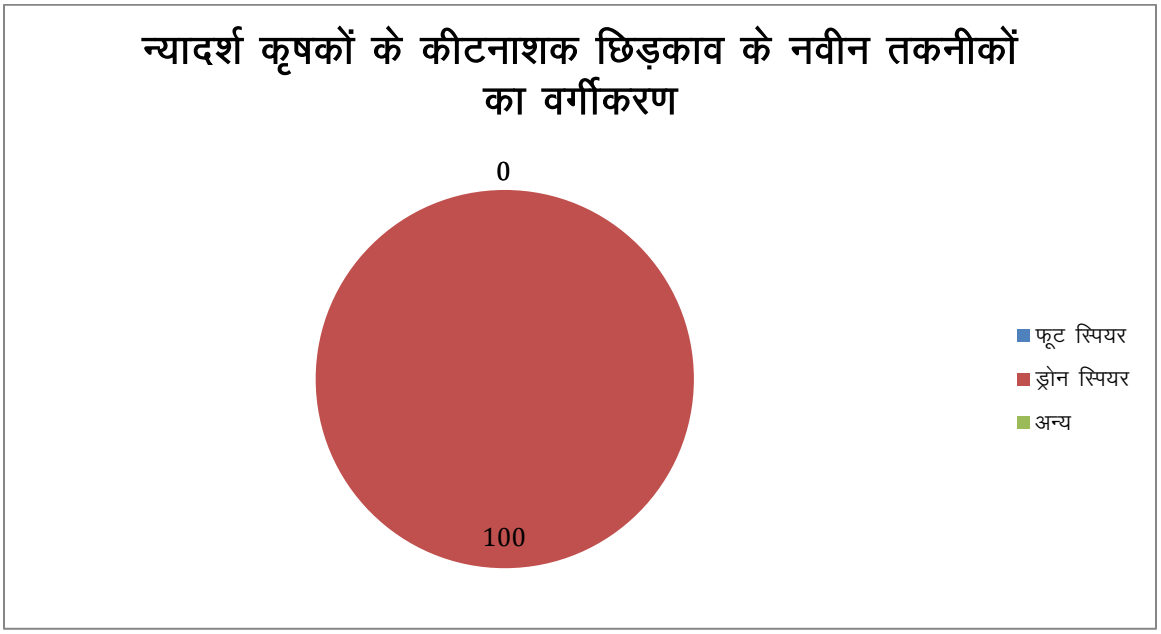

न्यादर्श कृषकों के सिंचाई साधन का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 16

ग्राम	कुल परिवार	सिंचाई सुविधाएँ				
		तालाब	कुर्सी	बाँध	बोरवेल	अन्य
गोढ़ी	20	03	00	12	05	00
लिमतरा	20	04	00	13	03	00
कंडरका	20	02	00	09	06	00
मुरमुंदा	20	03	00	16	04	00
अछोटी	20	00	00	17	03	00
योग	100	12	00	67	21	00
प्रतिशत	–	12%	00%	67%	21%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में चयनित कुल 100% कृषक परिवारों के सिंचाई के साधन इस प्रकार है, 12% कृषकों को तालाब की सुविधा उपलब्ध है, बांध में 67% है, तथा बोरवेल से 21% सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यहाँ ज्यादातर कृषकों को नहर पानी से सिंचाई की सुविधा मिलती है।

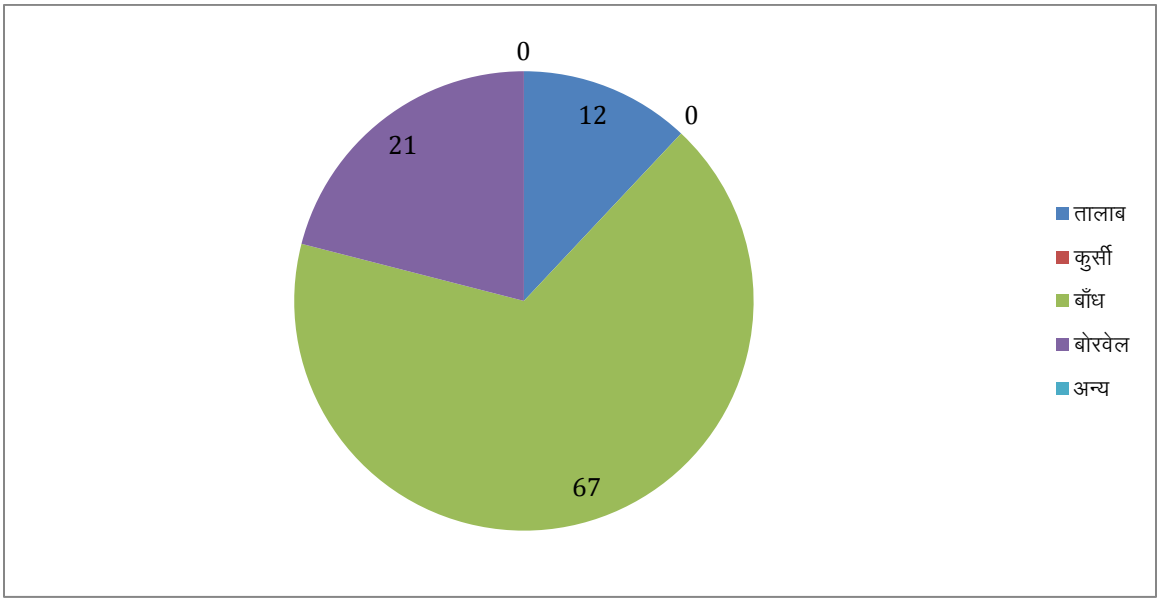

सर्वेक्षित परिवारों में कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 17

ग्राम	कुल परिवार	कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	19	01
कंडरका	20	20	00
मुरमुंदा	20	19	01
अछोटी	20	20	00
योग	100	96	04
प्रतिशत	–	96%	04%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित परिवारों में कृषि पंजीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता का अध्ययन किया गया है जिसमें 96% कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकल उत्पादकता में वृध्दि हेाता है तथा 04% कृषक का कहना है कि कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता में वृध्दि नही होता है।

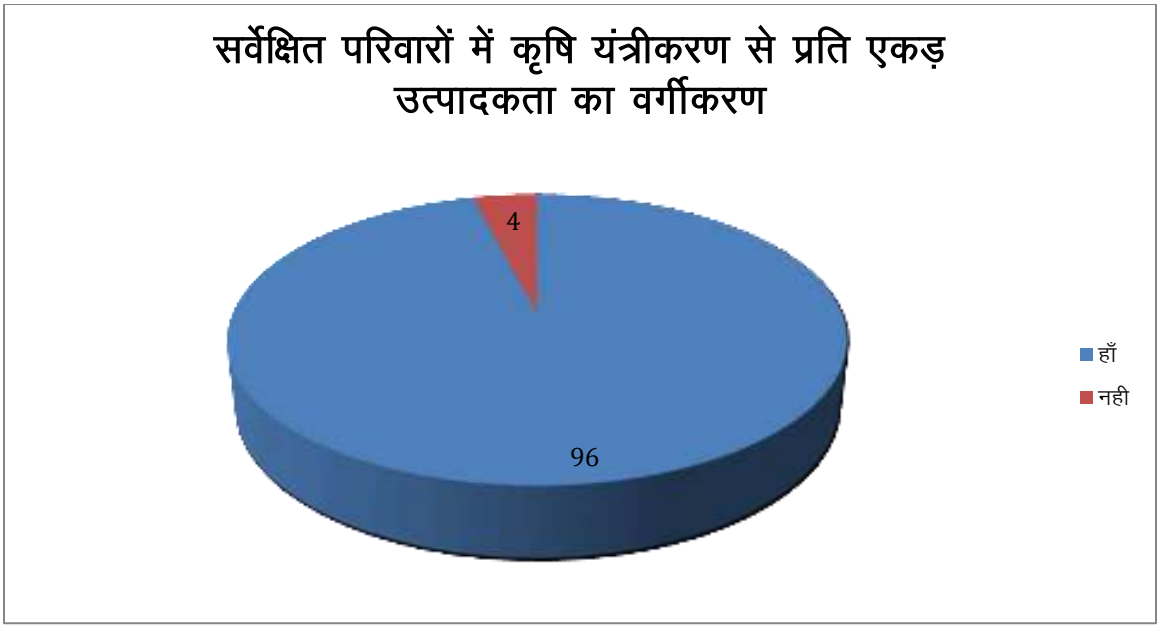

न्यादार्श परिवारों में मृदा परीक्षण का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 18

ग्राम	कुल परिवार	कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	17	03
कंडरका	20	18	02
मुरमुंदा	20	16	04
अछोटी	20	19	01
योग	100	88	12
प्रतिशत	–	88%	12%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में सर्वेक्षित चयनित कुल 100 परिवारों में मृदा परीक्षण का अध्ययन किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि कुल 100 परिवारों में सं 88% कृषक परिवार मृदा का परिक्षण कराते है जबकि 12% कृषक परिवार मृदा का परिक्षण नही कराते है।

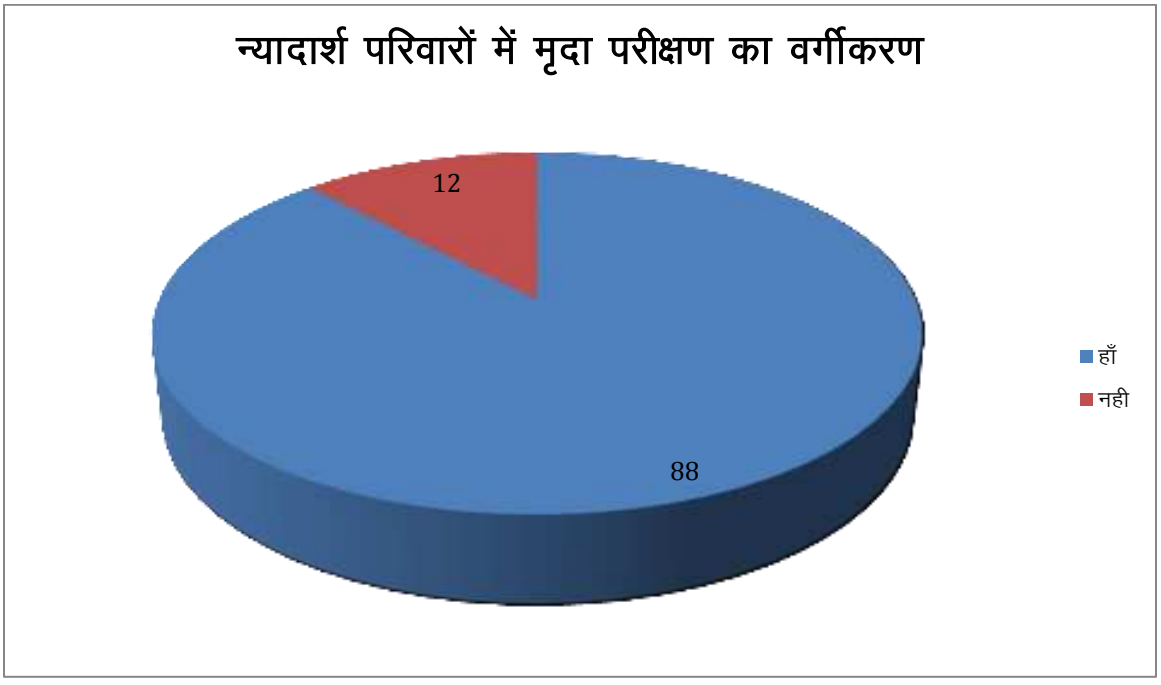

सर्वेक्षण कृषकों के कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्य का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 19

ग्राम	कुल परिवार	सिंचाई सुविधाएँ					
		हाँ	नहीं	पशु पालन	मछली पालन	कुटकुट पालन	अन्य
गोढ़ी	20	03	17	00	03	00	00
लिमतरा	20	02	18	00	00	02	00
कंडरका	20	00	20	00	00	00	00
मुरमुंदा	20	02	18	00	02	00	00
अछोटी	20	01	19	00	00	01	00
योग	100	08	92	00	05	03	00
प्रतिशत	–	08%	92%	00%	05%	03%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में न्यादर्श कृषक परिवारों में 8% लोग कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्य करते हैं जबकि 5% मछली पालन तथा 03% कृषक परिवारा कुटकुट पालन करते है। जबकि 92% लोग कृशि के अतिरिक्त अन्य कार्य नहीं करते है।

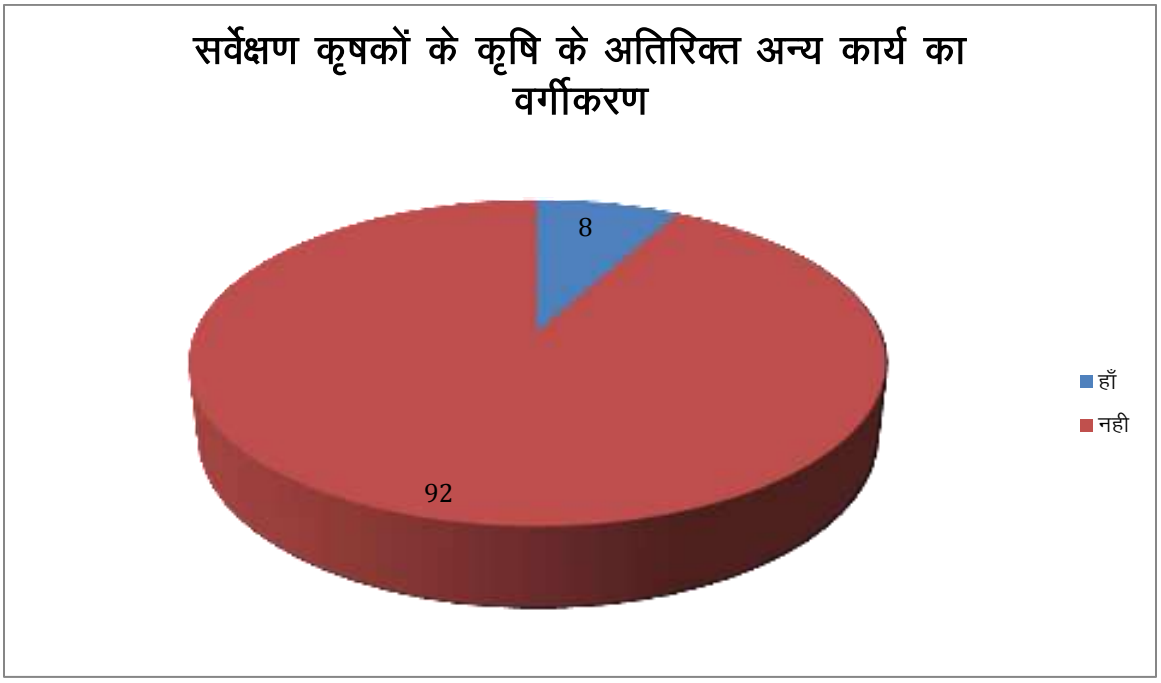

न्यादार्श कृषक परिवारों की बैंठक में बचत खाता का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 20

ग्राम	कुल परिवार	कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	20	00
लिमतरा	20	20	00
कंडरका	20	18	02
मुरमुंदा	20	19	01
अछोटी	20	18	02
योग	100	95	05
प्रतिशत	–	95%	05%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उरोक्त तालिका में अध्ययन से ज्ञात होता है कि चयनित कुल 100 परिवारों में से 95% कृषक परिवारों के पास बैंक में बचत खाता उपलब्ध है तथा 5% कृषक परिवारों के पास बचत खाता उपलब्ध नही है।

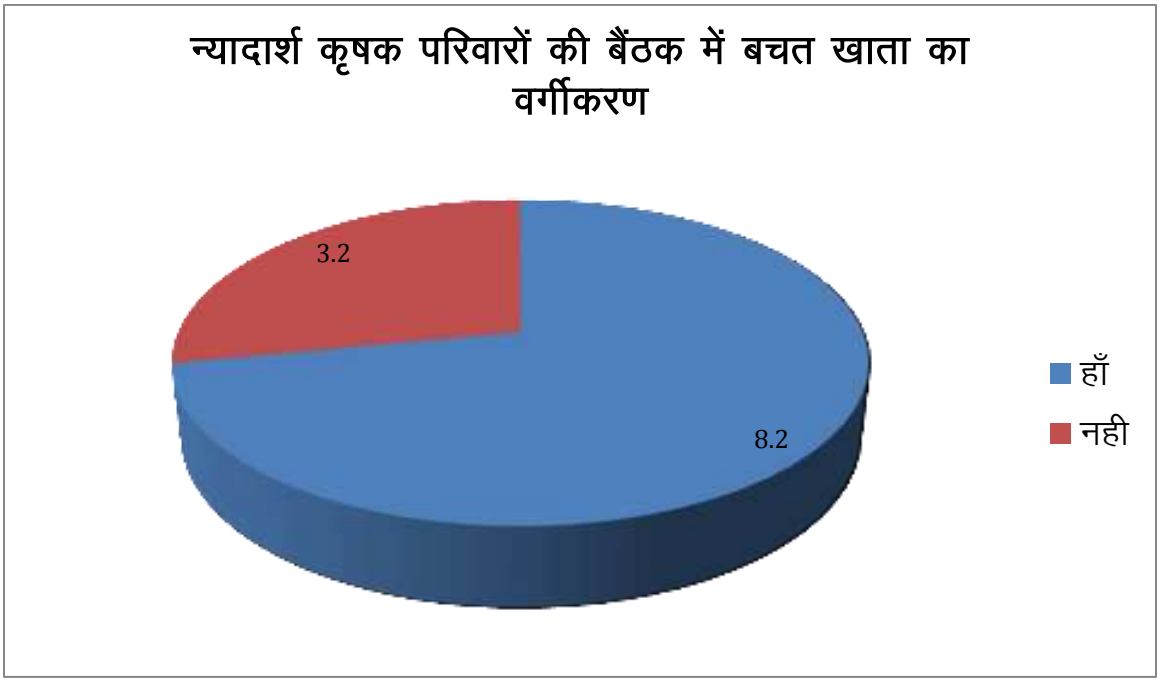

न्यादार्श कृषक के कृषि कार्य के लिए ऋण का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 21

ग्राम	कुल परिवार	कृषि कार्य के लिए ऋण				
		हाँ	नही	साहूकार	बैंक	बिचोलिया
गोढ़ी	20	20	00	00	20	00
लिमतरा	20	20	00	00	20	00
कंडरका	20	20	00	00	20	00
मुरमुंदा	20	20	00	00	20	00
अछोटी	20	20	00	00	20	00
योग	100	100	00	00	100	00
प्रतिशत	–	100%	00%	00%	100%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका से स्पष्ट है कि कुल सर्वेक्षित परिवारों में 100 कृषक परिवार बैंक से कृषि कार्य के लिए ऋण लेते है तथा साहुकार एवं बिचौलिया 00% कृषि के लिए ऋण नही लेते है।

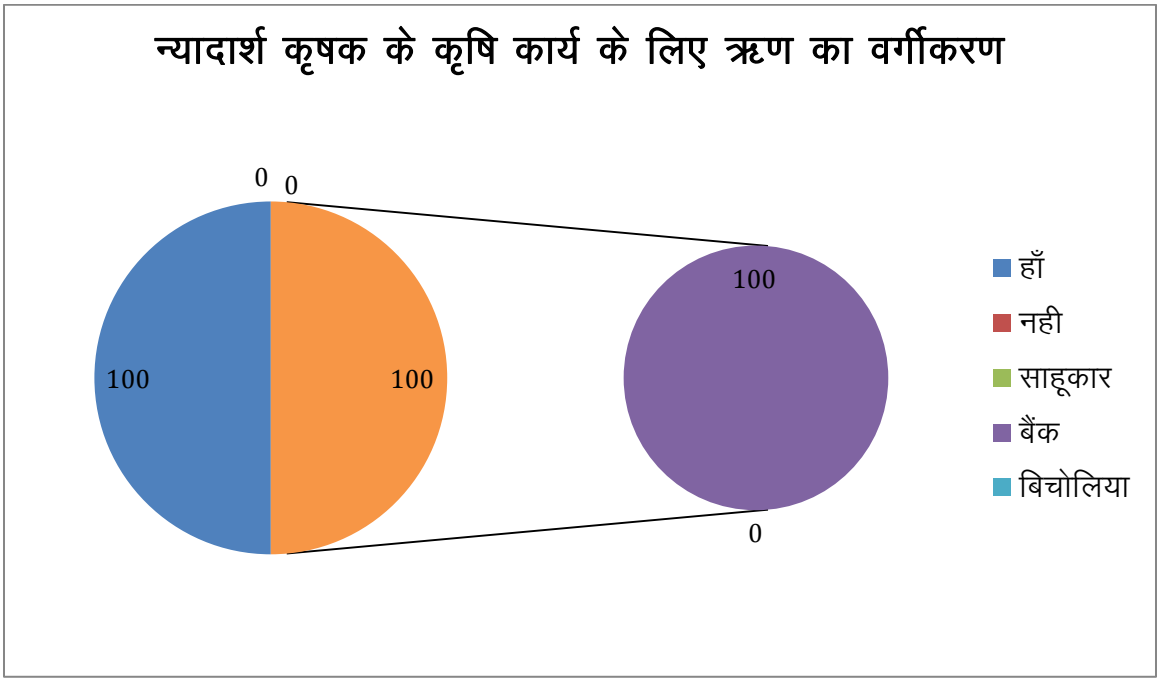

सर्वेक्षित कृषकों के कृषि कार्य में सरकारी योजना का लाभ का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 22

ग्राम	कुल परिवार	कृषि कार्य में सरकारी योजना का लाभ	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	19	01
मुरमुंदा	20	20	00
अछोटी	20	17	03
योग	100	90	10
प्रतिशत	–	90%	10%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका से स्पष्ट है कि कुल चयनित परिवारों में 90% कृषक कृषि कार्य में सहकारी योजना का लाभ उठाते है तथा 10% कृषक परिवार कृषि कार्य में सहकारी योजना का लाभ प्राप्त नही कर पाते है।

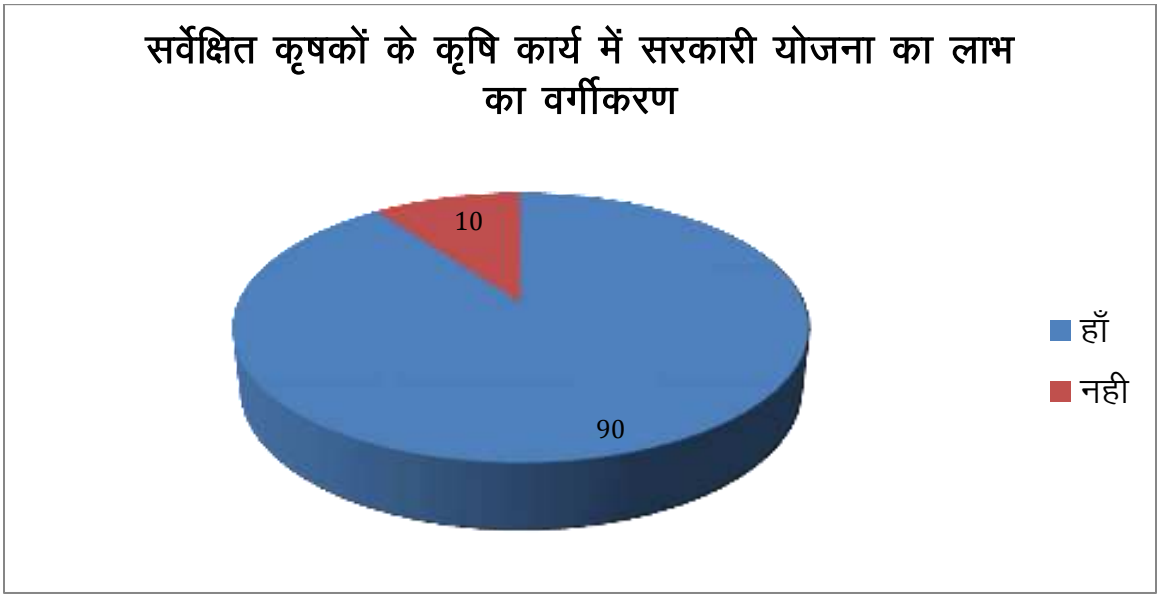

न्यादर्श परिवारों की बंजर भूमि लाभ का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 24

ग्राम	कुल परिवार	बंजर भूमि	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	00	20
लिमतरा	20	06	14
कंडरका	20	08	12
मुरमुंदा	20	00	20
अछोटी	20	00	20
योग	100	14	86
प्रतिशत	–	14%	86%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में कुल चयनित 100 कृषक परिवारों में से 14% कृषक परिवारों के पास बंजर भूमि उपलब्ध है तथा 86% कृषकों के पास बंजर भूमि उपलब्ध नही है

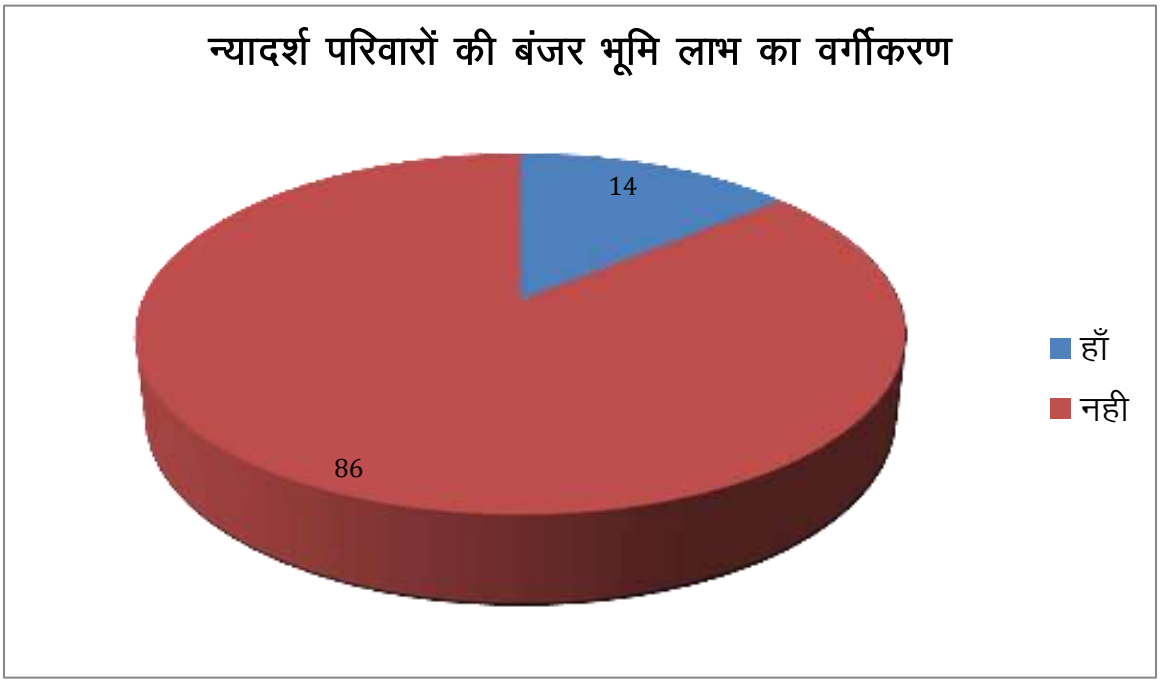

न्यादर्श परिवारों की कृषिगत आय से परिवार का आवश्यकता की पूर्ति का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 25

ग्राम	कुल परिवार	कृषिगत आय से परिवार का आवश्यकता की पूर्ति	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	11	09
लिमतरा	20	07	13
कंडरका	20	12	08
मुरमुंदा	20	07	13
अछोटी	20	06	14
योग	100	43	57
प्रतिशत	–	43%	57%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में न्यादर्श कृषक परिवारों की कृषिगत आय से परिवार की आवश्यकता की पूर्ति का अध्ययन किया गया है। जिसमें 43% कृषिगत आय से आवश्यकता की पूर्ति हो पाती है तथा 57% कृषक परिवारों की आवश्यकता की पूर्ति नही हो पाता है।

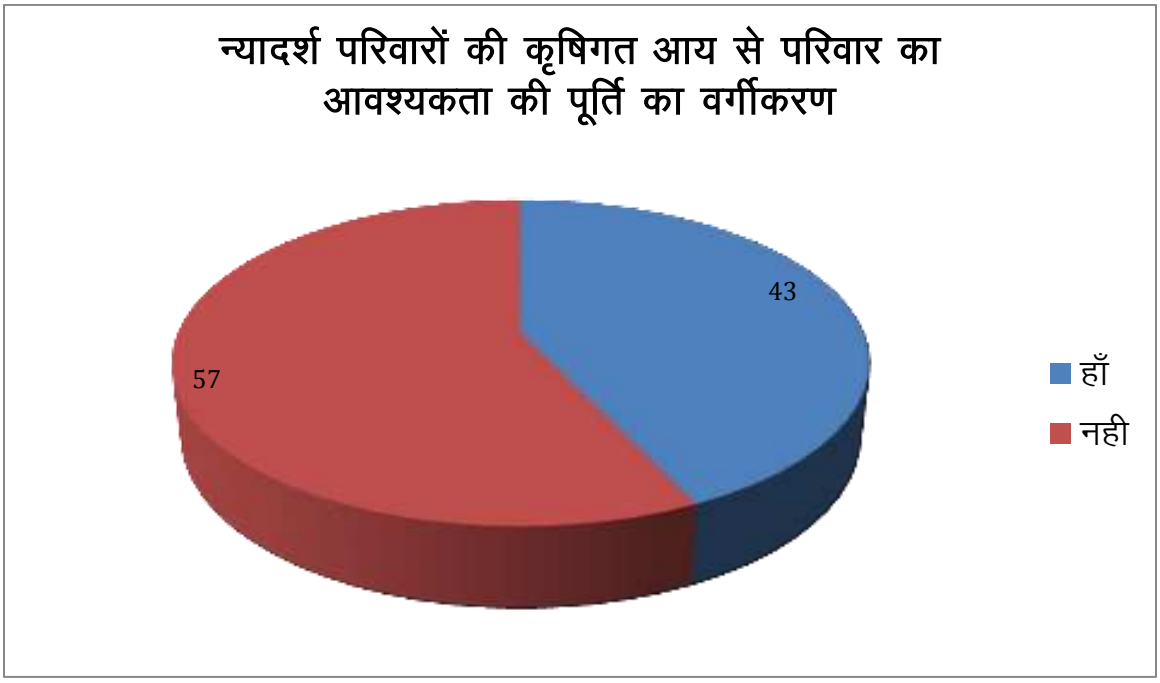

न्यादर्श परिवारों की कृषि कार्य संबंधी सलाह का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 26

ग्राम	कुल परिवार	कृषि कार्य संबंधी सलाह ग्राम सेवक से	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	17	03
मुरमुंदा	20	15	05
अछोटी	20	18	02
योग	100	84	16
प्रतिशत	–	84%	16%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में कृषि कार्य संबंधी सलाह ग्राम सेवक से 84% कृषक परिवार सलाह लेते है जबकि 16% कृषक परिवार कृषि कार्य सबंधी सलह 16% कृषक परिवार कृषि कार्य संबंधी सहाल ग्राम सेवक से सलाह नहीं लेते है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि कृषि कर्य में 84% कृषक परिवार ग्राम सेवक से सलाह लेते है तथा 16% कृषक परिवार ग्राम सेवक से सलाह नही लेते है।

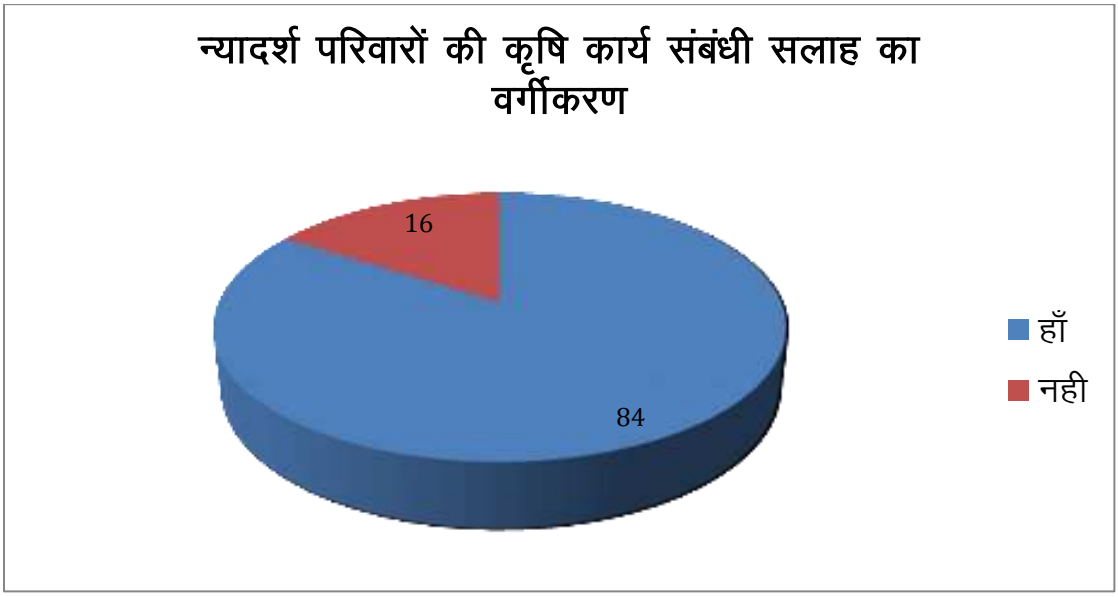

न्यादर्श परिवारों की मिट्टी का परीक्षण कृषि सेवा केन्द्रो में का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 27

ग्राम	कुल परिवार	मिट्टी का परीक्षण कृषि सेवा केन्द्रो में	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	12	08
लिमतरा	20	18	02
कंडरका	20	16	04
मुरमुंदा	20	17	03
अछोटी	20	20	00
योग	100	83	17
प्रतिशत	–	83%	17%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में सर्वेक्षित परिवारों में मिट्टी का परीक्षण कृषि सेवा केन्द्रों में 83% कृषक परिवार द्वारा मिट्टी का परिक्षण कृषि सेवा केन्द्र में किया जाता है तथा 17% कृषक परिवार द्वारा मिट्टी का परीक्षण कृषि सेवा केन्द्र में नही कराते है।

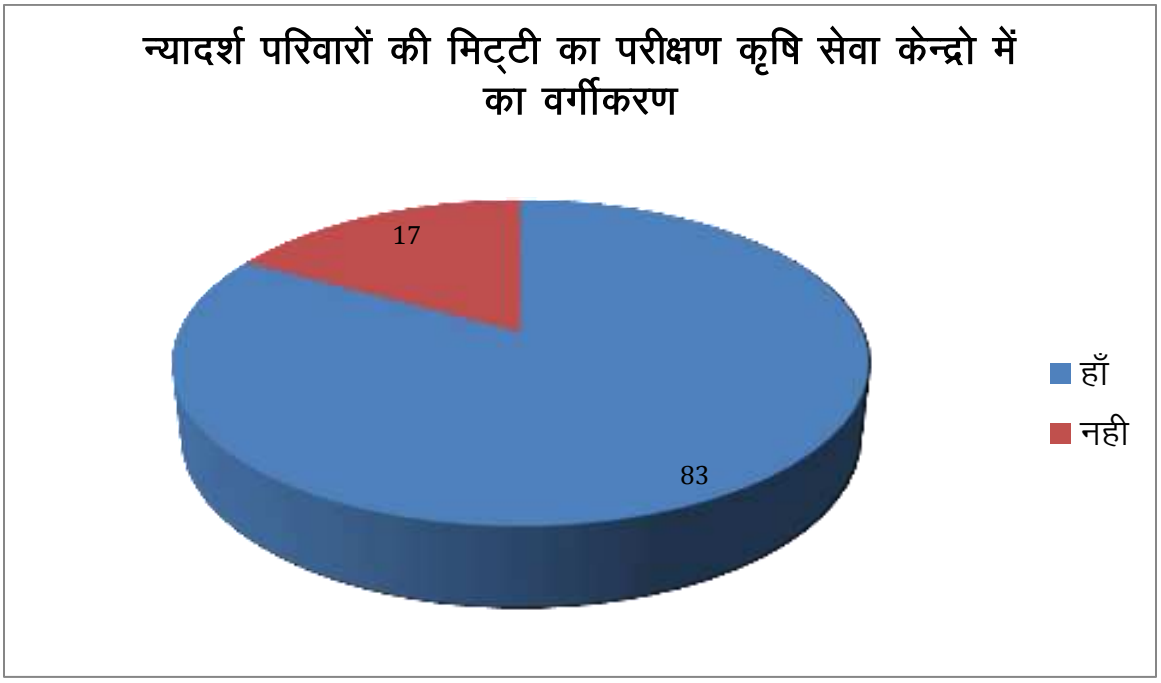

सर्वेक्षित परिवारों में कृषि कार्य के नए तकनीकों संबंधी प्रशिक्षण का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 28

ग्राम	कुल परिवार	कृषि कार्य के नए तकनीकों संबंधी प्रशिक्षण	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	16	04
लिमतरा	20	14	06
कंडरका	20	18	02
मुरमुंदा	20	16	04
अछोटी	20	17	03
योग	100	81	19
प्रतिशत	–	81%	19%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में न्यादर्श कृषकों द्वारा कृषि कार्य के नए तकनीकों से संबंधी प्रशिक्षण संबंधी अध्ययन किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि कुल 100 न्यादर्श परिवारों में से 81% कृषक परिवारों को कृषि कार्य के नए नकनीको से संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त होता है जबकि 19% कृषकों को नए तकनीकों संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त नही हो पाती है।

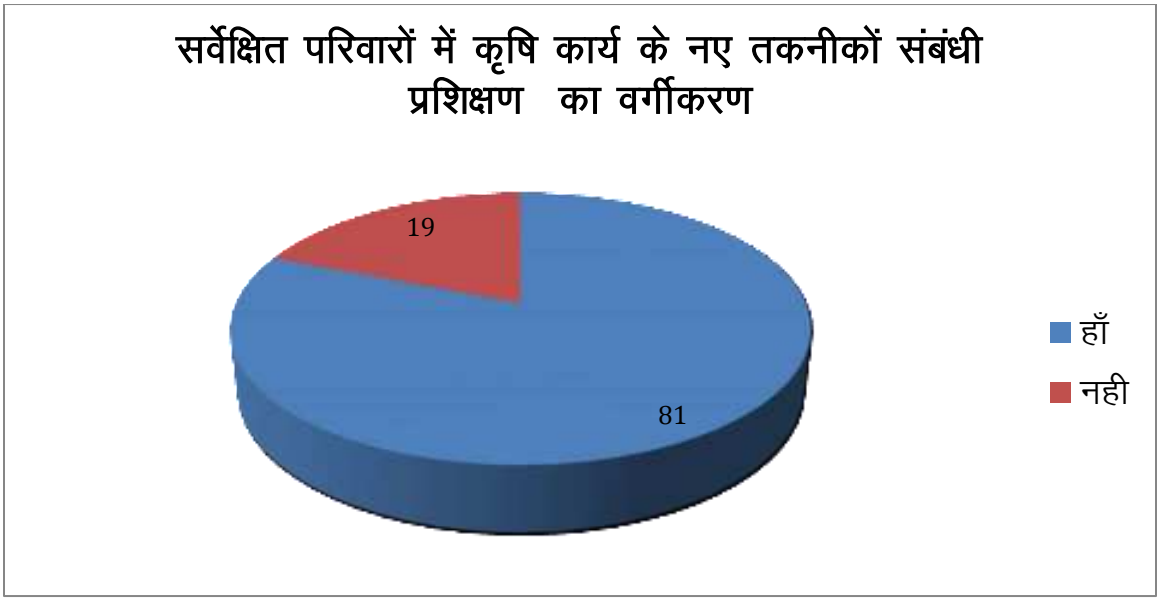

सर्वेक्षित परिवारों कृषि में पर्याप्त आय का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 29

ग्राम	कुल परिवार	कृषि में पर्याप्त आय प्राप्त	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	12	08
लिमतरा	20	07	13
कंडरका	20	14	06
मुरमुंदा	20	16	04
अछोटी	20	17	03
योग	100	66	34
प्रतिशत	–	66%	34%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका में कुल चयनित परिवारों की कृषि में पर्याप्त आय का अध्ययन किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि कुल चयनित 100 कृषकों में 66% कृषक परिवार को कृषि से पर्याप्त आय प्राप्त होती है तथा 34% कृषक परिवार का कृषि में पर्याप्त आय प्राप्त नहीं मिलपाती है।

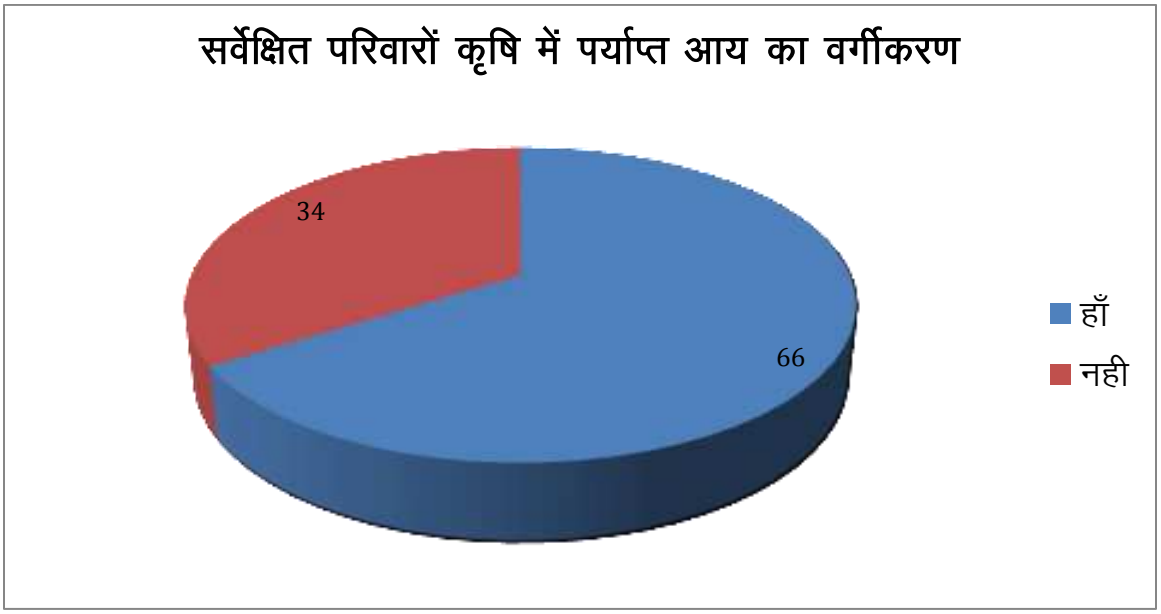

न्यादर्श परिवारों की गाँव में कृषि उपजमण्डी का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 30

ग्राम	कुल परिवार	गाँव में कृषि उपज मण्डी	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	00	20
लिमतरा	20	00	20
कंडरका	20	00	20
मुरमुंदा	20	00	20
अछोटी	20	00	20
योग	100	00	100
प्रतिशत	–	00%	100%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक में स्पष्ट किया गया है कि सर्वेक्षित कुल 100 कृषक परिवारों में से 100 कृषक गाँव में कृषि उपज मण्डी उपलब्ध नही है अर्थात् अध्ययन से ज्ञात होता है कि 100 कृषकों के गाँवो में कृषि उपज मण्डी की सुविधा उपलब्ध नही है।

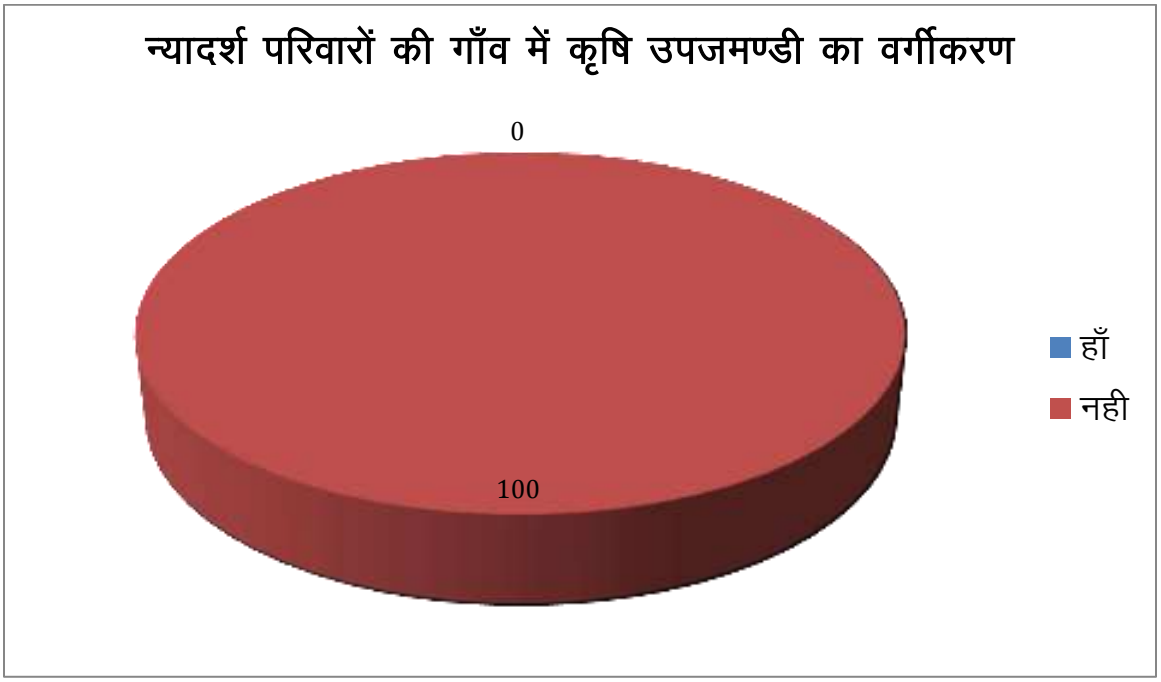

न्यादर्श परिवारों की फसल पर मिलने वाले समर्थन मूल्य का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 31

ग्राम	कुल परिवार	फसल पर मिलने वाले समर्थन मूल्य	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	09	11
लिमतरा	20	10	10
कंडरका	20	08	12
मुरमुंदा	20	13	07
अछोटी	20	12	08
योग	100	52	48
प्रतिशत	–	52%	48%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका क्रमांक में स्पष्ट है कि चयनित कुल परिवारों में 52% कृषक परिवारों को फसल पर मिलने वाले समर्थन मूल्य प्राप्त है जबकि 48% कृषकों को फसल पर मिलने वाले समर्थन मूल्य प्रर्याप्त नही है।

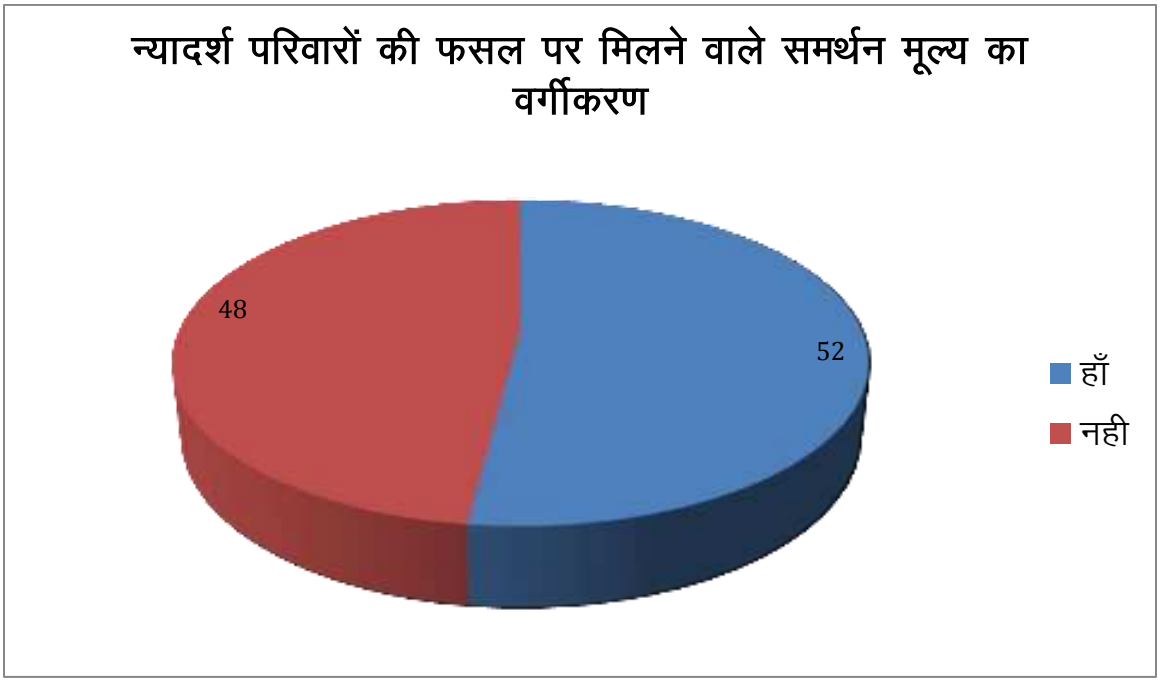

न्यादार्श कृषक परिवारों का कृषि फसलों को खेत से घर तक लाने की साधन का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 32

ग्राम	कुल परिवार	कृषि फसलों को खेत से घर तक लाने की साधन				
		बैलगाड़ी	टैक्टर	पिकअप	स्वयं	अन्य
गोढ़ी	20	05	15	00	20	00
लिमतरा	20	09	11	00	20	00
कंडरका	20	08	12	00	20	00
मुरमुंदा	20	10	10	00	20	00
अछोटी	20	08	12	00	20	00
योग	100	40	60	00	100	00
प्रतिशत	–	40%	60%	00%	100%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

प्रस्तुत तालिका में न्यादर्श कृषक परिवारों में कृषि फसलों को खेत से घर तक लाने के साधन का अध्ययन किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि कुल सर्वेक्षित 100 न्यादर्श परिवारों में से 60% कृषक कृषि फसलों को खेत से घर तक लाने के साधन ट्रैक्टर है तथा 40% कृषक परिवार कृषि फसलों को खेत से घर तक लाने के साधन बैलगाड़ी है।

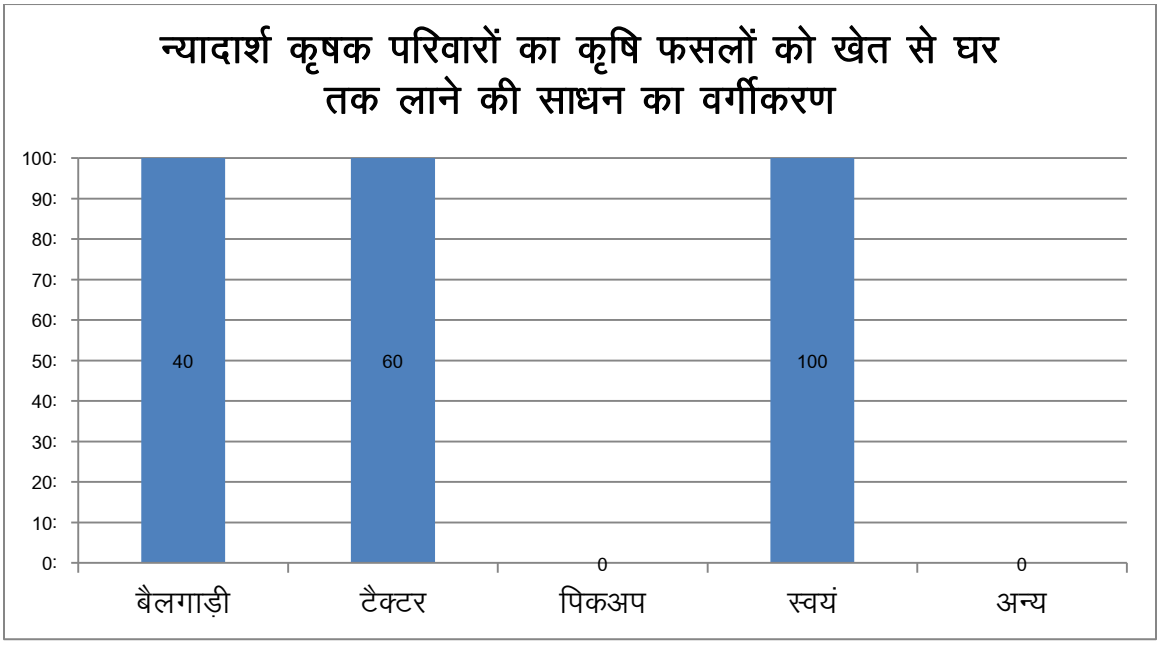

न्यादर्श कृषक परिवारों में कृषि ऋण माफी योजना का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 33

ग्राम	कुल परिवार	कृषि ऋण माफी योजना से सहमत	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	20	00
लिमतरा	20	17	03
कंडरका	20	16	04
मुरमुंदा	20	18	02
अछोटी	20	18	02
योग	100	89	11
प्रतिशत	–	89%	11%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका में स्पष्ट है कि सर्वेक्षित कृषक परिवारों में कृषि ऋण माफी योजना से 89% कृषक परिवार इस योजना में सहमत है तथा 11% कृषक परिवार कृषि ऋण माफी योजना से सहमत नही है।

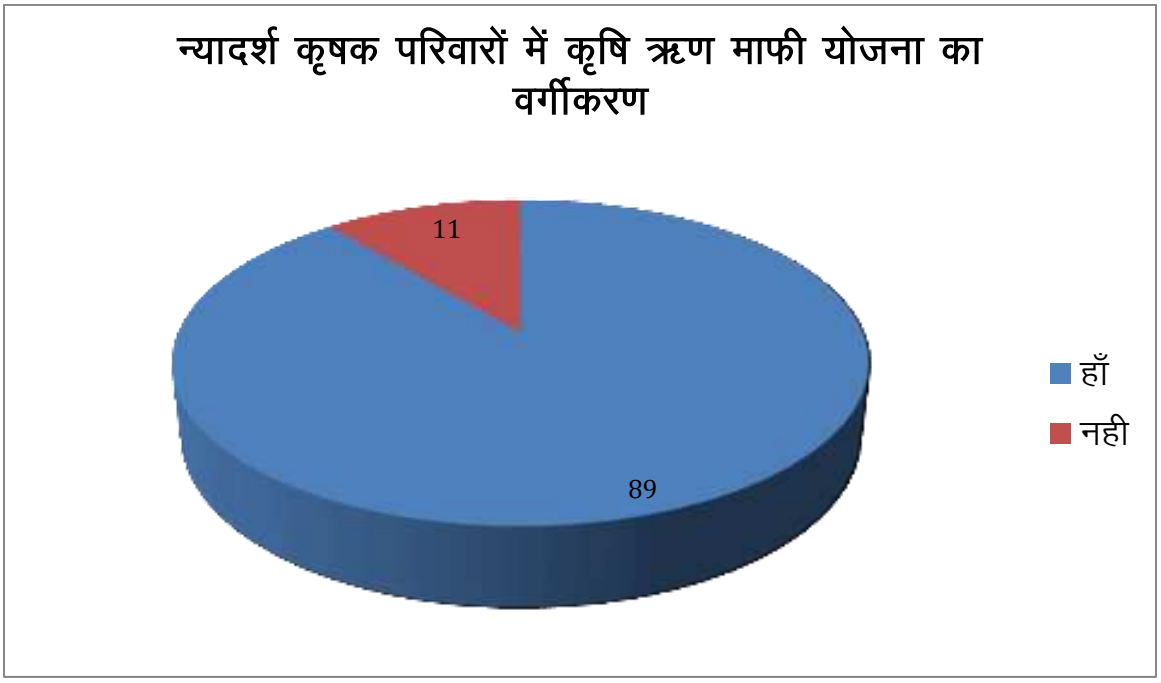

सर्वेक्षित परिवारों की कृषि कार्य में कठिनाई का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 34

ग्राम	कुल परिवार	कृषि कार्य में कठिनाई	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	14	06
लिमतरा	20	11	09
कंडरका	20	15	05
मुरमुंदा	20	12	08
अछोटी	20	16	04
योग	100	68	32
प्रतिशत	–	68%	32%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कुल चयनित परिवारों में कृषि कार्य में कठिनाई का अध्ययन किया गया है। जिससें यह ज्ञात होता है कि 68% कृषि कार्य में कठिनाई नहीं होती है तथा 32% कृषक परिवारों

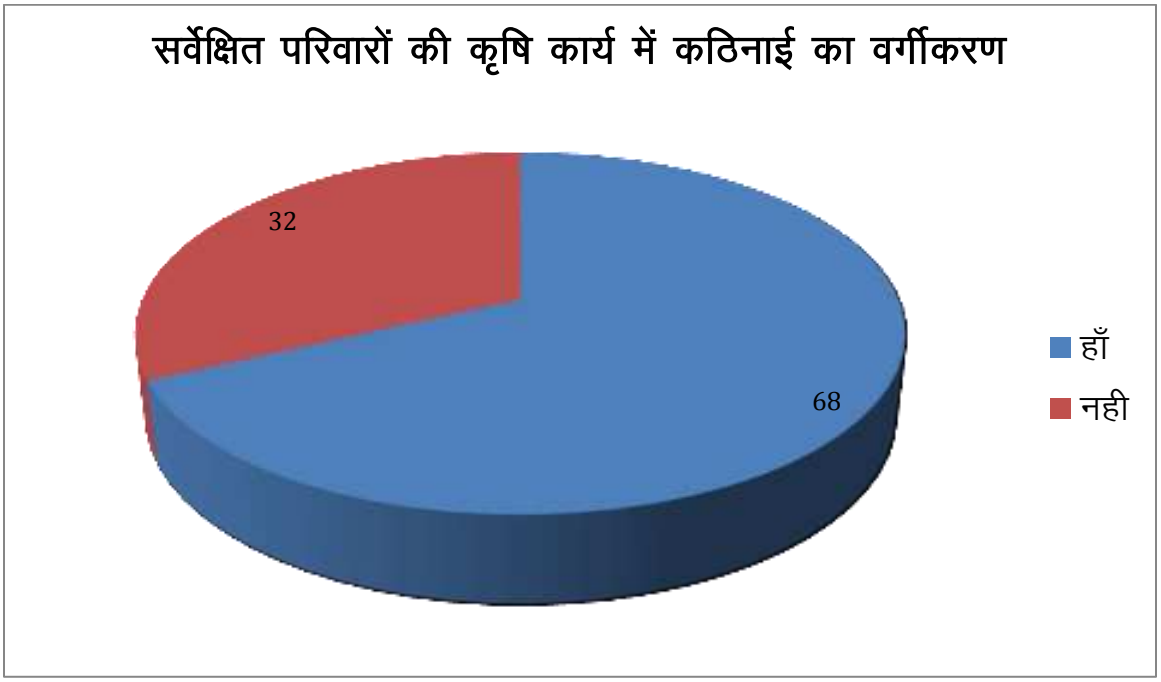

सर्वेक्षित परिवारों की नवीन तकनीक के उपयोग से कठिनाई का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 35

ग्राम	कुल परिवार	नवीन तकनीक के उपयोग से कठिनाई	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	02	18
लिमतरा	20	04	16
कंडरका	20	02	18
मुरमुंदा	20	06	14
अछोटी	20	03	17
योग	100	17	83
प्रतिशत	–	17%	83%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका से स्पष्ट है कि कुल 100 चयनित परिवारों में से 83% कृषक परिवार नवीन तकनीक के उपयोग करने से कोई कठिनाई प्राप्त नही होता है तथा 17% कृषक परिवारों के नवीन तकनीक के उपयोग करने कठिनाई प्राप्त होती है।

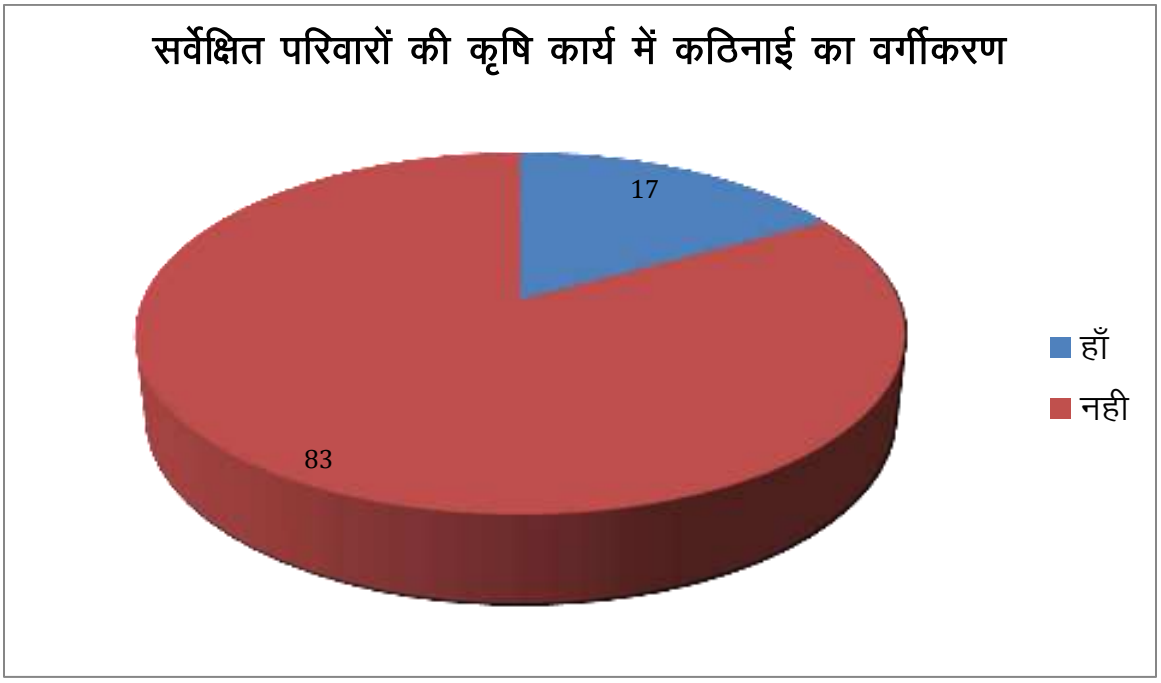

न्यादर्श कृषकों के नवीन तकनीक से समय की बचत का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 36

ग्राम	कुल परिवार	नवीन तकनीक से समय की बचत	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	20	00
लिमतरा	20	20	00
कंडरका	20	20	00
मुरमुंदा	20	20	00
अछोटी	20	20	00
योग	100	100	00
प्रतिशत	–	100%	00%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में चयनित कुल 100 कृषक परिवारो में से नवीन तकनीक होने से समय की बचत 100 कृषकों प्राप्त होती है अर्थात् अध्ययन से ज्ञात होता है कि नवीन तकनीक से सभी कृषकों को समय की बचत प्राप्त होती है।

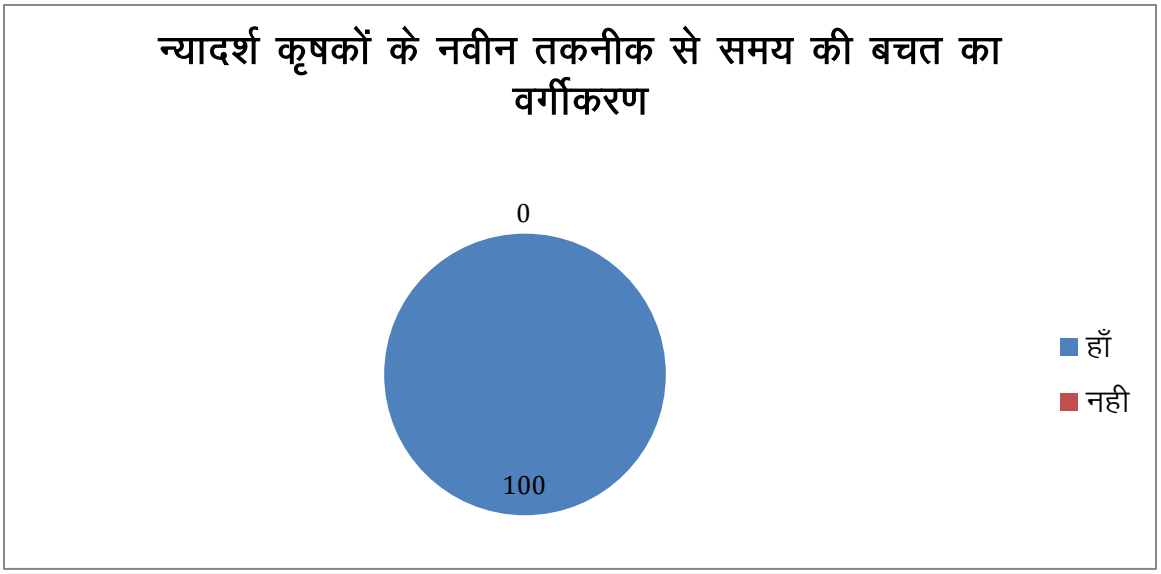

सर्वेक्षित परिवारों की नवीन तकनीक से कृषि में समस्या का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 37

ग्राम	कुल परिवार	नवीन तकनीक से कृषि में समस्या	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	04	16
लिमतरा	20	03	17
कंडरका	20	04	16
मुरमुंदा	20	05	15
अछोटी	20	03	17
योग	100	19	81
प्रतिशत	–	19%	81%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

उपरोक्त तालिका से न्यादर्श कृषकों द्वारा नवीन तकनीको के हाने से कृषि में समस्या का अध्ययन किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि कुल 100 न्यादर्श परिवरो में से नवीन तकनीक के होने से कृषि में 19% समस्या उत्पन्न होती है तथा 81% कृषकों को नवीन तकनीक के कृषि में कोई समस्या नही होती है।

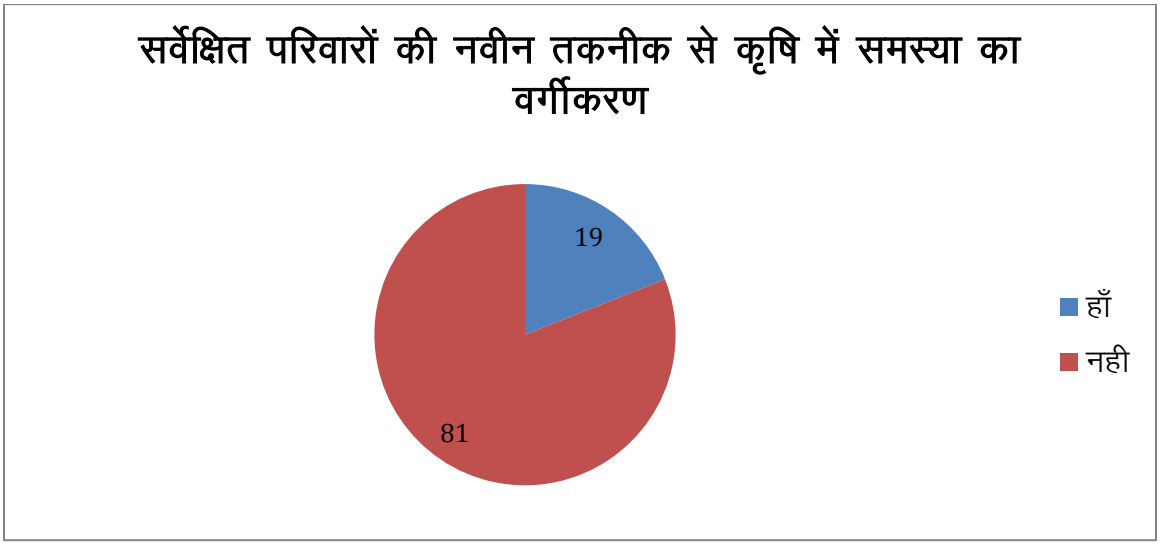

न्यादर्श कृषकों के नवीन तकनीक से आय स्तर में सुधार का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 38

ग्राम	कुल परिवार	नवीन तकनीक से आय स्तर में सुधार	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	17	03
लिमतरा	20	18	02
कंडरका	20	18	02
मुरमुंदा	20	15	05
अछोटी	20	16	04
योग	100	84	16
प्रतिशत	–	84%	16%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में स्पष्ट है कि सर्वेक्षित परिवारों में 84% कृषक परिवारों के नवीन तकनीक से आय के स्तर में सुधार हुआ है जबकि 16% कृषक परिवारों के नवीन तकनीक से आय के स्तर में सुधार नही हुआ है।

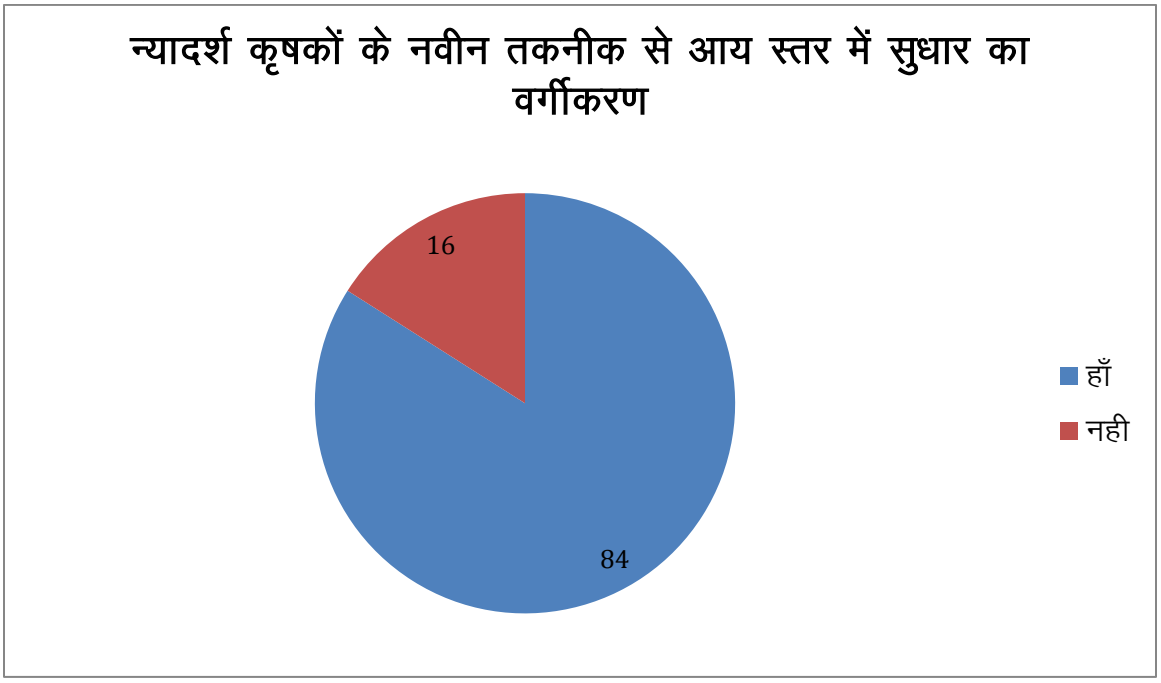

न्यादर्श कृषकों के नवीन तकनीक से जीवन स्तर में सुधार का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 39

ग्राम	कुल परिवार	नवीन तकनीक से जीवन स्तर में सुधार	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	18	02
मुरमुंदा	20	17	03
अछोटी	20	18	02
योग	100	87	13
प्रतिशत	–	87%	13%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

चयनित 100 न्यादर्श परिवारों में नवीन तकनीक से जीवन स्तर में सुधार के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चयनित कुछ 100 कृषक परिवारों में से 87% प्रतिशत परिवारों की जीवन स्तर में कृषि हुई है वहीं 13% कृषक परिवार ऐसे है जिनकी जीवन स्तर में वृध्दि नहीं हुई है।

इसी प्रकार कृषक परिवारो के जीवन स्तर में 87% सुधार हुआ है जबकि 13% परिवारों का कहना है कि नवीन तकनीक से जीवन स्तर में सुधार नहीं हुआ है।

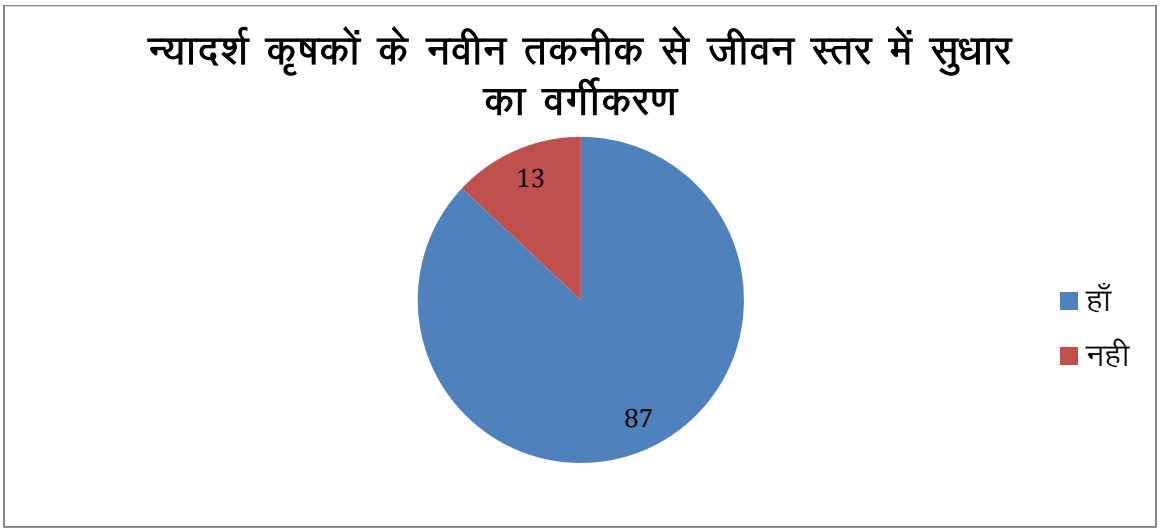

सर्वेक्षित कृषक के कृषि में आधुनिकरण का वर्गीकरण

तालिका क्रमांक– 40

ग्राम	कुल परिवार	कृषि में आधुनिकरण होनें से संतुष्ट	
		हाँ	नही
गोढ़ी	20	18	02
लिमतरा	20	16	04
कंडरका	20	17	03
मुरमुंदा	20	15	05
अछोटी	20	19	01
योग	100	85	15
प्रतिशत	–	85%	15%

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

तालिका में सर्वेक्षित चयनित परिवारों में कृषि में आधुनिकीकरण होने से संतुष्टी का अध्ययन किया गया है। जिसमें 85% कृषक परिवार आधुनिकीकरण से संतुष्ट है तथा 15% कृषक परिवार आधुनिकीकरण होने से संतुष्ट नही है।

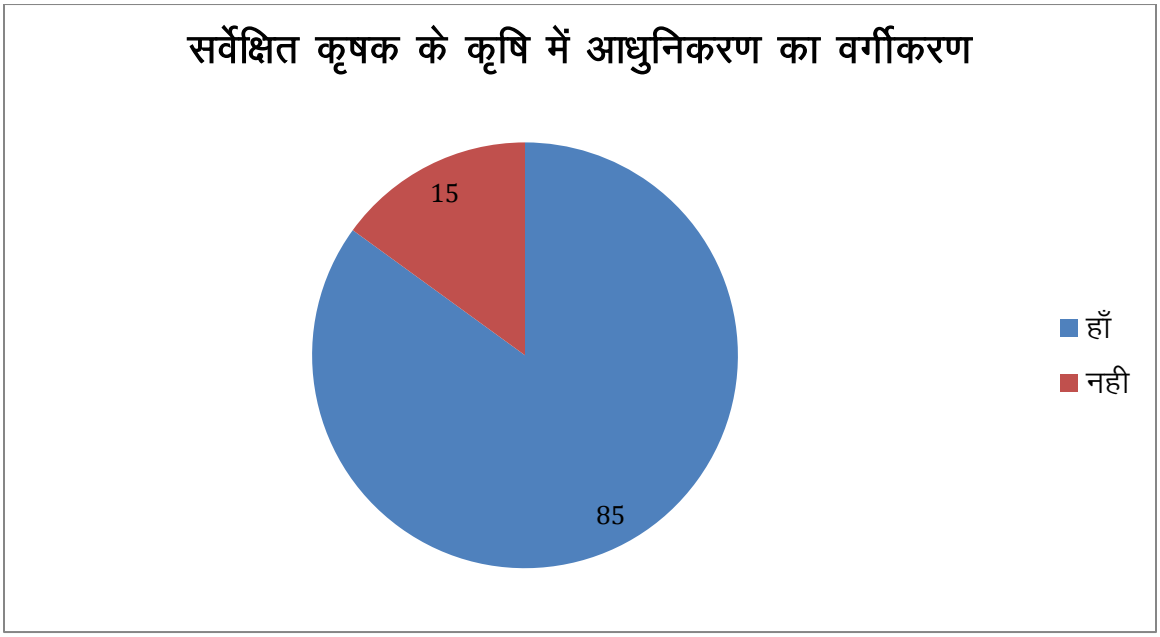

अध्याय – 5

सारांश, सुझाव एवं निष्कर्ष

सारांश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में ''दुर्ग जिले के धमधा़ विकासखण्ड में नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' का अध्ययन किया गया है, जिसे अध्ययन की दृष्टि से पाँच भागों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत विषय की भूमिका का विवरण किया गया है भारत में कृषि जिविकोपार्जन का मुख्य साधन है। स्वतंत्रता में पूर्व कृषि व्यवसाय ''जीवन निर्वाह'' का साधन मात्र बनकर रह गया। आजादी के समय कृषि पिछड़ी अवस्था में थी अधिकांश कृषक परंपरागत तकनीकों से कृषि कार्य करते थे। स्वतंत्रता के पश्चात् 1960–70 के दशक के मध्य में भारत में पारंपरिक कृषि व्यवहारों का प्रतिस्थापन आधुनिक कृषि तकनीकों में किया गया।

भारतीय कृषि को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको पर आधारित है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत उपलब्ध शोध साहित्यों का अध्ययन किया गया है जिसके अंतर्गत विभिन्न विद्वानों द्वारा अपने पूर्व किए गए शोध कार्यों का विश्लेषण किया गया।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत दुर्ग जिला के सामान्य परिचय का अध्ययन किया गया है। दुर्ग जिला नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण मध्य में $20^0 42'$ एवं अक्षांश एवं $81^0 33'$ ई. देशांतर के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4081 वर्ग कि.मी. यहाँ की कुल जनसंख्या 7,99,78 (2011) के अनुसार है। दुर्ग जिले की 149195 जनसंख्या नगरीय और 650586 जनसंख्या ग्रामीण है। इस जिले में कुल 651 ग्राम है दुर्ग जिले में कृषि जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन है। यहाँ कुल 2,44,436 हेक्टेयर क्षेत्र में फसल उत्पादन किया गया है,जिसमें खरीफ 1,44,912 हेक्टेयर तथा रबी का खेत 99523 हेक्टेयर है। यहाँ वाणिज्य एवं व्यापार के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में वनोपज एवं चावल का व्यापार होता है। दुर्ग जिला में 136 राईस मिल है।

परिवहन के साधन के रूप में सड़कें की कुल लंबाई 1219.7 कि.मी. है तथा मुख्य राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 30 है। यहाँ राजमार्ग रायपुर से प्रारंभ होकर दुर्ग, कोण्डागाँव, जगदलपुर होते हुए आंध्रप्रदेश के विजयनगरम् के समीप राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 05 में मिल जाती है। यहाँ छोटी रेल लाइन दुर्ग से रायपुर तक गयी है इस तरह दुर्ग जिला प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्दि से महत्वपूर्ण है।

चतुर्थ अध्यायः– चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत कृषि क्षेत्र में कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव में अध्ययन किया गया है जिसके अध्ययन से पता चलता है कि

निश्कर्श

प्रस्तुत भाोध अध्ययन के प चात् निम्न निश्कर्श प्राप्त हुये :–

1. चयनित कुल कृशकों में 97% कृशकों के पास सिंचित भूमि तथा 03% कृशक के पास असिंचित भूमि उपलब्ध ह।
2. चयनित न्याद र्ा क्षेत्र में सीमांत कृशक 84%, अर्ध्दमध्यम कृशक 10%, मध्यम कृशक 04% तथा उच्चवर्ग के कृशक 02% पाया गया।
3. चयनित कुल 100 कृशकों में से 53% मिश्रित पध्दति से कृशि कार्य में संलग्न है जबकि आधुनिक पध्दति से 47% ही कृशि कार्य में कार्यरत् है।
4. कुल चयनित 100 कृशकों में से कृशक परम्परागत कृशि उपकरणों का उपयोग जिसमें से हल का उपयोग 48% कृशक उपयोग में लाते है तथा कोपर का उपयोग 41% कृशक परिवार इनका उपयोग करते है। जबकि बेलन का उपयोग 29% कृशक उपयोग में लातें है, कलारी उवं उड़ानी पंखा का उपयोग 9% कृशकों द्वारा इस उपकरणों का उपयोग करते है।
5. सर्वेक्षित कृशकों में बोआई विधि में 83% कृशक परिवार रोपा विधि से कृशि कार्य करते है तथा 17% कृशक लेई विधि से कृशि कार्य करते है।
6. कुल सर्वेक्षित कृशकों में 82% कृशक एक फसल लेतें है एवं 18% कृशक दो फसल लेते है तथा यहाँ के कृशकों द्वारा तीन फसल से कृशि नही किया जाता है।
7. चयनित न्याद र्ा कृशक परिवारों द्वारा 88% कृशक सहकारी सतितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग करते है जबकि 12% कृशक सहकारी समितियों के बीजों का प्रयोग नही करते है।
8. सर्वेक्षण में चयनित कुल 100% कृशकों में सें 18% कृशक सहकारी समितियों द्वारा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते है तथा 19% कृशक परिवार द्वारा रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नही करते है।
9. कुल चयनित 100% कृशकों में से 100% कृशक के रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से उत्पादकता में प्रभाव पड़ रहा है।

कुल चयनित 100% कृशकों में से कीटना ाक छिड़काव के लिए नवीन तकनीकों का उपयोग 100% कृशक ड्रोन स्पियर का उपयोग करते है।

10. कुल चयनित 100% कृशकों में सिंचाई सुविधाएं निम्न है जिसमें बाँध 67% कृशक उपयोंग करते है, बोरवेल 21% कृशक परिवार उपयोग करते है तथा 12% कृशक तालाब का उपयोग करते है।
11. सर्वेक्षित कृशकों में 96% कृशकों की कृशि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता बढ़ती है जबकि 04% कृशकों का कहना है कि कृशि यंत्रीकरण से उत्पादकता में वृध्दि नहीं होती है।
12. सर्वेक्षित कुल कृशक परिवारों द्वारा 88% कृशक मृदा का परीक्षण कराते है जबकि 12% कृशकों द्वारा मृदा का परीक्षण नही कराते है।
13. चयनित परिवारों की कृशि के अतिरिक्त अन्य कार्य 92% कृशक कृशि के अतिरिक्त अन्य कार्य नही करते है। जबकि 8% कृशक परिवार कृशि के अतिरिक्त अन्य कार्य करते है।
14. चयनित कृशकों में 95% कृशकों के पास बैंक में बचत खाता उपलब्ध है तथा 05% कृशक परिवारों के पास बैंक मे बचत खाता उपलब्ध नही हैं
15. चयनित न्याद ा कृशकों द्वारा 100% कृशक परिवार कृशि में ऋण बैंक के द्वारा प्राप्त करते है।
16. कृशकों में 90% कृशक कृशि कार्य में सहकारी योजना का लाभ तेते हैं जबकि 10% कृशक परिवार कृशि कार्य में सहकारी योजना का लाभ नही लेते है।
17. सर्वेक्षित चयनित कृशकों में 86% कृशकों के पास बंजर भूमि उपलब्ध नही है तथा 14 कृशकों के पास बंजर भूमि उपलब्ध है।
18. चयनित परिवारों की कृशिगत आय से 57% कृशकों की आव यकता की पूर्ति कृशि से नही हो पाती है जबकि 43% कृशकों की आव यकता की पूर्ति कृशि से हो पाती हैं
19. न्याद ा कुल कृशक परिवार में 84% कृशक कृशि कार्य संबंधी सलाह ग्राम सेवक से लेते है। तथा 16% कृशक परिवार कृशि कार्य संबंधी सलाह ग्राम सेवक से नही लेते है।

20. सर्वेक्षित कुल चयनित कृशकों में 83% कृशक मिट्टी का परिक्षण कृशि सेवा केन्द्र में परीक्षण कराते हैं जबकि 17 कृशक मिट्टी का परीक्षण कृशि सेवा केन्द्र में नहीं कराते है।

21. न्याद र्ा कुल 100% परिवारों में 81% कृशक कृशि कार्य में नए तकनीकों से संबंधी प्रि ाक्षण का लाभ प्राप्त होता है जबकि 19% कृशकों को नए तकनिक का प्रि ाक्षण प्राप्त नही होता है। चयनित न्याद र्ा कुल परिवारों में से 66% कृशकों को कृशि में पर्याप्त आय प्राप्त होता है तथा 34% कृशकों को कृशि में पर्याप्त आय उपलब्ध नही होता है।

22. सर्वेक्षित कृशकों में 52% कृशकों को फसल पर मिलने वाले समर्थन मूल्य पर्याप्त है जबकि 48% कृशक परिवारेां को फसल पर मिलन वाले समर्थन मूल्य पर्याप्त नही हैं

23. सर्वेक्षित चयनित कृशकों में 60% कृशक परिवार कृशि फसलों को खेतों से घर तक लोने का साधन ट्रैक्टर का उपयोग करते है तथा 40% कृशक कृशि फसलों को खेत से घर तक लाने के लिए बैलगाड़ी का उपयोग करते है।

24. सर्वेक्षित कृशकों में से 89% कृशक कृशि ऋण माफी योजना से सहमत है,जबकि 11% कृशक कृशि ऋण माफी योजना से सहमत नही है।

25. चयनित कुल 100% कृशक परिवारों में से 68% कृशक परिवार है उनकों कृशि कार्य में कोई कठिनाई नही आती है तथा 32% कृशकों को कृशि कार्य मे कठिनाई होती है।

26. सर्वेक्षण में चयनित 83% कृशकों को नवीन तकनीक के उपयोग करने से कोई कठिनाई नही होती हैं तथा 17% कृशकों को नवीन तकनीक के उपयोग से कठिनइाी होती हैं।

27. चयनति न्याद र्ा कुल 100 परिवारो मे से 100% कृशकों को कृशि में नवीन तकनीक होने से समय की बचत प्राप्त होती है।

28. कुल चयनित कृशकों में 81% कृशकों को नवीन तकनीक के होने से कृशि में कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती हैं जबकि 19% कृशकों को नवीन तकनीक के होने से कृशि में समस्या उत्पन्न होती हैं।

29. सर्वेक्षित कृशकों में 84% कृशकों को नवीन तकनीक होने से आय के स्तर मे ंसुधार हुआ है जबकि 16% कृशकों को नवीन तकनीक के हाने से आय के स्तर में कोई सुधार नही हुआ है।

30. सर्वेचित कुल 100% चयनित परिवारो में से 85% कृशक कृशि में आधुनिकीकरण होने से संतुश्ट है तथा 15% कृशक के कृशि में आधुनिकीकरण होने से संतुश्ट नही है।

समस्याएँ

1. कृशि फसलों से कृशकों को समर्थन मूल्य पर्याप्त नहीं होता है।
2. कृशि में नवीन पध्दति होने से कृशकों को पर्याप्त रोजगार उपलब्ध नहीं हो पाती है।
3. नवीन पध्दति के प्रयोग करने से लघु कृशक को लागत अधिक होती है।
4. कृशि कार्य में नए तकनीकों से संबंधी प्रि ाक्षण का लाभ प्राप्त नहीं होता है।
5. कृशि कार्य संबंधी सलाह ग्राम सेवक द्वारा सलाह प्राप्त नही होता है।
6. कृशि कार्य में कृशकों को प्रर्याप्त आय प्राप्त नही होता हैं
7. मृदा परिक्षण के लिए प्रत्येक गाँवों में सुविधा नहीं हो पाती है।
8. गाँवों में कृशि कार्य के अतिरिक्त कृशकों के लिए अन्य व्यवसाय उपलब्ध नहीं हो पाती है।

सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में ''दुर्ग जिले के धमधा़ विकासखण्ड में नवीन कृषि पध्दति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव'' का अध्ययन करने के पश्चात् निम्न सुझाव प्रस्तुव है

1. कृषि में यंत्रीकरण होने से कई छोटे कृषकों कों रोजगार की प्राप्ती नही मिल पा रहे है।
2. ज्यादातर कृषक परिवारों के पास बचतखाता की सुविधा उपलबध नही है जिसके कारण सहकारी समितियों द्वारा उन्नत किस्म के खाद, बीजों, को प्राप्त नही कर पा रहे है। उनकों रगते की सुविधा प्राप्त कराई जानी चाहिए।
3. कृषकों को ऋण की सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए ताकि उपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।
4. कृषि विकास में उत्पादन बढ़ाने के साथ–साथ सरकार द्वारा कुशल व्यवस्था तैयार के लिए ठोस कदम उठाये जाने चाहिए।
5. ग्रामीण कृषकों को रोजगार की सुविधा गांवों में उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
6. सीमांत एवं लघु कृषकों के लिए कृषियंत्र न्युनतम दर पर सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

7. ग्रामीण स्तर पर कृषकों को उन्नत किस्म के बीजो, रासायनिक उर्वरकों, तकनीकों से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराने के लिए प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई जाए।
8. सरकार द्वारा ग्रामीण स्तर कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
9. सहकारी समितियों के द्वारा कृषकों को कृषि कार्य के लिए जैसे सस्ती दर पर उर्वरक, बीज, कीटनाशक, कृषि यंत्र आदि उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
10. ग्रामीण क्षेत्र में फसल विपणन करने के लिए पक्की सड़क की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
11. कृषकों को विभिन्न कृषि उत्पादनों के मूल्य संबंधी जानकारी प्राप्त कराई जानी चाहिए।
12. कृषकों के उत्पाद को सरकारी समर्थन मूल्यों पर खरीदी जायें कृषकों को अत्यधिक लाभ प्राप्त हो सके।
13. कृषकों को ग्रामीण विकास बैंक या सहकारी बैंको के माध्यम से भुगतान करना चाहिए।
14. कृषि में यंत्रीकरण से छोटे कृषकों को कोई लाभ नही हो पा रहा है, इसका लाभ वृध्द कृषकों को प्राप्त हो रहा है इसके लिए सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
15. कृषि में नवीन पध्दति पूणर्तः नही किया जाना चाहिए ताकि लोगों को भी कृषि में पुनः रोजगार प्राप्त हो सके।

संदर्भ सूची–

1. अग्रवाल फूलचंद, अग्रवाल मातादीन, (1972) ''भारत का आर्थिक विकास''.
2. शाह के. एन., (1973)''भारत और विदेशों में कृषि विकास''.
3. भालेराम एम.एम.,(1977) '' भारतीय कृषि अर्थशास्त्र''.
4. मिश्र जगदीश नारायण, (1979) ''भारतीय अर्थशास्त्र''.
5. अग्रवाल ए.एन. (1987)''भारतीय अर्थव्यवस्था विकास एवं आयोजन''.
6. सायमन लेजली, कटारे श्याम सुन्दर, (1989) ''कृषि भूगोल''.
7. भारती आर.के. (2000) ''भारत में कृषि आधारित उद्योग समस्याएँ एवं संभावनाएँ''.
8. शर्मा ओ. पी., (2001)'' भारत में आर्थिक पर्यावरण''.
9. शर्मा ओ. पी. (2001) ''भारतीय अथव्यवस्था की दिशा''.
10. दत्त रूद्र, सुन्दरम के.पी.. एम., (2005)'' भारतीय अर्थव्यवस्था''.
11. गुप्ता, डॉ. बी.पी., स्वामी डॉ. एच.आर. आई (2003) ''भारत में आर्थिक पर्यावरण''.
12. सिंह सुदामा, सिंह राजीव कृष्ण, (2003) ''भारतीय अर्थव्यवस्था''.

13. रामाप्रसाद, यादव सत्यवीर, (2007)'' कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नियोजन''.
14. सिंह सुदामा, सिंह राजीव कृष्ण, (2003) ''भारतीय अर्थव्यवस्था''.
15. लेखराज, (2004) ''छ.ग. में कृषि एवं पोषण एक भौगोलिक अध्ययन''.
16. रामाप्रसाद, यादव सत्यवीर, (2007)'' कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नियोजन''.

परि ाश्ट–

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः"

CHHATTISGARH SHAIKSHANIK, SAMAJIK EVAM SANSKRITIK SANGATHAN (CESCO), RAIPUR (C.G.)

CG State 172, ESTD. 2002

To,

Date: 02/02/2022

The Director

Sandipani Academy, Achhoti, Durg, Chhattisgarh

Subject- Sanction letter for the Research Project

Dear Sir,

Chhattisgarh Shaikshanik, Samajik evam Sanskritik Sangathan (CESCO), RAIPUR (C.G.) is a non- government organization registered under society registration act, Chhattisgarh, has been working in the field of education, social and cultural development. In this context, we conduct a study on the Effect of Modern Agricultural Techniques in Agricultural Production and Farmers at Dhamada, Durg.

As Sandipani Academy is the member of the organization, we authorize the institution for carrying out research work and submit project proposal which include, area of study, methodology and budget and duration of the project. We sanction Rs 10,000 /- to Sandipani Academy for the project. As your project proposal will be received, fifty percent of the amount will be allocated and remaining amount will be given after submission of project report.

President
Chhattisgarh Shaikshanik, Samajik evam Sanskritik Sangathan (CESCO), RAIPUR (C.G.)

Committee Members
02/02/22 Mamta Dhruw
03/02/22 Preeti Dewangan

HOD - Dr. Sandhya Pujari
Dr. Abha Dubey

Accepted 04-02-22

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक 120 अछोटी (दुर्ग), दिनांक 14/03/2022

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–मुरमुंदा,

विषय :– ग्राम– मुरमुंदा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD) दिनांक 14.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत मुरमुंदा
वि.ख.धमधा, जि.-दुर्ग (छ.ग.)

14/3/22
विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

अछोटी (दुर्ग),दिनांक 15/03/22

सां. ए./2022/क्रमांक 125

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–लिमतरा,

विषय :– ग्राम– लिमतरा में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 15.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत लिमतरा
वि.ख. धमधा दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक 122

अछोटी (दुर्ग),दिनांक 14/03/2022

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–गोढ़ी,

विषय :– ग्राम– गोढ़ी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 14.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

गोपीराम

सरपंच
ग्राम पंचायत गोढ़ी
वि.खं. धमधा, जिला दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI ACADEMY

Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक 123

अछोटी (दुर्ग),दिनांक 15/03/2022

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–अछोटी,

विषय :– ग्राम– अछोटी में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 15.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

8/6/2022
सरपंच
ग्राम पंचायत अछोटी
वि.ख.धमधा,जिला दुर्ग(छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

SANDIPANI
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230

SANDIPANI ACADEMY

Gram - Achhoti, Post- Murmunda,
Via- Dhamdha, Dist.- Durg (C.G.) 490036
Telefax : 07821-270220
Mobile : +91 9300008230
Email : sandipani.achhoti@gmail.com

सां. ए./2022/क्रमांक 15/03/124 अछोटी (दुर्ग),दिनांक 15/03/22

प्रति

सरपंच

ग्राम पंचायत–कंडरका,

विषय :– ग्राम– कंडरका में लघु शोध करने बाबत्

महोदय जी,

सविनय निवेदन है कि हमारे महाविद्यालय का नाम सांदीपनी एकेडमी अछोटी है। महाविद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत हमारे माहाविद्यालय (शिक्षा विभाग) के विद्यार्थियों द्वारा "कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव" विषय पर "लघु शोध" (Mini PhD)दिनांक 15.03.2022 को किया जाना है।

अतः उक्त कार्य को सम्पन्न कराने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

सरपंच
ग्राम पंचायत कंडरका
वि.ख.धमधा जि.दुर्ग (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
सांदीपनी एकेडमी अछोटी

(1)

दुर्ग जिला के धमधा विकासखण्ड में नवीन कृषि पद्धति का कृषि उत्पादन एवं कृषकों पर प्रभाव

साक्षात्कार अनुसूची

(नोट: आपके द्वारा दी गई जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जाएगी। इसका उपयोग केवल शोध कार्य हेतु किया जाएगा।)

शोध निर्देशक　　　　　　　　　　शोधार्थी

(अ) सामान्य जानकारी

न्यादर्श क्र. ______ ग्राम मुरमुन्दा ______ विकासखण्ड - धमधा

1. उत्तरदाता का नाम मनहरन ______ 2. पिता/पति का नाम बल्लू राम

3. आयु 55 (वर्ष में)　　4. लिंग- पुरुष / महिला / अन्य

5. वैवाहिक स्थिति- विवाहित / अविवाहित / विधवा / विदुर / परित्यक्ता

6. शैक्षणिक स्थिति - शिक्षित / अशिक्षित

7. शिक्षा का स्तर - प्राथमिक / माध्यमिक / उच्चतर माध्यमिक / स्नातक / स्नातकोत्तर / तकनीकी शिक्षा / अन्य

(ब) पारिवारिक विवरण

क्र.	सदस्य का नाम	लिंग	मुखिया से संबंध	आयु (वर्ष में)	शिक्षा	वैवाहिक स्थिति	व्यवसाय	मासिक आय (रू. में)
1.	मनहरन	पु.	मुखिया	55	8वीं	विवाहित	कृषि	4,000
2.	गोंतरहीन	म.	पत्नी	50	अशिक्षित	विवाहित	—"—	
3.	भोजेन्द्र	पु.	पुत्र	30	6वीं	विवाहित	—"—	2,000
4.	पुष्पा	म.	बहू	27	6वीं	विवाहित	—"—	1,000
5.	सुशील कुमार	पु.	नाती	8	2री	अविवाहित	—"—	
6.	संध्या	म.	नतनीन	6		—"—	—"—	
7.								
8.								
9.								
10.								
11.								
12.								

साक्षात्कार अनुसूची 1

(स) कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता संबंधी जानकारी

1. कृषि भूमि - कुल भूमि (एकड़ में) 1.25 एकड़
   1) सिंचित भूमि (एकड़ में) ______ 2) असिंचित 1.25 (एकड़ में)
2. कृषक वर्ग - 1) सीमांत 2) अर्द्धमध्यम 3) मध्यम 4) वृहत
3. आप कौन से पद्धति से कृषि कार्य करते हैं? (अ) परम्परागत (ब) आधुनिक (स) मिश्रित
4. आप कौन-कौन सी परम्परागत कृषि उपकरणों से कार्य करते हैं?
   1) हल 2) बेलन 3) कलारी 4) कोपर 5) उड़ानी पखा 6) अन्य
5. क्या आप कृषि कार्य के लिए आधुनिक यंत्रों का उपयोग करते हैं? हां/नहीं
   यदि हां तो कौन-कौन सा - 1) ट्रैक्टर 2) ट्रीलर 3) रीपर 4) थ्रेसर 5) हार्वेस्टर 6) अन्य
6. आप बोआई के लिए कौन-सी विधि अपनाते हैं? 1) लेई विधि 2) रोपा विधि
7. फसल चक्र - 1. एक फसली 2. दो फसली 3. तीन फसली
8. उत्पादन किए जाने वाले फसल :-
   1. खरीफ धान
   2. रबी ______
   3. जायद ______
9. क्या आप सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त बीजों का प्रयोग करते हैं? हां/नहीं
10. क्या आप सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं? हां/नहीं
11. रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से उत्पादकता में प्रभाव पड़ता है? हां/नहीं
    यदि हां तो कितना फसल उत्पादन में वृद्धि
12. क्या आप फसल के संरक्षण के लिए कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग करते हैं? हां/नहीं
    यदि हां तो कितना 200 ml (प्रति एकड़)
    यदि नहीं तो क्यों ______
13. क्या आप कीटनाशक छिड़काव के लिए नवीन तकनीकों का उपयोग करते हैं? हां/नहीं
    यदि हां तो कौन-कौन सा - 1) फूट स्प्रेयर 2) ड्रोन स्प्रेयर 3) अन्य
14. क्या आपके पास सिंचाई सुविधा उपलब्ध है? हां/नहीं
    यदि हां तो सिंचाई का साधन - 1) तालाब 2) कुआं 3) नल 4) बोरवेल 5) अन्य
15. कृषि के आधुनिकीकरण से पूर्व फसल उत्पादन में कितना समय लगता था? 5 माह
16. कृषि आधुनिकीकरण के पश्चात कितना समय लगता है 4 माह
17. उत्पादकता (प्रति एकड़ क्विंटल में) कुल उत्पादकता 12 बोरा
    1) सिंचित क्षेत्र ______ 2) असिंचित क्षेत्र 12 बोरा
18. क्या कृषि यंत्रीकरण से प्रति एकड़ उत्पादकता बढ़ती है? हां/नहीं
    यदि हां तो कितना 5 बोरा
19. कृषि में आधुनिकीकरण से पूर्व कितना उत्पादन होता है? 12 (क्विंटल में)
20. कृषि में आधुनिकीकरण के पश्चात कितना उत्पादन होता है? 15 (क्विंटल में)
21. क्या आप मृदा परीक्षण कराते हैं? हां/नहीं
    यदि हां तो क्या अधिकारियों द्वारा दिये गए सुझाव का पालन करते हैं - हां/नहीं

साक्षात्कार अनुसूची 2

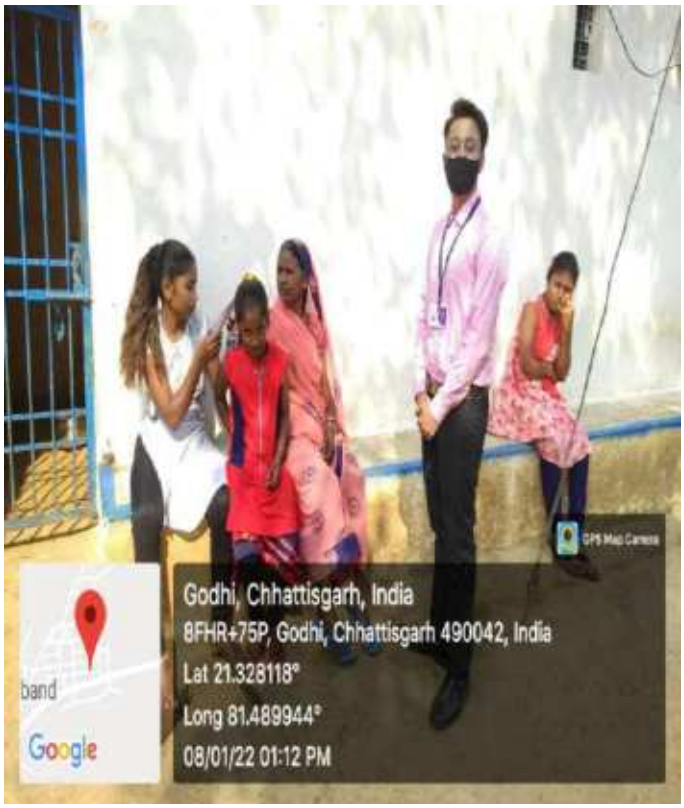
GPS Map Camera
Godhi, Chhattisgarh, India
8FHR+75P, Godhi, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.328118°
Long 81.489944°
08/01/22 01:12 PM
Google

GPS Map Camera
Godhi, Chhattisgarh, India
Godhi Rd, Godhi, Chhattisgarh 490042, India
Lat 21.326969°
Long 81.486735°
08/01/22 12:49 PM
Google

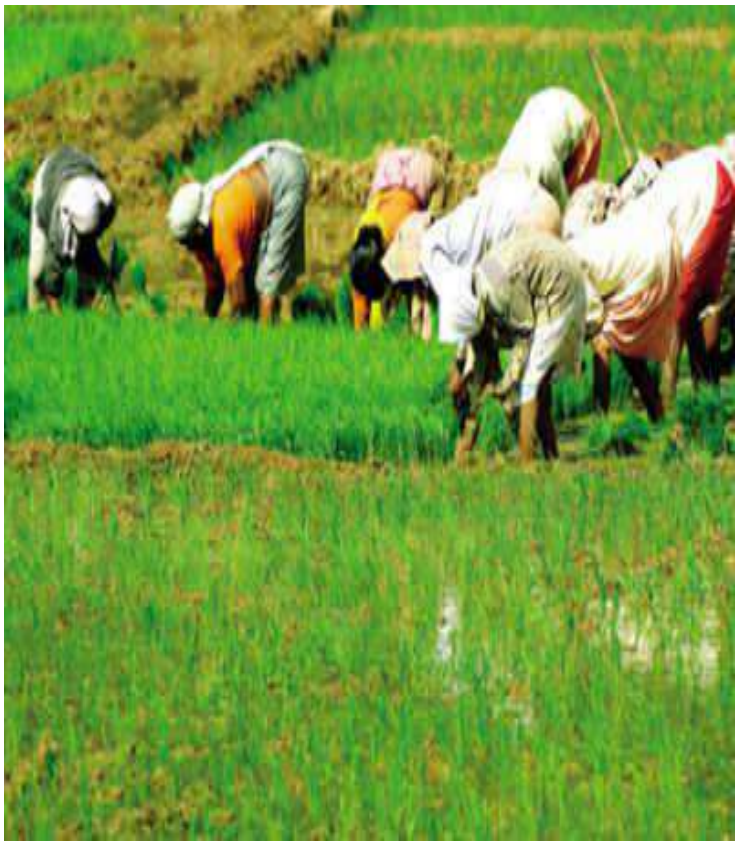

40

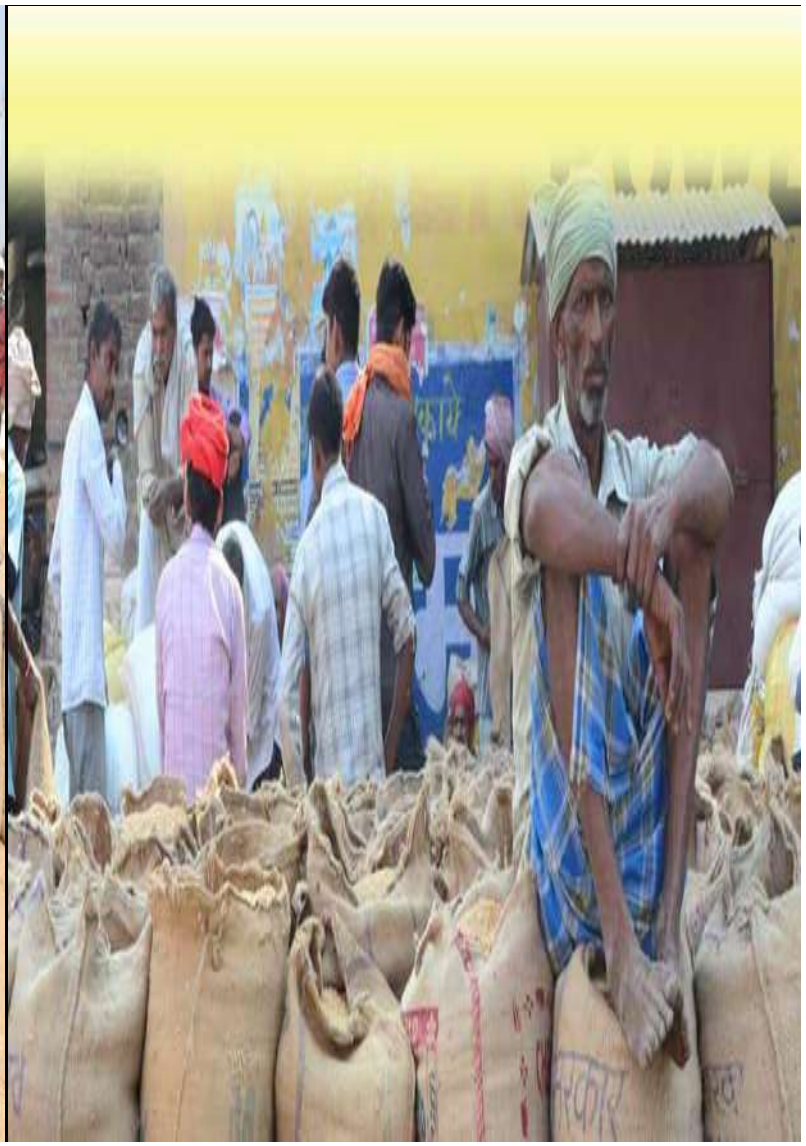

परियोजना निदे ाक
डॉ. आभा दूबे
(सहा. प्राध्यापक एवं निर्दे ाक)

विभागाध्यक्ष
डॉ. संध्या पुजारी
(सहायक प्राध्यापक)

मार्गद र्ाक
सुश्री ममता ध्रूव (सहायक प्राध्यापक)

भाोधकर्ता
विद्यार्थीगण बीए. बीएड. (द्वितीय वर्श)

भाोध संस्थान
ि ाक्षा विभाग, सांदीपनी एकेडमी,
अछोटी, मुरमुंदा दुर्ग (छत्तीसगढ़)

P K & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

To Whomsoever It May Concern

Certified that the grant of Rs.10000.00 (Rupees Ten thousand only) received from the **CESCO**, Raipur for Minor Research entitled "**NAVIN KRISHI PASSHATI KA KRISHI UTPADAN AVAM KRISHAKON PAR PRABHAV** "on 18/02/2022 has been fully utllized for the purpose for which it was sanctioned and in accordance with the terms and conditions laid down by the **Sandipani Academy ,Achhoti**.

For, P.K. & CO.
Chartered Accountants
(FRN: 0009926C)

Place : Raipur
Date : 21.02.2023
UDIN: 23412072BGWDYA8800

(Pavan Karmele)
M.No.412072
Partner

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

H.No. A-31, Ground Floor, Ravi Nagar, Raja Talab, Raipur (C.G.) 492001
Phone : +91 70002 13046, E-mail : pkc.rpr@gmail.com

P K & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

To Whomsoever It May Concern

Certified that the grant of Rs. 10000.00(Rupees thousand only) received from the Leelas foundation for education for Health, Raipur for Minor Research Project entitled **"SHIKSHA KE PRATI BADHATI UDASINTA"** On 11.10.2021 has been fully utilized for the purpose for which it was sanctioned and in accordance with the terms and condition laid down by the Sandipani Academy, Achhoti.

For, P.K. & CO.
Chartered Accountants
(FRN: 0009926C)

Place : Raipur
Date : 21.02.2023
UDIN: 23412072BGWDXZ5933

(Pavan Karmele)
M.No.412072
Partner

Principal
(Education)
Sandipani Academy
Achhoti, Distt. Durg (C G)

H.No. A-31, Ground Floor, Ravi Nagar, Raja Talab, Raipur (C.G.) 492001
Phone : +91 70002 13046, E-mail : pkc.rpr@gmail.com